छ: नम्बर की मेहनत

मौलाना मुहम्मद

ईमान

नमाज़

इल्म व ज़िक्र

इकरामे मुस्लिम

इख़्लासे निय्यत

दावत व तब्लीग़

छः नम्बर की मेहनत

मौलाना मुहम्मद सअ़द कांधलवी

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone : 23289786, 23289159 Fax : 23279998 Res. : 23262486
e_mail : farid@ndf.vsnl.net.in • farid_export@hotmail.com
Website: www.faridexport.com • www.faridbook.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यूँ फ़रमाते थे,

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० कि जिस बात करने वाले के सामने छः नम्बर की हक़ीक़त नहीं होगी सिर्फ़ छः नम्बर का इल्म होगा तो उस इल्म की वजह से दूसरों की इस्लाह की निय्यत हो जाऐगी, अपनी इस्लाह की निय्यत न रहेगी, जिस की वजह से ख़ुद उसकी अपनी दावत से उसका यक़ीन न बनेगा और दूसरों पर उसकी दावत का असर भी न होगा।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

किताब का नाम	:	छः नम्बर की मेहनत
बयान	:	दाओ़ी इलल्लाह मौलाना मुहम्मद सअ़द कांधलवी
हिन्दी अनुवाद	:	मुफ़्ती मुहम्मद ऐजाज़ क़ासमी
कम्पोज़िंग	:	हम्माद बुक वर्ल्ड कम्पूयटर प्वाइंट, अन्सार मार्केट, दिल्ली.6
तबाअ़त	:	फ़रीद इन्टरप्राइज़िज़, दिल्ली
ज़ेरे निगरानी	:	अलूहाज मुहम्मद नासिर ख़ान
तादाद किताब	:	1100
क़ीमत	:	30 रुपये
इशाअ़त	:	मई, 2003

मिलने का पता

Farid Book Depot

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2

अपनी बात

मोहतरम अज़ीज़ो! यह किताब "छः नम्बर की मेहनत" जो अल्लाह पाक के करम व फ़ज़्ल से आपके हाथों में जा पहुंची है, इस किताब को आप पढ़ना शुरु करें, इस से पहले मैं आप से चन्द बातें अर्ज़ करना ज़रूरी समझता हूँ।

1. जितनी भी बातें किताब में दर्ज हैं वे सारी बातें आप हज़रात ख़ुद अपने कानों से हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब की ज़बानी सुन सकते हैं, बस इसके लिय आपको नीचे लिखी पांच जगह के बयानों की "आडियो कैसेट" को अपने टेप रिकार्डर पर लगाना पड़ेगा, वे कैसेट इस नाम की हैं,

1.	मीना बाज़ार, दिल्ली	1-7-2001
2.	राय विन्ड	4-11-2000
3.	ड्यूज़बरी इंगलैण्ड	2000
4.	अमरोहा उत्तरप्रदेश	22-4-2000
5.	अकोला महाराष्ट्र	28-11-1998

ये कैसेट फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि० 168/1 झा हाऊस हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली-13 से हासिल की जा सकती हैं।

हाँ, कुछ अल्फ़ाज़ों का आ़म फ़हम तर्जुमा अलबत्ता किया गया है।

2. इस किताब के छपवाने का मक़्सद सिर्फ़ यह है कि जिस तरह से हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब ने इन नम्बरों पर मेहनत करने को बतलाया है उसी तरह मेहनत सारे आ़लम में

ज़िन्दा हो जाये, यह किताब सिर्फ़ जान लेने और बयान करने के लिय हरगिज़ नहीं है।

3.हर दावत का काम करने वाले साथी के पास मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की सनः 1965ई० में वफ़ात के बाद "अल-फ़ुरक़ान प्रेस लखनऊ" का छपा हज़रत जी नम्बर यानी "तज़किरा मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब" नाम की किताब ज़रूर रहे, इसकी मौलाना मुहम्मद सअ्द साहब ने हिदायत दी है, इस से हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के 6 नम्बर देखें।

4.आख़री बात यह कि इस वक़्त अल्लाह ने जिसे आ़लम की ज़िम्मेदारी इस काम की दी हुई है, वह इस वक़्त हम सब से क्या कह रहे हैं और क्या चाह रहे हैं, हम सब बस वही करें। उनकी बात का मान लेना ही सब के लिये ख़ैर की बात है, इस बात को समझने के लिये अगले पेज में हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर "पालन पूरी" रहमतुल्लाहि अ़लैहि का बताया हुआ एक "अहम उसूल" दर्ज है, उसे देखें।

हज़रत जी से सिर्फ़ यही मशवरा करने के लिए आये हैं कि हज़रत हम लोगों को बतायें कि ऐसे मौक़े पर हम लोग क्या करें?

क्योंकि सारे लोग अलग अलग बात बतलाते हैं।

तो मैंने उनसे कहा! कि भाई देखो हमारी समझ में तो यूं आ रहा है कि बड़ों ने जो बात कही, उसका मतलब वह होगा, जो उस वक़्त का अमीर बताए,

इस वक़्त का अमीर जो बताए वह उस बात का मतलब हमें समझना चाहिए।

सुना आप सब ने भी (मज्मे से मुख़ातब होकर कहा) कि अमीरुल वक़्त जो बताए उस पर सब को जमना चाहिए,

उस पर मिसाल हमने उन्हें अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० वाली दी।

कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के परदा फ़रमाने पर चारों तरफ़ से हंगामे खड़े हो गये अब सब की राय यह है कि हज़रत उसामा रज़ि० का लश्कर मुल्के शाम भेजने के बजाये मदीना मुनव्वरह में ठहराया जाये, क्योंकि चारों तरफ़ से हमले की ख़बर है।

तो इस पर अबू बकर रज़ि० ने सारे सहाबा के ज़ेहन के अन्दर यह बात डाली कि यह तीन हज़ार की जमाअ़त क्या करेगी जब अल्लाह की मदद ही रुक जाये।

अल्लाह की मदद आएगी जब जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बात पूरी हो कि "उसामा के लश्कर को रवाना करो"

हाँ, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कहा था।

"इनफ़िरू जैश उसामा" उसामा के लश्कर को रवाना करो तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान से तमाम सहाबा ने सुना, अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० ने भी यह सुना और दीगर सहाबा ने भी सुना, लेकिन और सहाबा ने उसका मतलब क्या समझा और अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० ने उसका मतलब क्या समझा।

औरों ने सिर्फ़ इतना समझा कि उसामा रज़ि० के लश्कर को रवाना करने के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कहा है। और अमीरुल वक़्त अबू बकर रज़ि० ने हज़रत उसामा के लश्कर के अ़लावा पूरे मदीना मुनव्वरह के मुसलमानों को निकलने के लिए कह दिया कि सब मदीना ख़ाली करो,

यह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० ने समझा,

उस पर सब लोगों ने लब्बैक कह कर मान लिया। तो हमने उन लोगों से कहा कि यह उसूल क़ियामत तक रहेगा जो बात अमीरुल वक़्त कहदे वह बात सब को मान लेने में ही ख़ैर है उस के अन्दर किसी तरह का फ़र्क़ नहीं करना चाहिए।

तौ मैंने उन से कहा कि इतनी बात तो मेरी आपसे हो गयी अब हज़रत जी जब उठेंगे तब उनके पास चलेंगे।

हज़रत जी बैदार हुए, उन सब को लेकर हम हज़रत जी के पास हाज़िर हुए और जो बात हमने उन लोगों से कही थी हमने हज़रत जी के सामने रख दी, कि ये लोग कह रहे हैं कि अगर लोग अलग-अलग बात बताऐं तो हम किया करें?

तो हमने उन से कहा कि जो बात अमीरुल वक़्त कहे या बताए वह उनको करना चाहिए तो हज़रत जी ने फ़रमाया!

कि हाँ, यह मुनासिब है।

उसके बाद फिर वे लोग अपने मुल्क वापस चले गए।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो, बुज़ुर्गो राय अलग-अलग होना, कोई हरज की बात नहीं है, राय अलग-अलग हो सकती है,

लेकिन अमीरुल वक़्त जो बात कहे बस उसी बात को मान लेने में ही ख़ैर है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर रह० के बयान का एक हिस्सा (इस बयान की टेप रिकार्डर कैसेट महफ़ूज़ हैं)

छः नम्बर

यह 6 नम्बर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के हैं।

जिन्हें हज़रत मौलाना सअ़द साहब ने पढ़कर सुनाया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! अ़र्ज़ यह करना है कि इस दावत व तब्लीग़ से क्या चाहा जा रहा है? यह हमारा और आपका आज मुज़ाकरा है। हम इस मुज़ाकरे के लिए जमा हुए हैं। अब इन्तिहाई ग़ौर और तवज्जोह से काम को समझना है।

मेरे दोस्तो! मेहनत हर एक आदमी कर रहा है पर हर एक मेहनत में कामियाब नहीं है, मेहनत में वह आदमी कामियाब है जिसकी मेहनत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मेहनत से मेल खाये। इसलिए लाज़िम है यह बात, कि इस दावत की मेहनत में मिज़ाजे नुबुव्वत हो। ——————

—————— इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह के फ़ज़्ल से काम हो रहा है। लेकिन कमी इस बात की है कि कारे

नुबुव्वत अभी मिज़ाजे नुबुव्वत से ख़ाली है। मिज़ाजे नुबुव्वत इस काम में यह है कि जितना काम करने को कहा जाये, उतना ही किया जाये और जिस तरह करने को बतलाया जाये उसी तरह किया जाये। इसे कहते हैं मिज़ाजे नुबुव्वत।

मेरे दोस्तो! अगर काम ख़्वाहिश या अपने मिज़ाज पर ले जाया जाये तो ग़ैबी नुसरतें नहीं आऐंगी। क्योंकि ग़ैबी नुसरतों का तअ़ल्लुक़ मिज़ाजे नुबुव्वत से है। जितना काम के अन्दर मिज़ाजे नुबुव्वत होगा, उसी के बक़द्र अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरतें साथ में होंगी। दोस्तो! काम होगा अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरतों से, काम बयान और तक़रीर से नहीं होगा। इसलिए ज़रूरी है यह बात कि काम को मिज़ाजे नुबुव्वत के साथ करें।

असल में इस सारी मेहनत का ख़ुलासा यह है कि अपने अन्दर इन 6 नम्बरों की हक़ीक़तों को दावत के रास्ते से उतारना है। इन 6 नम्बरों में हर नम्बर के साथ तीन तीन मेहनतें हैं। हर नया, हर पुराना इन मेहनतों के किए बग़ैर, इन नम्बरों की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता। इन्हीं मेहनतों को समझ कर करने के लिए, यह हमारा और आपका मुज़ाकरा है। इन मेहनतों को जिस तरह करने के लिए और जितना करने के लिए आप से अ़र्ज़ किया जा रहा है। उस तरह से करना यह मिज़ाजे नुबुव्वत है। अब हर नम्बर के साथः-

पहला कामः दावत देना, दूसरा कामः मश्क़ करना, तीसरा कामः दुआ मांगना।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह दावत क्यों दी जाती है और दावत देने का मक़सद क्या है?

देखो, जिस चीज़ को अपने अन्दर पैदा करना चाहो, उस चीज़ को ब सिफ़ते तब्लीग़ पैदा करो।

तब्लीग़ का क्या मतलब है?

तब्लीग़ का मतलब यह है, कि जिस चीज़ को तुम अपने अन्दर पैदा करना चाहते हो उसे दूसरों के अन्दर पैदा करने की कोशिश करो मश्क़ करो। क्योंकि दावत की यह ख़ूबी है, उसकी सिफ़त है कि जब दाई एक चीज़ की दावत को लेकर उठता है, तो इसकी दावत से उस चीज़ की हक़ीक़त इसके अन्दर आ जाती है, जिसकी तरफ़ यह दूसरों को दावत दे रहा है। यह अल्लाह का निज़ाम है, बशर्ते कि जिस चीज़ की दावत दी जाये उसकी हक़ीक़त को सामने रखकर दावत दें।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! दूसरों को क़ाइल कर देना, यह हमारी दावत का मौज़ू नहीं है। बल्कि जिस चीज़ की दाई दावत दे रहा है अपने अन्दर उस चीज़ का यक़ीन पैदा करने के लिए दावत दे रहा है, यह निय्यत हमारी होनी चाहिए। असल में दावत दूसरों की इस्लाह के लिए नहीं है, दावत अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए है।

पहला नम्बर कलिमा : लाइलाह इल्लल्लाहु से लेकर

छटा नम्बर : उम्मत को नुबुव्वत वाले काम पर खड़ा करने की मेहनत की दावत तक।

यानी इन 6 नम्बरों की दावत अपने अन्दर, इन नम्बरों का यक़ीन उतारने के लिए है। इन नम्बरों में सब से पहले जो दावत देनी है, वह लाइलाह इल्लल्लाह की है।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो व बुज़ुर्गो! यह सब से बड़ी माया और तमाम अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की मेहनत की बुनियाद है।

इसको हासिल किए बग़ैर न आमाल पर इस्तिक़ामत और न इन अ़मलों के ज़रीए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ज़ानों से बराहे रास्त फ़ायदा उठाने की कोई शक्ल और इसको हासिल किए बग़ैर कोई चीज़ नहीं मिलेगी। जब तक यह असल चीज़ मेहनत करके हासिल न की जाए।

मेरे दोस्तो! हर अ़मल की सेहत, हर अ़मल पर अज्र, और फिर इन अ़मलों के ज़रीये सिर्फ़ आख़िरत का बन जाना ही नहीं, बल्कि दुनिया में रहते हुए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ज़ानों से बराहे रास्त फ़ायदा उठाने के लिए, एक ही शर्त है और एक ही रास्ता है, कि ईमान, ईमान की हक़ीक़त के साथ हासिल किया जाये। इस ईमान की हक़ीक़त को हासिल करने के लिए, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के वादों के यक़ीन को सीखा जाता है कि जिस हुक्म पर जो वादा किया है, उस वादे को तस्लीम ही नहीं करना बल्कि उसका यक़ीन करना। देखो,

1. एक ईमान का मफ़हूम है। 2. एक ईमान के हुरूफ़ हैं।

3. एक ईमान का बोल है। 4. एक ईमान की आवाज़ है।

5. एक ईमान का इख़्लास है। ईमान का मफ़हूम : इसकी पहुंच दिमाग़ तक है। ईमान के हुरूफ़ : इसकी पहुंच किताब तक है। ईमान के बोलः इसकी पहुंच ज़बान तक है। ईमान की आवाज़ : इसकी पहुंच कानों तक है। ईमान का इख़्लास : इसकी पहुंच दिल तक है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! लुग़त में, किसी की ख़बर को, ख़बर देने वाले के ऐतिमाद, भरोसे पर यक़ीनी मानना यह माना हैं यानी यह तर्जुमा है ईमान काः-

"लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का तर्जुमा यह है

कि अल्लाह की ख़बरों को, उनके अवामिर और उनके नवाही को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐतिमाद और भरोसे पर यक़ीनी मानना यह तर्जुमा है "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का।

लेकिन इसकी हक़ीक़त और इसका इख़्लास यह है कि यह कलिमा अपने कहने वाले को हराम से रोक दे। इसके कहने वाले और हराम के दरमियान यह कलिमा ऐसी रुकावट बन जाये कि शिर्क इसे बेचैन करदे, कि यह मोमिन की अलामत है।

"अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की सिफ़ात और अल्लाह की रबूबियत में, किसी चीज़ को शरीक करना, मोमिन की बेचैनी का सबब बन जाये।

मेरे दोस्तो! ईमान की हक़ीक़त के बग़ैर शिर्क से बचना बिल्कुल मुमकिन नहीं। हाँ, इल्म रहबरी करेगा, पर इल्म शिर्क से बचा ले, यह मुमकिन नहीं। आज हम जो चीज़ों की तरफ़ निस्बत करते हैं, यह बे ईमानी की बुनियाद है, कि ज़ल्ज़ले आयेंगे तो यूं कहेगा कि माहिरे आराज़ी से पूछो यानी ज़मीन के माहिरीन से पूछो कि यह ज़ल्ज़ले क्यों आए, और क़हत साली आएगी यानी ज़मीन में जब सूखा पड़ेगा, तब यूं कहेगा कि साइंस वालों से पूछो कि सूखा क्यों पड़ा और बीमारी आएगी तो यूं कहेगा कि वज़ीरे सेहत से पूछो कि यह बीमारी क्यों आई, कैसे आई।

मेरे दोस्तो! अगर ईमान की हक़ीक़त हासिल हुई होती, तो यूं कहता कि ज़ल्ज़ले तो तब आते हैं जब ज़िना हुआ करता है, और ज़मीन में सूखा तब पड़ता है, क़हत साली तब आती है, जब ताजिर नाप तौल में कमी करने लगते हैं।

अगर ईमान की हक़ीक़त होती तो इन चीज़ों की निस्बत उन चीज़ों की तरफ़ नहीं करता बल्कि इन हालात की निस्बत अपनी बद आमालियों से जोड़ता अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने निज़ामे आ़लम को दुनिया के इन फैले हुए नक़्शों और अस्बाबों से नहीं जोड़ा कि हम यूँ कहें कि दुनिया दारुल अस्बाब है, करो सबब इख़्तियार।

मेरे दोस्तो! दुनिया दारुल अस्बाब बहैसियत चीज़ों के, बहैसियत कारख़ानों और दुकानों के, बहैसियत मुलाज़मत, ज़िराअ़त और हुकूमतों के यह ग़ैरों के लिए है। हम ईमान वालों के लिए दुनिया दारुल अस्बाब बहैसियत आमाल के है। अल्लाह के अवामिर (अह्काम) हमारे अस्बाब हैं। अगर ईमान वाला किसी सबब में लगेगा तो हुक्म की बुनियाद पर लगेगा, सबब की बुनियाद पर नहीं लगेगा।

अगर यह हुक्म कि बुनियाद पर सबब में लगा है। तो इस सबब पर उसे अज्र भी मिलेगा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी क़ुदरत से उसे कामियाब करके दिखलायेंगे।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह सोचना बिल्कुल ग़लत है कि अल्लाह की क़ुदरत अस्बाब के साथ जुड़ी हुई है, कि जिसे अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा उठाना हो, वह आमाल करके दुकान करे, आमाल करके तिजारत करे और आमाल करके कारख़ाने लगावे। नहीं,

मेरे दोस्तो! अल्लाह की क़ुदरत अस्बाब की पाबन्द नहीं है। वह क़ुदरत, क़ुदरत कहलाने के क़ाबिल नहीं जो अस्बाब की पाबन्द हो। अस्बाब तो अल्लाह की क़ुदरत में हैं। अल्लाह चाहे तो अपनी क़ुदरत से अस्बाब के बग़ैर बराहे रास्त कामियाब करे

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम उम्मत को अस्बाब के रास्ते पर डाल कर नहीं गये, बल्कि अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अल्लाह के ख़ज़ानों से बराहे रास्त लेने वाले रास्ते बतलाए हैं।

यह ईमान की हक़ीक़त हमें बतलायेगी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से लेने के अस्बाब, ये दुकानें कारख़ाने, मुलाज़मतें, ज़िराअ़त और हुकूमतें हैं। या अल्लाह से लेने के अस्बाब अल्लाह के अवामिर हैं। लेकिन ईमान कब कामिल होता है? कि जब अल्लाह के हर ग़ैर का इन्कार इस तरह हो जाये, कि अपनी बेज़ारी और अपनी हाजत का अल्लाह के ग़ैर से पूरा न होना इसका पूरी तरह ऐलान कर दें, इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तरह कि ऐ जिब्रील हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं, हम ने जिस का कलिमा कहा है, वह हमें देख रहा है, और बराहे रास्त देख रहा है। क्योंकि मैं उसकी तरफ़ से इस ज़मीन पर भेजा गया हूँ।

मेरे दोस्तो! जिस इन्सान को अल्लाह की तरफ़ से इस ज़मीन पर भेजे जाने का यक़ीन है उसके साथ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बराहे रास्त ताक़त और मदद होती है, बग़ैर किसी सबब के, बेशक नबियों की मददें और नुसरतें मुख़्तलिफ़ रास्तों से हुई हैं, क्योंकि अल्लाह के लश्कर को अल्लाह ही जानते हैं, (क़ुरआन) कि कब क्या सबब लायेंगे। वह ख़ालिक़े अस्बाब है, लेकिन जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से बराहे रास्त ले रहे हैं, तो अल्लाह भी उनकी मदद बराहे रास्त कर रहे हैं। आग को बुझाने के लिए, यूं तो लोग कह सकते हैं, कि आग को बुझाने के लिए अल्लाह ने पानी बनाया है। नहीं, मेरे दोस्तो! आग को बुझाने के लिए अल्लाह का अम्र (हुक्म) है। अल्लाह के पास आग को बुझाने के लिए उनका अम्र है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जब अपने

बनाये हुए अस्बाबों के पाबन्द नहीं हैं, तो हमारे आप के बने हुए अस्बाबों के पाबन्द वह कैसे होंगे, इसी लिए इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने जिब्रील की मदद का इन्कार किया।

मेरे दोस्तो! इस वक़्त हमारे और हमारे रब के दरमियान जितने अस्बाबों के वास्ते हैं, जिब्रील तो दूर की बात है। इन अस्बाबों के वास्तों ने हमें बराहे रास्त अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाने से महरूम किया हुआ है, कि बराहे रास्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते आ़ली से फ़ायदा कब उठाया जा सकता है? कि जब ईमान की हक़ीक़त होगी।

यह ईमान की हक़ीक़त कहां से आएगी?

यह ईमान की हक़ीक़त आएगी, ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोलने से, ज़ाहिर के ख़िलाफ़ सुनने से, ज़ाहिर के ख़िलाफ़ सोचने से, और ज़ाहिर के ख़िलाफ़ चलने से, जब तक मेरे दोस्तो! उम्मत के अन्दर ये चारों बातें आ़म न होंगी उस वक़्त तक ख़ुदा की क़सम ईमान की हक़ीक़त के मिलने की इब्तिदा भी न होगी।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जब ज़ाहिर के ख़िलाफ़ कोई बात कही जाती है तो जिस से बात कही जाती है, उसके दिल पर शैतान बैठ जाता है और यूं कहता है सुनने वाले से, कि हाँ, ऐसा हुआ होगा पर मुमकिन तो नहीं है, जब नबियों और सहाबा किराम के वाक़िआ़त ज़ाहिर के ख़िलाफ़ सुने जाते हैं तो शैतान दिल पर बैठ जाता है और यूं कहता है सुनने वाले से कि यह मुमकिन तो नहीं है, पर हो सकता है कि उनके साथ ऐसा हुआ हो।

मेरे दोस्तो, अस्बाबे हिदायत और अस्बाबे हलाकत से सारा का सारा क़ुरआन भरा हुआ है, लेकिन यह यक़ीन वालों को नज़र आएगा, शक वालों को नज़र न आएगा। आज पेशीन गोई

करने वाले पेशीन गोई करते हैं ज़ाहिर के ऐतिबार से ज़ाहिर को देखकर और क़ुरआन पेशीन गोई कर रहा है, ज़ाहिर के ख़िलाफ़।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! शक की बुनियाद पर अगर वाक़िआत को सुना गया तो ईमान की हक़ीक़त नहीं मिलेगी, इसलिए वाक़िआत को यक़ीन की बुनियाद पर सुनो और सुनते हुए अपनी ज़बान से यह कहते रहो कि यही हक़ है, यही सच है। अगर यह कहता रहा तो ईमान की लहरें दिलों में उठेंगी, वरना शैतान शक में डाले रखेगा कि कहीं ईमान की हक़ीक़त इसके दिल में दाख़िल न हो जाये।

मेरे दोस्तो, इस तरह सहाबा किराम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ईमान को सीखा था। ख़ुद सहाबा किराम इस बात को कहते हैं, कि

تَعَلَّمْنَا الْإِيْمَانَ ثُمَّ تَعَلَّمْنَا الْقُرْآنَ (हदीस)

यानी यक़ीन सीख लिया तो क़ुरआन के अह्कामात जिस पर वादें हैं दुनिया व आख़िरत की कामियाबी के, वह हम ने अ़मली तौर पर अपना लिया। इस लिए हम में से हर पुराना, हर नया मोहताज है कि सुब्ह शाम अपने यक़ीन में और अपने आमाल में तरक़्क़ी को महसूस करे। यह नहीं कि, तब्लीग़ का एक इब्तिदाई दर्जा है, कि 6 नम्बर पर बोलना आ जाये, फिर यह बाद का दर्जा है कि यह मशवरे वाला बन जाये, फिर यह उसके बाद का दर्जा है कि यह मुल्कों में जाने वाला बन जाये।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! ऐसा नहीं है, बल्कि बात यह है कि हर पुराना और हर नया हर वक़्त इस बात का मोहताज है, कि ईमान को बोल रहा हो, अपने यक़ीन को दुरुस्त करने के

लिए, कि हमें अल्लाह के ग़ैर को अपने अन्दर से निकालना है। जब यह बात तस्लीम कर ली गई कि दावत ख़ुद दाई के लिए है, तो यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि कलिमा "लाइलाह इल्लल्लाह" की दावत मेरे अपने लिए है। सहाबा किराम को ईमान व आमाल की हक़ीक़त जो हासिल हुई थी, वह इसी दावत के रास्ते से हासिल हुई थी।

अब सब से पहला काम यह है कि कलिमा "ला इलाह इल्लल्लाह" की दावत को मुसलमानों में ज़िन्दा किया जाये। हम अभी दावत दे रहे हैं उनको, जिन्हें कलिमा याद नहीं,

नमाज़ की दावत दे रहे हैं उनको जो नमाज़ पढ़ते नहीं, इल्म व ज़िक्र की दावत दे रहे हैं उनको जो जहालत में हैं या ग़फ़लत में हैं, इक्राम की दावत दे रहे हैं उनको जो बद अख़्लाक़ हैं, इख़्लास की दावत दे रहे हैं उनको जिन के अमल से रियाकारी ज़ाहिर होती है, बात क्या हुई? अब हो यह रहा है कि सारी की सारी दावत वह हो गई ग़ैरों के लिए, अपने लिए दावत न रही, इसलिए इसका यक़ीन नहीं बदला अपनी ज़ात जब सामने होगी, तब दाई का यक़ीन बदलेगा। इस लिए कि,

यूँ फ़रमाते थे मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० कि दाई जब एक चीज़ की दावत देगा तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दूसरों से पहले उसे ईमान और आमाल की हक़ीक़त अता फ़रमायेंगे।

इन 6 नम्बरों को ज़रा समझ लेना है, कि हर नम्बर का क्या मफ़हूम है और हर नम्बर के साथ क्या क्या काम करने हैं? और क्यों इन कामों को करना है? मेरे दोस्तो! इन नम्बरों की हक़ीक़त को पाने के लिए इन कामों को करना ज़रूरी है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की

हिदायत आप हज़रात को आज ज़बानी सुनाता हूँ, कि 6 नम्बर किस तरह बयान किए जायें। आप हज़रात वे हैं जो 6 नम्बर बयान करते रहते हैं। असल में बयान, तक़रीर बिल्कुल मौज़ू नहीं है हमारा। यह 6 नम्बर तो एक मेहनत का नाम है और इस मेहनत का एक मक़्सद है, कि उम्मत को इस मेहनत पर लाना और सीधे साधे अल्फ़ाज़ में इन 6 नम्बरों की दावत के ज़रीए से अपने यक़ीनों को बदलना और दूसरों के यक़ीनों को बदलने के अस्बाब पैदा करना है। यह इन्तिहाई मुख़्तसर और इन्तिहाई सादा काम है। लेकिन यह कि 6 नम्बर की हक़ीक़त अगर सामने हो तो,

यूँ फ़रमाते थे मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० कि जिस बात करने वाले के सामने 6 नम्बर की हक़ीक़त नहीं होगी। सिर्फ़ 6 नम्बर का इल्म होगा, तो इस इल्म की वजह से दूसरों की इस्लाह की निय्यत हो जायेगी, अपनी इस्लाह की नि्य्यत न रहेगी, जिस की वजह से ख़ुद इसकी अपनी दावत से उसका यक़ीन न बनेगा और दूसरों पर इसकी दावत का असर भी न होगा।

इस लिए अ़र्ज़ यह करना है, कि इन 6 नम्बरों की हक़ीक़त को सामने रख कर दावत देनी है। यह 6 नम्बर इस लिए सुनाना चाह रहा हूँ कि हमें भी यह याद हो जायें, और आप भी इन्हें याद कर लें, और 6 नम्बरों की हक़ीक़त को अपने अन्दर उतारने का तरीक़ा क्या है, वह भी याद कर लें। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के इन्तिहाई आसान और बहुत मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में यह 6 नम्बर हैं।

"ईमान व यक़ीन"

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम

"अम्मा बाद" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन्सानों की तमाम कामियाबियों का दार व मदार इन्सान के अन्दर की माया पर रखा है। कामियाबी और नाकामी इन्सान के अन्दर के हालात का नाम है, ये हालात एक क़िस्म की मख़्लूक़ हैं, जो नज़र नहीं आती, जिस तरह फ़रिश्ते ख़ुदा की मख़्लूक़ हैं पर नज़र नहीं आते अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम को यह मख़्लूक़ दिखलाई जाती है, जिस तरह बुख़ार नाम की बीमारी वाली मख़्लूक़ से हुज़ूर सल्ल० ने बात की और उसे देखा भी। इसलिए दुनिया की फैली हुई चीज़ों और नक़्शों का नाम कामियाबी और नाकामी नहीं है।

इज़्ज़त व ज़िल्लत, राहत व तक्लीफ़, सुकून व परेशानी, सेहत व बीमारी।

ये इन्सान की शक्ल के अन्दर, अल्लाह की तरफ़ से भेजी जाने वाली हालात नाम की मख़्लूक़ है, तो इन हालात के बनने और बिगड़ने का दुनिया में फैली हुई शक्लों और नक़्शों से कोई तअ़ल्लुक़ भी नहीं है, इन्सान के अन्दर की माया अल्लाह की ज़ात का यक़ीन और अल्लाह के अवामिर हैं। अब अगर इन्सान के अन्दर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन और अल्लाह के अवामिर (हुक्म) इसके जिस्म से अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वाले तरीक़े के मुताबिक़ निकलेंगे, तो अल्लाह जल्ल शानुहू इस इन्सान के अन्दर कामियाबी वाले हालात पैदा फ़रमा देंगे, ख़्वाह ज़ाहरी अस्बाब और चीज़ें कुछ भी इसके पास न हों।

क्योंकि अल्लाह पाक तमाम काइनात के हर ज़र्रे के हर फ़र्द के बनाने वाले और हर ज़र्रे और हर फ़र्द की हर ज़रूरत को हर

वक़्त अपनी ज़ात से पूरा करने वाले ख़ालिक़ और मालिक हैं।

1. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर चीज़ को अपनी क़ुदरत से बनाया है।

2. चीज़ें अल्लाह के बनाने से उनके चाहने से बनी हैं।

3. ये चीज़ें ख़ुद नहीं बनीं इन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बनाया है।

4. वह इन चीज़ों को बनाने वाले हैं।

5. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ुद बने नहीं हैं।

6. जो चीज़ें किसी के बनाने से बनी हों तो बनी हुई चीज़ों से कुछ बनता भी नहीं है।

7. ज़मीन और आसमान और इनके दरमियान जितनी भी मख़्लूक़ात हैं। इनसे कुछ नहीं बनता।

8. जो कुछ क़ुदरत से बना है वह क़ुदरत के मातहत है।

लेकिन इस वक़्त हमारे माहौल में यह बात चल रही है, हम लोग यूँ कह रहे हैं कि ज़मीन और आसमान के दरमियान जो चीज़ें अल्लाह ने बनाई हैं, वे इन्सानों के इस्तिमाल करने के लिए बनाई हैं कि जितना चाहे जानवरों से दूध निकाल लो, जितना चाहे दरख़्त से फल निकाल लो, जितना चाहे खेत से ग़ल्ला निकाल लो।

नहीं मेरे दोस्तो! अल्लाह ने जो चीज़ें अपनी क़ुदरत से बनाई हैं, उन चीज़ों को अल्लाह ने बनाकर अपनी क़ुदरत में रखा है। ऐसा नहीं है कि क़ुदरत से जब ये चीज़ें बन गयीं तो बनने के बाद यह चीज़ें क़ुदरत से ख़ारिज कर दी गई हों। बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो कुछ क़ुदरत से बनाया है, वह हर वक़्त उनके क़ब्ज़े में है। वही हर चीज़ को ख़ुद इस्तिमाल फ़रमाते हैं।

वह जब चाहें अपनी क़ुदरत से इन शक्लों को बदल दें और किसी चीज़ की शक्ल को चाहे क़ायम रख कर उसकी ख़ूबी को, उसकी सिफ़ात को बदल दें, यानी यह बात नहीं कि, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जिस चीज़ से जो तासीर वक़्ती तौर से दिखला दी, वह तासीर हम यह समझते हैं कि यह तासीर उस चीज़ की हो गई।

मेरे दोस्तो! अव्वल तो किसी चीज़ में कोई तासीर है ही नहीं, तासीर अल्लाह के अम्र में है, शक्लों में कोई तासीर नहीं है, शक्लें तो सारी की सारी मिट्टी से बनाई हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो चीज़ अपनी क़ुदरत से बनाई है, तो क़ुदरत हर वक़्त उस चीज़ में काम करती रहती है। इस बात को हमें बार बार सोचना पड़ेगा, ग़ौर करना पड़ेगा, लोगों से कहना पड़ेगा कि जो कुछ ज़मीन और आसमान के दरमियान हो रहा है, इन सब का तअ़ल्लुक़ इन फैली हुई शक्लों और नक़्शों से नहीं है, बल्लिक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते आ़ली तने तन्हा जो चाहती है वह करती है। इनका तअ़ल्लुक़ न तो उन अस्बाब से है जिन्हें अल्लाह ने बराहे रास्त बनाया है और न उन अस्बाब से है जिन अस्बाबों के बनने में किसी दर्जे इन्सानों का हाथ लगा है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जब चाहें लकड़ी को सांप बना देते हैं, सांप को लकड़ी बना देते हैं। पस्ली को हव्वा बना देते हैं, छड़ी को तलवार बना देते हैं।

इसी तरह

शक्ल आग की रख कर सिफ़ात बाग़ की ज़ाहिर करते हैं। शक्ल दरिया की रखकर सिफ़ात ज़मीन की ज़ाहिर करते हैं। पहाड़ से ऊंटनी निकालते हैं, कुंआरी मरियम रज़ि० से ईसा

अ़लै० को निकालते हैं। आसमान से पानी का भरा डोल उतारते हैं तो कभी ख़ुबैब रज़ि० के हाथ में अंगूर का ख़ोशा उतारते हैं। इस तरह सारी शक्लों पर ख़्वाह वे मुल्क की हों, या माल की, बर्फ़ की हों या भाप की, सारी शक्लों पर अल्लाह ही का क़ब्ज़ा है। वही इन शक्लों पर अपने अम्र (हुक्म) को इस्तिमाल फ़रमाते हैं। जहां से इन्सान को ज़िन्दगी बनती नज़र आती है, वहीं से ज़िन्दगी को बिगाड़ कर दिखलाते हैं, और जहां से ज़िन्दगी बिगड़ती नज़र आती है, वहीं से ज़िन्दगी को बना कर दिखलाते हैं। सारी चीज़ों के बग़ैर रेत पर डाल कर पाल कर दिखलाते हैं, और सारे साज़ व सामान ज़िन्दगी बनने के सारे अस्बाब और चीज़ों के होते हुए, ज़िन्दगी को तबाह और बर्बाद करके दिखाते हैं।

अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ाते आ़ली से हमारा तअ़ल्लुक़ पैदा हो जाये, और अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने वाले बन जायें, तो इसी के लिए यानी इन्सानों को कामियाबी दिलाने के लिए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रब्बुल इज़्ज़त के यहां से अल्लाह के अवामिर ले कर आए हैं।

मेरे दोस्तो! देखो, समझो इसे एक रास्ता है अल्लाह के ख़ज़ानों से काइनात की शक्लों और अस्बाब के ज़रीए फ़ायदा हासिल करने का और, एक रास्ता है अल्लाह के ख़ज़ानों से मुहम्मद सल्ल० के ज़रीए से फ़ायदा हासिल करने का। यानी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के अस्बाब और काइनात में फैले हुए नक़्शों से फ़ायदा उठाने के अस्बाब ये दोनों चीज़ें बिल्कुल मुक़ाबले की हैं, दोनों टक्कर की हैं। लेकिन

काइनात के नक़्शों में जो अस्बाब फैले हैं उन से वे ख़ूबियाँ ज़ाहिर हो जायें, वे हासिल हो जायें यह ज़रूरी नहीं है। लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दूसरी तरफ़ अपने अवामिर (हुक्मों) की ख़ूबी भी बतलायी है और उस ख़ूबी को ज़ाहिर करने के वादे भी किये, फ़ज़ाइल बतलाये।

इस लिए मेरे दोस्तो! अल्लाह की क़ुदरत से बराहे रास्त फ़ायदा उठाने के लिए हुज़ूर स० जो अल्लाह की तरफ़ से अवामिर (हुक्म) ले कर आए हैं, जब वे अवामिर (हुक्म) हमारी ज़िन्दगियों में आकर मुहम्मद सल्ल० के तरीक़े पर जिस्म से बाहर सादिर होंगे, तो अल्लाह जल्ल शानुहू हर नक़्शे हर सबब में कामियाबी दे कर दिखलायेंगे इसी लिए सब से पहले, "ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" में अपने यक़ीन, अपने जज़्बे और अपने तरीक़े जो हम हालात के आने पर ख़ास तौर से और दिन रात पड़ने वाली ज़रूरतों में आम तौर से इख़्तियार करते हैं, इनके बदलने का हम से यह कलिमा मुतालबा कर रहा है।

सिर्फ़ यक़ीन की तब्दीली पर ही, अल्लाह पाक इस ज़मीन और आसमान से कई गुना ज़्यादा बड़ी जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और दुनिया में नक़द फ़ायदा यह होगा कि जिन जिन शक्लों से हमारा यक़ीन निकल कर अल्लाह की ज़ात से हर चीज़ के बनने का और हुज़ूर सल्ल० के आमाल से होने का यक़ीन आएगा, तो यह सारी की सारी चीज़ें जिन से हमारा यक़ीन निकलेगा, उन शक्लों को अल्लाह हमारे लिए मुसख़्ख़र कर देंगे। असल में हम पर जो दुनिया की शक्लें मुसल्लत हैं, तो उन का हम पर तसल्लुत उन के यक़ीनों की वजह से है। एक छोटे जानवर से

लेकर, बड़े बड़े आलमी नक़्शों के यक़ीन ने इन्हें हम पर मुसल्लत कर रखा है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें दावत की वह मेहनत दी थी, जिस से ज़मीन और आसमान के दरमियान का निज़ाम सारा का सारा दाई के लिए मुसख़्ख़र हो जावे जिस तरह असहाबे कहफ़ के लिए सूरज को मुसख़्ख़र किया गया था। इसी तरह एक जमाअत दुशमन के मुक़ाबले पर और सूरज ग़ुरूब हो रहा है, अस्र की नमाज़ अभी पढ़ी नहीं, तो यूँ कहा अल्लाह से कि, ऐ अल्लाह सूरज को यहीं रोक दे, तो सूरज वहीं रुका रहा, ठहरा रहा, जब दुशमन से मुक़ाबला करके फ़ारिग़ हो गए, तब तक सूरज रुका हुआ है। उनकी अस्र की नमाज़ के तक़ाज़े पर सूरज रुका हुआ है।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! यह बात अपने ज़ेहन से निकाल दो, कि अस्बाब पर दावत चलेगी, अस्बाब पर दावत नहीं चला करती, बल्कि दावत पर वे अस्बाब चला करते हैं, जिन अस्बाब तक इन्सान की रसाई नहीं है। पहुंच नहीं है।

मेरे दोस्तो! हिदायत, अस्बाब पर कभी मौक़ूफ़ नहीं हुई है। हमेशा अस्बाब का मुवाफ़िक़ होना, हिदायत की मेहनत पर मौक़ूफ़ रहा है। तमाम अंबिया की दावत के वाक़िआत को उठाकर देखो, हर जगह यह मिलेगा कि बग़ैर अस्बाब के क़दम उठाया तो अल्लाह ने अस्बाब को मुवाफ़िक़ कर दिया, यह नहीं कि तुम अस्बाब पर हिदायत को लाओ। तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम की दावत का ख़ुलासा यही है कि हिदायत की मेहनत पर अस्बाब मुवाफ़िक़ हुए हैं। जिन जिन चीज़ों से हमारा यक़ीन निकल जायेगा उन सारी चीज़ों को अल्लाह पाक मुसख़्ख़र फ़रमा देंगे। अब पहला नम्बर।

ईमान (1)

ईमानः लुग़त में, किसी की ख़बर को ख़बर देने वाले के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने को ईमान कहते हैं।

कलिमा ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहः

का तर्जुमा, अल्लाह की ख़बरों को मुहम्मद सल्ल० के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम ईमान है।

ईमान से क्या चाहा जा रहा हैः

अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने के लिए, अल्लाह तआ़ला के अवामिर (अह्काम) को मुहम्मद स० के तरीक़े पर पूरा करने में, दुनिया व आख़िरत की तमाम कामियाबियों का यक़ीन करना।

ईमान हम से क्या चाह रहा हैः

अब इस कलिमे का यक़ीन हासिल करने के लिए तीन मेहनतें करनी होंगी।

पहली मेहनत : दावत देना
दूसरी मेहनत : मश्क़ करना
तीसरी मेहनत : दुआ़ मांगनी

अब इस में पहला काम है, कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह" की दावत, दावत देने में अल्लाह की बड़ाई समझानी है, अल्लाह की रबूबियत समझानी है, अल्लाह की क़ुदरत समझानी है, अंबिया और सहाबा की नुसरत के वाक़िआ़त सुनाने हैं कि किस तरह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने ज़ाहिर के ख़िलाफ़ उनकी मददें की हैं। किस तरह ग़ैबी निज़ाम सहाबा के साथ चला है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! क्योंकि हम यह दावत देते नहीं हैं, हम दावत देते हैं अस्बाब के ऐतिबार से, हालांकि अल्लाह के करने

के ज़ाब्ते अस्बाब नहीं हैं, अल्लाह के करने के ज़ाब्ते अह्कामात हैं, क्योंकि अल्लाह की क़ुदरत अह्कामात के साथ है, अस्बाब के साथ नहीं है, और असल कामियाबी क़ुदरत का साथ होना है। अस्बाब का साथ होना क़ुदरत का साथ होना नहीं कहलाता। क्योंकि अस्बाब इम्तिहान हैं और अह्कामात इत्मीनान हैं।

मेरे दोस्तो! यह इन्तिहाई महरूमी की बात है कि हम यूँ सोचें कि ये ग़ैबी नुसरतें सहाबा पर आकर ख़त्म हो गयीं। बात यह नहीं है, बल्कि बात यह है कि नुसरत दावत के साथ है। नुसरत अंबिया के साथ मख़सूस नहीं है, नुसरत दावत के साथ है आज भी ख़ुदा की क़सम वह होगा जो सहाबा किराम के साथ हुआ है, बल्कि उस से ज़्यादा होगा बशर्तेकि हम अपने आपको उस रुख़ पर लेकर चलें तो। हमने तो दोस्ती कर ली है अस्बाब से, जब कि अस्बाब का मिल जाना वबाल है और आमाल का मिल जाना यह इनाम है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब देकर परेशान करेंगे, दुकान दे कर मक़रूज़ करेंगे। दोस्तो, अस्बाब औंधा बर्तन है, और आमाल सीधा बर्तन है, इसमें बराहे रास्त आवेगा पर शिर्क से पाक हो। लेकिन हम क्या कर रहे हैं कि अस्बाब जितना साथ दें, उतनी दावत दो, उतना काम करो।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! अस्बाब की मुवाफ़क़त के साथ आमाल तो हो सकते हैं, पर यक़ीन नहीं बन सकता। अगर हज के ख़र्च का इन्तिज़ाम नहीं है, तो इस पर हज फ़र्ज़ नहीं है। अगर माल नहीं है तो ज़कात फ़र्ज़ नहीं है, आमाल तो चलेंगे अस्बाब पर लेकिन यक़ीन अस्बाब के साथ चले ऐसा नहीं होता, कि यक़ीन का और अस्बाब का कोई जोड़ नहीं है। यह तो हो सकता है कि एक आदमी यूं कहे कि माल नहीं है लिहाज़ा हम

हज नहीं कर सकते, क्योंकि हज अ़मल है, माल सबब है। लेकिन यह कहना कि अस्बाब होंगे तो यक़ीन होगा, नहीं यह कहना सही नहीं, कि अस्बाब का यक़ीन का कोई जोड़ नहीं है। इसलिए, मेरे दोस्तो! हर नबी ने आकर सब से पहली जो दावत दी है वह ईमान की दावत दी है। हर नबी ने अपनी क़ौम को,

अस्बाब से ईमान की तरफ़ और चीज़ों से आमाल की तरफ़

दावत दी है यानी किसी सबब से, किसी नक़्शे से और किसी शक्ल से कुछ नहीं बनता। जो भी इन शक्लों से जो ज़मीन आसमान के दरमियान फैली हुई हैं इन शक्लों से जो कुछ निकलता हुआ हमें नज़र आ रहा है या यह जो शक्लों में से चीज़ें बन कर निकलती हुई हमें नज़र आ रही हैं, ये चीज़ें इन शक्लों में नहीं बनतीं और न ही इन शक्लों के अन्दर जो ख़ुदा का अम्र काम कर रहा है उस से कुछ बनता है बल्कि यह सब अल्लाह की ज़ात से बना है और सातवें आसमान के ऊपर अ़र्श से मिला हुआ जो ग़ैबी ख़ज़ाना है, जिस का दरवाज़ा न रात को बन्द होता है न दिन में, उस ख़ज़ाने से बराहे रास्त इन शक्लों के अन्दर से निकलने वाली चीज़ें अल्लाह उतार रहे हैं, ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू कह रहे हैं। कि

खेती में ग़ल्ला हम उतारते हैं। (क़ुरआन)

पानी हम उतारते हैं। (क़ुरआन)

सारी मख़्लूक़ की रोज़ियां आसमानों से हम भेजते हैं,

जानवरों में दूध हम उतारते हैं। (क़ुरआन)

इस तरह शक्लों से न बन कर अल्लाह की ज़ात से बनने की दावत देते थे। इसी तरह चीज़ों में कामियाबी नहीं है, चीज़ों में सेहत नहीं है, चीज़ों में चैन और सुकून नहीं है, चीज़ों में राहत नहीं है, चीज़ों में इज़्ज़त नहीं है, अगर सेहत, चैन, सुकून, राहत और इज़्ज़त को पाना चाहते हो तो ये चीज़ें आमाल से हासिल होंगी।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गों! इस यक़ीन को अपने अन्दर पैदा करने के लिए, इस यक़ीन की दावत देनी है। अगर दावत देने वाले के सामने कलिमे की हक़ीक़त नहीं है, तो फिर उसकी दावत सिर्फ़ उसकी ज़बान के बोल हैं, न उस दावत से यक़ीन की तब्दीली होगी न उस दावत से उसका अपना यक़ीन बदलेगा, न उसके ईमान में कोई तरक़्क़ी ही होगी, बल्कि मेरे दोस्तो! जिस वक़्त कोई दावत देने वाला किसी फ़र्द को या किसी मज्मे को, मुक़ाम पर या बाहर दावत दे रहा हो, तो सब से पहले कलिमा "ला इलाह इल्लल्लाह" की दावत देते हुए उसके अपने सामने ईमान की हक़ीक़त हो, कि मैं ईमाने सहाबा की तरफ़ बुला रहा हूँ। इस लिए कि क़ुरआन में है,

"اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ" (सूरह बक़र आयत, 13)

हमारी मुश्किल यह है कि हम जिसे बुला रहे हैं, अपनी सतह के अ़मल की तरफ़ बुला रहे हैं। अपनी सतह के ईमान की तरफ़ बुला रहे हैं।

देखो मेरे दोस्तो! यह ग़लत है, बात को समझो अच्छी तरह,

देखो, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इसका हुक्म दे रहे हैं कि वह ईमान लाओ जो सहाबा किराम ईमान लाए हैं اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ सूरह बक़र आयत 13 जिस वक़्त हमारा कोई साथी कलिमे की दावत दे, उस वक़्त यह बात लाज़िम है कि उसके दावत देते हुए, उसके सामने ईमाने सहाबा, और उसके सामने कलिमे की हक़ीक़त, उसके सामने सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते आली हो, उसके सिवा कोई सबब न हो, जब इस तरह दावत देगा जिस तरह अर्ज़ किया जा रहा है, तो अब उस दावत से उसके अन्दर कलिमे की हक़ीक़त आएगी।

तो पहला काम क्या हुआ मेरे दोस्तो! कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह पहला नम्बर, पहले नम्बर में पहला काम दावत देने का। दावत देने में अल्लाह की बड़ाई समझाओ, अल्लाह की रबूबियत समझाओ, उसकी क़ुदरत समझाओ कि क़ुदरत अस्बाब की पाबन्द नहीं है, अस्बाब क़ुदरत के पाबन्द हैं, इसे अच्छी तरह समझाओ।

कलिमे में दूसरा काम मश्क़ : दूसरा काम यह है कि तन्हाइयों में बैठ कर सोचो कि जिस चीज़ की दावत दी है, यही हक़ है, यही सच है। इन दो कामों को करने के बाद।

कलिमे में तीसरा काम : फिर तीसरा काम यह है कि फिर रो रो कर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से इस यक़ीन की हक़ीक़त को मांगो।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! असल में यह मश्क़ तो हो गई ख़त्म, अब रह गई तक़रीर कि कोई बयान करने वाला अच्छा सा बयान कर दें, जिस से हमारी शब गुज़ारी कामियाब हो जाये।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० की हिदायत में सब से

ज़्यादा ईमान को बोला जाना और इस तरह से ईमान को बोला जाना कि तुम्हारी बात की चोट अस्बाब पर पड़ रही हो।

मेरे दोस्तो! अगर हम बोलते भी हैं, तो हम बोलेंगे अस्बाब की रिआयत से। अस्बाब की रिआयत से ईमान को बोलने से कभी ईमान न बनेगा बल्कि दोस्तो! जब तुम अस्बाब की रिआयत से ईमान को बोलोगे, तो बातिल तरक़्क़ी करेगा। इसलिए, मेरे दोस्तो! पहला नम्बरः कलिमा "ला इलाह इल्लल्लाह" इसके साथ तीन काम हैं।

1. दावत 2. मश्क़ 3. दुआ

चाहे मज्मे में दावत दो, चाहे इन्फ़िरादी दावत दो, पर कलिमे की हक़ीक़त को सामने रख कर दावत दो, क्योंकि दावत के साथ अल्लाह की क़ुदरत है और वह क़ुदरत दावत के साथ इस्तिमाल होगी। इसी लिए।

अल्लाह को कलिमे की दावत पसंद है,
कलिमे का दावा पसंद नहीं है।
दावा करने वाले इस्लाम लाए हैं,
ईमान नहीं लाए हैं।

لَمْ تُؤْمِنُوا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا (सूरह हुजुरात आयत, 14)

अब दूसरा नम्बर है नमाज़ का,

नमाज़ (2)

नमाज़ का मफ़हूम : अल्लाह तआला की क़ुदरत से बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने वाला अ़मल।

नमाज़ से क्या चाहा जा रहा है:

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने में यह नमाज़ हमारा यक़ीनी सबब बन जाये।

नमाज़ हम से क्या चाह रही है: हुक़ूक़ुल्लाह की अदायगी यानी नमाज़ के हुक़ूक़ अदा करना।

नमाज़ी पर नमाज़ का पहला हक़। दावत देना

नमाज़ी पर नमाज़ का दूसरा हक़। मश्क़ करना

नमाज़ी पर नमाज़ का तीसरा हक़।दुआ़ मांगनी।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़ुदरत से बराहे रास्त फ़ायदे हासिल करने के लिए नमाज़ का अम्र दिया गया है। नमाज़ यक़ीनी सबब है, दुकान ग़ैर यक़ीनी सबब है। ग़ैर यक़ीनी सबब से जो तुम चाहो वह न होगा, नमाज़ के अम्र से जो तुम चाहोगे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त वह कर देंगे। इस लिए अपनी ज़रूरतों को नमाज़ के अम्र से पूरा कराने के लिए एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना।

सर से लेकर पैर तक अल्लाह की रज़ा वाले मख़सूस तरीक़े पर पाबंदियों के साथ अपने जिस्म को इस्तिमाल करो, आंखों का, कानों का, और ज़बान का और पैरों और हाथों का इस्तिमाल ठीक हो, दिल में अल्लाह की ज़ात का यक़ीन हो अल्लाह का ध्यान हो, और अल्लाह का ख़ौफ़ हो और नमाज़ में

अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इनका इस्तिमाल यानी रुकू, तक्बीर और तस्बीह और क़िरअत, ये सारी की सारी चीज़ें, सारी काइनात से ज़्यादा फ़ायदा व इनामात दिलाने वाली हैं, इसी यक़ीन के साथ नमाज़ अदा करके, हाथ फैला कर मांगा जाये तो अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी क़ुदरत से हमारी हर ज़रूरत भी पूरी करेंगे और उस नमाज़ पर अल्लाह पाक गुनाहों को भी माफ़ फ़रमायेंगे, रिज़्क़ में बरकत भी देंगे, ताअत की तौफ़ीक़ भी मिलेगी। नमाज़ के लिए भी तीन काम करने होंगे।

पहला काम : दावत

दूसरा काम : मश्क़

तीसरा काम : दुआ

नमाज़ के साथ पहला काम— दावत :

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! बेशक उम्मत में आमाल का रिवाज है, वह भी किसी दर्जे में, लेकिन यह आमाल की शक्ल है, आमाल की हक़ीक़त उन शक्लों से निकली हुई है। देखो दोस्तो, हो यह रहा है, कि नमाज़ी दावत दे रहा है, बे नमाज़ी को।

हमारे 6 नम्बरों की दावत इस लिए नहीं है कि उम्मत में नमाज़ की कमी है, इस वजह से उनको नमाज़ की दावत दो।

नहीं मेरे दोस्तो! बल्कि हमारे 6 नम्बरों की दावत का मक़्सद यह है कि हमें इन नम्बरों की हक़ीक़त मिल जाये। ज़रा सा समझने और ग़ौर करने की बात है, अगर ग़ौर करोगे तो तुम्हें ख़ुद फ़र्क़ महसूस होगा हदीस में यूं आता है कि नमाज़ रोशन और चमकदार होकर नमाज़ी के लिए दुआ करती हुई जाती है या सियाह रंग में नमाज़ी के लिए बद्दुआ करती हुई जाती है, कि अल्लाह जैसे उस नमाज़ी ने मुझे ज़ाए किया मेरे हक़ को

अदा न करके, तू भी इस नमाज़ी को ज़ाए कर दे, तो फिर यह नमाज़ पुराने कपड़े की तरह लपेट कर, उस नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है। इस तरह हदीस में यह भी आता है कि क़ब्र में नमाज़ी आदमी के सर की जानिब नमाज़ मौजूद होगी और क़यामत में जब नमाज़ी आदमी अल्लाह के सामने हिसाब देने के लिए खड़ा होगा तो यह नमाज़ मीज़ान पर अपने वज़न की तौल करा रही होगी। यह नमाज़ की हक़ीक़त हुज़ूर सल्ल० मेराज से वापसी पर अपने साथ ले कर आए थे। इस लिए जब तुम नमाज़ की दावत दो, तो नमाज़ की हक़ीक़त को सामने रख कर दावत दो उस बेनमाज़ी को सामने रख कर दावत न दो। बल्कि नमाज़ के ख़ुशू को नमाज़ के ख़ुज़ू को नमाज़ की हक़ीक़त को और सिफ़ते एहसान को सामने रखकर दावत दो, कि तुम अल्लाह को देख रहे हो, या कम से कम इस यक़ीन के साथ कि अल्लाह हमें देख रहे हैं।

मेरे दोस्तो! इन चन्द चीज़ों को सामने रखकर नमाज़ की दावत दो। क्योंकि ख़ुद दावत देने वाला अपने अन्दर नमाज़ की हक़ीक़त लाना चाहता है, इस वजह से नमाज़ की दावत दे रहा है लेकिन हमारे गश्त बे नमाज़ियों में हो रहे हैं बे नमाज़ियों को सामने रखकर, इसलिए हमारी नमाज़ों में कोई तरक़्क़ी नहीं, हमारी तालीम हो रही है इसके लिए जो नमाज़ नहीं पढ़ रहे, इस लिए तालीम से अपनी ज़ात को फ़ायदा नहीं। इसलिए नमाज़ की हक़ीक़त को समाने रखकर दावत दो। नमाज़ से मिलने वाले नफ़े जो दुनिया में मिलेंगे जब तक हम यहां हैं, और आख़िरत में जो नफ़े मिलेंगे वहां जाने पर, उन नफ़ों को ख़ूब समझाओ, हुज़ूर स० और सहाबा वाली नमाज़ को सुनाना कि किस तरह

नमाज़ से उन्होंने अल्लाह की क़ुदरत से अपने मस्अले हल करवाए यह हुई नमाज़ की दावत यानी पहला काम।

अब दूसरा काम— नमाज़ की मश्क़ : नमाज़ पर दो ऐतिबार से मश्क़ करना है।

(1) एक नमाज़ के ज़ाहिर के ऐतिबार से उसकी मश्क़ है। और

(2) दूसरी नमाज़ के बातिन से उसकी मश्क़ है।

ज़ाहिरी मश्क़ : वुज़ू, लिबास, क़िर्अत, रुकू, क़ौमा, सज्दा, जल्सा, क़अ्दा, तिलावत, तस्बीह वग़ैरा यह इसमें बिल्कुल सही हों। मश्क़ करके इसको सही किया जाये, उलमा से मसाइल पूछ कर।

बातनी मश्क़ : अल्लाह की ज़ात का यक़ीन होना, अल्लाह का ध्यान होना, अल्लाह की ज़ात का ख़ौफ़, और अपनी तमाम तर हाजतों का उस नमाज़ के ज़रीए से पूरा होने का यक़ीन करना, कि हाजत जब आए तो नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो।

अब मेरे दोस्तो! अगर सारी उम्मत में नमाज़ ज़िन्दा करना मक़्सद है, तो अब यह सोचो कि यक़ीन पर कितने आए कि जिन्हें यह यक़ीन हो कि नमाज़ से हमारा हर मस्अला पूरा हो जायेगा और अगर यह मक़्सद है, कि नहीं, मैं अपनी हर हाजत के आने पर नमाज़ की तरफ़ बार-बार मुतवज्जह इस लिए हो रहा हूँ, तोकि मेरा यक़ीन अस्बाब से हट कर नमाज़ पर आ जाये, क्योंकि,

नमाज़ यक़ीनी सबब है, दुकान ग़ैर यक़ीनी सबब है।

लेकिन हमारा मामूल यह है, कि हम सलातुल हाजत अदा करेंगे और फिर अस्बाब में लग जायेंगे। पर सहाबा किराम

रज़ियल्लाहु अन्हुम,

मेरे दोस्तो! हज़रत अनस रज़ि० ने नमाज़ अदा की और बादल देखा, फिर अदा की फिर बादल देखा, चार से पाँच बार नमाज़ अदा करने पर छोटा सा बादल का टुकड़ा नज़र आया। यानी मश्क़ के ज़रीये से अपने यक़ीनों को अस्बाब से हटाना है, और आमाल पर लाना है। यह नहीं कि हमने बर्कत के लिए सलातुल हाजत अदा की और फिर दूकान में चले गए।

मेरे दोस्तो! अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! एक होता है नमाज़ अदा करना हाजत के लिए और एक होता है सलातुल हाजत का अदा करना अपने यक़ीनों को बदलने के लिए, कि यक़ीन को अस्बाब से निकाल कर आमाल में मुन्तक़िल करने के लिए नमाज़ की मश्क़ है।

आप हज़रात ग़ौर फ़रमा रहे हैं या नहीं, क्योंकि बयान तक़रीर की बात नहीं है, यह तो मेहनत अर्ज़ कर रहा हूँ जो हमें और आप सब को करनी है। आख़िर हम बे नमाज़ी को दावत क्यों दे रहे हैं, क्या बे नमाज़ी को दावत उसके बेनमाज़ी होने की वजह से दे रहे हैं, या हम बे नमाज़ी और नमाज़ी को दावत अपनी नमाज़ की हक़ीक़त हासिल करने के लिए दे रहे हैं, सवाल इस बात का है।

मेरे दोस्तो! महसूस यह हो रहा है, कि ख़ुद चार महीने लगाने वाले,चिल्ले लगाने वाले, पाबन्दी से महीने में तीन दिन लगाने वाले, यह भी यूं कहते हैं कि अस्बाब की दुनिया है, सबब इख़्तियार करो, यह तब्लीग़ की मेहनत करोगे तो अल्लाह तुम्हारे अस्बाब आसान कर देंगे। सवाल इस बात का है कि जो मेहनत कर रहे हैं उनके यक़ीनों का क्या हुआ।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अगर हम भी यही कहते हैं, कि अस्बाब यही हैं जो दुनिया में नज़र आ रहे हैं, यह दुनिया में फैली हुई शक्लें और यह दुनिया के नक़्शे ही अस्बाब हैं, और मुशरिकीन, मुल्हिदीन, कुफ़्फ़ार, यहूद और नसारा भी यही कहें कि यही अस्बाब हैं, बस तो फिर उसका मतलब यह है कि हम सारे के सारे एक ही रास्ते पर हैं। यह सच्ची बात है कि हम सारे के सारे एक ही डगर पर हैं, फिर अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का काम ही क्या था? हुज़ूर सल्ल० के पास जब कोई अपनी हाजत या अपना कोई मस्अला लेकर आता कि जी पेट में दर्द है तो आपने कहा जा नमाज़ अदा कर, कि फ़ाक़ा आ गया तो जा सूरः वाक़िआ़ पढ़।

मेरे दोस्तो! मुझे बताओ तो सही कि कहां, हुज़ूर स० ने उसको अस्बाब बतलाए हैं। हम असल में जो दावत दे रहे हैं, वह उसकी सारी दुनिया आमाल पर आ जाये। नहीं मेरे दोस्तो, मैं अ़र्ज़ यह करता हूँ कि जब नमाज़ की हक़ीक़त की तरफ़ दावत देंगे, तो एक आदमी नमाज़ पर आएगा या नहीं आएगा, यक़ीनन आएगा। लेकिन आप अगर सिर्फ़ अ़मल की दावत देंगे, यक़ीन की दावत तब्दीली के लिए दावत न देंगे, तो उस दावत से लोग अ़मल पर आजायेंगे, यक़ीन पर न आयेंगे फिर जब उस नमाज़ के मुक़ाबले में दुकान आएगी, जब उस नमाज़ के मुक़ाबले में खेत, कारख़ाने, या घरेलू मस्अले आ जायेंगे, तो यह नमाज़ छोड़ दी जायेगी, क्योंकि शक्ल के मुक़ाबले में शक्ल आ गई, लेकिन हक़ीक़त के मुक़ाबले में शक्ल आती है, तो हक़ीक़त को इख़्तियार कर लिया जाता है और शक्ल को छोड़ दिया जाता है।

इस लिए कि अभी हमारे आमाल यक़ीन में नहीं आए मामूल

में आए हैं हुज़ूर स० ने क़यामत तक के आने वालों के लिए अपनी नमाज़ को नमूना क़रार दिया है और अपनी वाली नमाज़ दी है।

अब ख़ुद अपनी नमाज़ों की मश्क़ करनी है, ज़ाहिर के ऐतिबार से भी और बातिन के ऐतिबार से भी, मैंने दोनों अ़र्ज़ कर दिए हैं। कि ज़ाहिर में मस्अले के ऐतिबार से सही हो और फ़ज़ाइल के ऐतिबार से फ़ज़ाइल मुस्तहज़र हों। बातिन के ऐतिबार से कि जब हाजत आवे, नमाज़ को इख़्तियार करो, अगर हाजत पूरी नहीं हुई तो फिर नमाज़ अदा करो, फिर हाजत पूरी नहीं हुई फिर नमाज़ अदा करो, यहां तक कि कोशिश करते करते नमाज़ जो अब तक ग़ैर यक़ीनी सबब था, वह यक़ीनी सबब बन जावे, और इसके मुक़ाबले में जो अस्बाब अब तक यक़ीनी सबब थे, यह तमाम के तमाम अस्बाब ग़ैर यक़ीनी सबब बन जावें।

मेरे दोस्तो! हाजत के आते ही अगर नमाज़ का ख़्याल न आया तो, अभी नमाज़ की हक़ीक़त नहीं हासिल हुई, अगर हाजत के आते ही सबब का ख़्याल आ गया तो यह सबब का ख़्याल हमारे अन्दर के सबब के यक़ीन ने ज़ाहिर किया है अब अगर उस सबब की कामियाबी के लिए नमाज़ अदा कर रहा है। तो यह उसके अ़क़ीदे का बिगाड़ ऐसा करा रहा है।

मेरे दोस्तो! उम्मत अ़मल कर रही है अस्बाब बनाने के लिए अक़ीदा का बिगाड़ है कि अस्बाब बनाने के लिए आमाल हो रहे हैं। मेरे दोस्तो! अ़मल वह सबब है जो अस्बाब के ख़िलाफ़ अल्लाह की क़ुदरत से बराहे रास्त कामियाबी दिलवाएगा, अ़मल वह सबब है जिसके इन्कार की गुंजाइश नहीं, वह सबब है

जिसके और अल्लाह के दरमियान कोई परदा नहीं, अब अपनी ज़रूरतों को नमाज़ से पूरा करने के लिए एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करके उससे अपनी हाजतों को पूरा कराने की मश्क़ करो। यह नमाज़ के साथ दूसरा काम हो गया।

तीसरा काम : "दुआ" कि जब नमाज़ की दावत और नमाज़ की मश्क़ करते हुए जिस तरह अ़र्ज़ किया गया है फिर नमाज़ के अ़मल को पूरा करके, सोचना कि अल्लाह की शान के मुताबिक़ नमाज़ का हक़ हम से सही अदा न हो सका, उस पर रोना और कहना कि ऐ अल्लाह तू हमें नमाज़ की हक़ीक़त अ़ता फ़रमा दे।

अब तीसरा नम्बर इल्म व ज़िक्र

इल्म व ज़िक्र (3)

इल्म का मफ़हूम : अल्लाह तआला की ज़ाते आली से बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने की ग़र्ज़ से अल्लाह के अवामिर (हुक्मों) को हुज़ूर स० के तरीक़े पर इख़्तियार करना।

इल्म से क्या चाहा जा रहा है:

इस बात की तहक़ीक़ करना कि मेरा अल्लाह मुझसे इस हाल में क्या चाह रहा है।

इल्म हम से क्या चाह रहा है:

हम में तहक़ीक़ का जज़्बा पैदा हो जाये इस के लिए तीन मेहनतें करनी हैं।

1. इल्म की दावत 2. इल्म की मश्क़ 3. इल्म के लिए दुआ.

इल्म से मुराद यह है कि हम में तहक़ीक़ का जज़्बा पैदा हो जाये, क्या मतलब इस का? इल्म कहते हैं कि अल्लाह मुझ से इस वक़्त क्या चाह रहा है। किताब याद हो जाने को इल्म नहीं कहते, बल्कि मेरा अल्लाह मुझ से इस वक़्त क्या चाह रहा है, और जो चाह रहा है उसे अल्लाह के ध्यान के साथ पूरा करना यह इल्म और ज़िक्र है।

मेरे दोस्तो! इन्सान के अ़मल से इल्म का ज़ाहिर होना, यह इल्म की अ़लामत है। यह जो कहा जाता है कि इल्म व ज़िक्र एक नम्बर है, इसका यही मतलब है कि अल्लाह मुझसे इस वक़्त जो चाह रहा है उसे अल्लाह के ध्यान के साथ पूरा कर देना यानी अ़मल हो अल्लाह के ध्यान के साथ, यह इल्म व

ज़िक्र का ख़ुलासा है।

आज तो जो आदमी जो सीखे वही इल्म, जो आदमी किसी से जो पूछे वही इल्म, नहीं मेरे दोस्तो! इल्म सिर्फ़ उसको कहते हैं, जो हुज़ूर स० यक़ीनी कामियाबी के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां से लेकर आए हैं, उसको इल्म कहते हैं।

वह क्या है? वह क़ब्र के तीन सवाल हैं।

1.रब को जानना 2. उसके अहकामात को जानना

3.नबी की नियाबत में मिली हुई ज़िम्मेदारी को पूरा करना।

लेकिन आज इल्म और जहालत में कोई फ़र्क़ नहीं रहा। जहां आंख बन्द हो जाती है, वहां जहालत ख़त्म हो जाती है और इल्म शुरू हो जाता है। सारी जहालत जहां ख़त्म हो जायेगी, इल्म वहां से शुरू होगा। यह क़ब्र के तीन सवाल, यह तीनों सवाल इल्म के बारे में हैं, जहालत के बारे में कोई सवाल नहीं।

यहां क़ब्र में ज़बान इल्म पर नहीं चलेगी, कि कोई याद करके गया, कोई सीख कर गया, कोई सुन कर गया, कोई सुनाकर गया।

इसी लिए क़ुरआन ने आलिम यक़ीन वालों को कहा है। लेकिन आज उम्मत तरबिय्यत के इल्म को खो चुकी है। उम्मत के पास शरीअ़त का इल्म तो है, लेकिन तरबिय्यत के इल्म से हाथ धो बैठी है। वह मेहनत हमारे यहां इल्म व ज़िक्र से चाही जा रही है।

सहाबा किराम जो नमूना हैं सारी उम्मत के लिए वे तरबिय्यत की वजह से नमूना बनाए गए, सिर्फ़ इल्म की वजह से नहीं बल्कि नुबुव्वत वाले इल्म पर उन से मेहनत कराई गई, तब कहीं जाकर नमूना बनाए गए हैं।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० ने एक मर्तबा एक मदरसे में बुख़ारी के ख़त्म पर फ़रमाया, भाइयो! आपने बुख़ारी ख़त्म की इल्म हासिल हुआ अब इस इल्म पर तीन मक़्सदों के लिए मेहनत ज़रूरी है।

1. इस इल्म के मुताबिक़ आपके अन्दर का यक़ीन,

2. इस इल्म के मुताबिक़ अ़मल, और

3. इस यक़ीन और अ़मल को आ़लम में फैलाना,

हुज़ूर स० के लाए हुए इल्म पर इन तीनों पहलुओं से इब्तिदा में मेहनत की गई थी, तो उस ज़माने के काइनाती नक़्शों पर चलने वाले, रूम व फ़ारस के टुकड़े-टुकड़े हो गए। आख़िरी ज़माने में दज्जाल अपनी ज़ात से इतनी बड़ी ताक़त का मुज़ाहरा करेगा, कि उसके मुक़ाबले में मौजूदा ताक़तें कुछ भी नहीं हैं। उस वक़्त मेहदी अ़लैहिस्सलाम ज़मीन से ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से आयेंगे और हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े के मुताबिक़ इस इल्म पर यही मेहनत करेंगे इस पर अल्लाह पाक उस दज्जाली ताक़त को हलाक कर देगा। तो जब पहले भी यह हो चुका और आख़िर में भी ऐसा होगा, तो फिर उस पर शक क्यों है कि इस दौर में कैसे हो सकेगा। आज भी वह सब कुछ हो सकता है। बशर्तेकि एक क़ाबिले एतिमाद तब्क़ा इस इल्म पर हुज़ूर स० और सहाबा रज़ि० की तरह मेहनत कर डाले।

मेरे दोस्तो! हुज़ूर स० से सादिर होने वाले आमाल को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐटम बम से ज़्यादा ताक़त वर बनाया है, और एक-एक अ़मल को आ़लम की तामीर का ज़रीया बनाया है। "सलातुल इस्तिस्क़ा" ज़मीन के हालात में बदलाव का ज़रीया "सलातुल ख़ुसूफ़" और "सलातुल कुसूफ़" चांद

और सूरज के हालात बदलने के लिए है। "सलातुल हाजत" और "दुआ" हर क़िस्म के इन्फ़िरादी और इज्माई ना मुवाफ़िक़ हालात बदलने के लिए है। हुज़ूर स० की उंगली के इशार से चांद के दो टुक्ड़े कराके यही ज़ाहिर किया गया है कि हुज़ूर स० से सादिर होने वाले आमाल की इतनी ताक़त है, और यह चांद की तरफ़ उंगली का इशारा हुज़ूर स० का तक्वीनी अ़मल था। तशरीई अ़मल इस से भी ज़्यादा ताक़त वाले हैं। जब यक़ीन के साथ ईमान वाला वुज़ू करके कलिमे की गवाही देते हुए आसमान की तरफ़ अपनी उंगली उठाता है तो सातों आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं, और अ़र्श के ऊपर नूर का सुतून हिलने लगता है।

इसी लिए, अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त फ़ायदा हासिल करने की ग़र्ज़ से अल्लाह तआ़ला के अवामिर (हुक्मों) को हुज़ूर स० के तरीक़े पर पूरा करने की निय्यत से हुज़ूर स० के लाए हुए इल्म को हासिल करने के लिए जो सफ़र करता है, तो उसका यह सफ़र इबादत में लिखा जाता है, इस मक़्सद के लिए चलने वालों के पैरों के नीचे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते अपने परों को बिछाते हैं। ज़मीन और आसमान की सारी मख़्लूक़ उनके लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करती हैं। शैतान पर एक आ़लिम हज़ार आ़बिदों से ज़्यादा भारी है। यह फ़ज़ाइल की किताब याद हो जाने का नाम इल्म नहीं है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! तालीम अ़मल को कहते हैं और इल्म यक़ीन को कहते हैं। सिर्फ़ दिमाग़ में आ जाने का नाम इल्म नहीं है, या किताब याद हो जाने का नाम इल्म नहीं है। बल्कि क़ुरआन ने आ़लिम यक़ीन वालों को कहा है, मालूमात हो जाने

को नहीं। क़ुरआन ने आ़लिम यक़ीन वालों को कहा है कि अल्लाह के वादों का जिन्हें यक़ीन है।

इसलिए सब से पहला काम इल्म के साथ भी जो करना है, वह दावत है।

पहला काम : "दावत" दुनिया व आख़िरत में कामियाबी दिलाने के लिए हुज़ूर स० के लाए हुए इल्म को हासिल करने का लोगों के अन्दर शौक़ व तलब पैदा करने की कोशिश करना, आमाल के फ़ज़ाइल सुनाना और तालीम के दौरान तालीमी गश्त करना।

दूसरा काम : "मश्क़" वह इल्म जिस में इन्सानों के आमाल और अफ़आ़ल के दुनिया व आख़िरत में ज़ाहिर होने वाले नतीजों का बयान हो,

ऐसे इल्म में मशग़ूलियत और तालीम के हल्क़ों में ख़ूब जम कर बैठना।

लेकिन अब बात यह है कि तालीम का हल्क़ा हो गया मुहल्ले वालों के लिए। यह बात ज़रा अच्छी तरह समझ लें कि तालीम है मस्जिद वार जमाअ़त की अपनी, मुहल्ले वाले आते रहेंगे, बैठते रहेंगे कोई पांच मिनट, कोई दस मिनट बैठेंगे, फिर उठ कर चले जायेंगे। लेकिन अगर यह सोच लिया कि तालीम है मुहल्ले वालों के लिए लिहाज़ा मुहल्ले वाले जितनी देर बैठें उतनी देर तालीम होनी चाहिए, नहीं बल्कि मेरे दोस्तो! यह तालीम है मस्जिद वार जमाअ़त की यह तालीम चलाती रहेगी जिस को जितना बैठना होगा बैठेगा, हम उनको बैठने की तर्ग़ीब तो देंगे, लेकिन यह नहीं कि जब मुहल्ले वाले उठकर जाने लगें तो हमारी तालीम ख़त्म हो जाये। यह बात अच्छी तरह याद

रखना दोस्तो! कि तालीम मस्जिद वार जमाअ़त की अपनी तालीम है। इसे तीस मिनट से लेकर डेढ़ घन्टे तक पहुंचाना है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि तालीम के हल्क़ों में जम कर बैठो बल्कि मुजाहदे के साथ बैठो। इस लिए कि सिर्फ़ तालीम के इल्म से अ़मल की इस्तेदाद पैदा नहीं होती बल्कि तालीम के नूर से अ़मल की इस्तेदाद पैदा होती है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! असल में अ़मल की क़ुव्वत का तअ़ल्लुक़ इल्मे नुबुव्वत के नूर से है। अब जितना हदीस का नूर आएगा, अपने अन्दर, उतनी अ़मल पर पड़ने की इस्तेदाद पैदा होगी। इसलिए अ़र्ज़ यह है कि एक एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़ो, फ़ायदे को एक बार पढ़ना है, फ़ायदे में जो हदीस आएगी उसे भी एक ही बार पढ़ना है, सिर्फ़ हदीस तीन तीन बार ठहर ठहर कर पढ़ो। यह तरीक़ए नुबुव्वत है, उम्मत को तालीम देने का और यही तरीक़ा मस्नून है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि, अदब और अ़ज़्मत, ध्यान और तवज्जोह इलल्लाह और बा वुज़ू बैठने की कोशिश और टेक लगा कर न बैठना। यह नहीं कि जिसे किताब पढ़नी आती है वह बस मुंह के सामने किताब रखकर पढ़ता चला जा रहा और साथियों का ध्यान कहीं और है।

मेरे दोस्तो! किताब पढ़ना मक़्सूद नहीं है, बल्कि उम्मत को इसके यक़ीन पर लाना मक़्सूद है, कि फ़ज़ाइल का यक़ीन अपने अन्दर पैदा करो आप हज़रात इस तरह से तालीम में बैठें ताकि तालीम का अ़मल मुकम्मल हो।

तीसरा काम : "दुआ़" इन दोनों कामों के करने के बाद अब रो-रो कर अल्लाह से इल्म की हक़ीक़त को मांगना।

ज़िक्र

ज़िक्र का मफ़हूम : अल्लाह तआला के अवामिर (हुक्मों) में अल्लाह तआला के ध्यान के साथ मशग़ूल होना।

ज़िक्र से क्या चाहा जा रहा है :

कि अल्लाह तआला मेरे सामने है और वह मुझे देख रहे हैं।

ज़िक्र हम से क्या चाह रहा है:

ज़िक्र की तीन मेहनतें हैं।

1. दावत 2. मश्क़ 3. दुआ

मेरे दोस्तो! ज़िक्र का मतलब सिर्फ़ तस्बीहात का पूरा करना नहीं है, यह तो अस्बाब हैं अल्लाह का ध्यान क़ायम करने के लिए असल में ज़िक्र कहते हैं, अल्लाह के ध्यान को। क्योंकि जितने भी आमाल हैं, वे सिर्फ़ अल्लाह के ध्यान लाने का सबब हैं, इस लिए उनको तबअ़न ज़िक्र कह दिया जाता है। तिवालत ज़िक्र है, नमाज़ ज़िक्र है, तस्बीहात ज़िक्र है, ये सब ज़िक्र क्यों है? कि उनसे अल्लाह का ध्यान लाना मक़्सूद है। इसलिए इनको तबअ़न ज़िक्र कह दिया गया, वरना असल में मेरे दोस्तो! ज़िक्र तो अल्लाह के ध्यान को कहते हैं।

"(اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ (سورۃ طٰهٰ، رکوع ۱))"

कि नमाज़ को क़ायम करो मेरी याद के लिए। अगर नमाज़ अल्लाह के ध्यान से हो रही है, तो नमाज़ ज़िक्र है। जो अ़मल भी अल्लाह के ध्यान के साथ हो, वह ज़िक्र है।

इसी लिए हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि हर इताअ़त करने वाला जो अल्लाह की और उसके रसूल की इताअ़त करता हो, तो वह ज़ाकिर है। अब हर अ़मल में अल्लाह का ध्यान पैदा

करने के लिए अल्लाह का ज़िक्र है, कि जो आदमी अल्लाह को याद करता है अल्लाह उसको याद फ़रमाते हैं जब तक आदमी के होंट अल्लाह के ज़िक्र में हिलते रहते हैं, अल्लाह की ताक़त और मदद उसके साथ होती है। अल्लाह पाक उसे अपनी मुहब्बत और मारिफ़त अ़ता फ़रमाते हैं। अल्लाह का ज़िक्र शैतान से बचने का क़िला है। अब ज़िक्र की हक़ीक़त को हासिल करने के लिए भी तीन काम करने हैं।

पहला काम "दावत" एक-एक मुसलमान को अल्लाह का ज़िक्र करने पर इस दावत के ज़रीए से आमादा करना है, कि हर मुसलमान अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ कराने वाला बन जाये, अल्लाह की तारीफ़ें करने वाला और तज़किरे करने वाला बन जाये। इसलिए कि तारीफ़ों के क़ाबिल तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात-ए-आ़ली ही है, कि जिस ने बग़ैर सूरज के सूरज, बग़ैर चाँद के चाँद, बग़ैर आसमान के आसमान और बग़ैर इन्सान के इन्सान, बग़ैर परिन्दे के परिन्दे को सिर्फ़ अपने अम्र (हुक्म) से बनाया अव्वल में शक्लों के बग़ैर सारे आ़लम को शक्लों से सजाया ऐसे तारीफ़ वाले अल्लाह की हर मुसलमान तारीफ़ और तज़्किरे करने वाला बन जाए। इस पर उम्मत को आमादा करना है तर्ग़ीब दे कर, यह तर्ग़ीब हमें इस लिए देनी है कि इसकी हक़ीक़त अभी हमारे अन्दर नहीं है उसी हक़ीक़त को हासिल करने के लिए मैं दावत दे रहा हूँ। जब इस की हक़ीक़त हमें हासिल होगी तो हमें अल्लाह का ध्यान मिल जायेगा, इसके लिए दावत के बाद हमें मश्क़ करनी है।

दूसरा काम : "मश्क़" कि तन्हाइयों में बैठ कर अल्लाह

का ज़िक्र करना है, उस कैफ़ियत के साथ कि मेरा अल्लाह जिस ने सब कुछ अपनी क़ुदरत से बनाया है, वह मेरे सामने है, मेरे ज़िक्र करने को सुन रहा है, मेरा अल्लाह मुझे देख रहा है, इस तरह अल्लाह के ज़िक्र की मश्क़ करनी है।

अब तीसरा कामः "दुआ" कि इन दोनों कामों को करने के बाद यानी इस दावत और मश्क़ के बाद रो-रो कर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से ज़िक्र की हक़ीक़त मांगनी है।

अब चौथ नम्बर इक्रामे मुस्लिम

इकरामे मुस्लिम (4)

इकरामे मुस्लिम का मफ़हूम :

अल्लाह तआला के बन्दों से मुतअ़ल्लिक़ जो अल्लाह के अवामिर (हुक्म) हैं। उन्हें हुज़ूर स० के तरीक़े पर पाबन्दी से पूरा करना।

इकरामे मुस्लिम से क्या चाहा जा रहा है।

अल्लाह तआला के बन्दों के हक़ को अदा करना और अपने हक़ को माफ़ करना।

इकरामे मुस्लिम हम से क्या चाह रहा है:

यह नम्बर भी हम से तीन मेहनत चाह रहा है।

1. दावत 2. मश्क़ 3. दुआ

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! माल की तबई चाहत और उससे दिलचस्पी और मुहब्बत के बावुजूद अपना कमाया हुआ माल अल्लाह की रज़ा के लिए, अल्लाह के नबियों और किताबों की तालीम के मुताबिक़ अपने माहौल के ज़रूरत मन्दों पर ख़र्च करो,

क़राबतदार, मिस्कीन, यतीमों पर ख़र्च करें,

ग़र्ज़ यह कि अपनी कमाइयां दूसरों पर ख़र्च करें और दूसरों को आराम और नफ़ा पहुंचाए, हर मुसलमान का इकराम करें कि वह हुज़ूर स० का उम्मती है, हर उम्मती के आगे बिछ जाना,

मेरे दोस्तो! हर शख़्स के हुक़ूक़ को अदा करना है और अपने हक़ को माफ़ करना है। दोस्तो! जो आदमी मुसलमानों के ऐबों को छुपाएगा अल्लाह पाक उस के ऐबों को छुपाएगा। जो आदमी

अपने मुसलमान भाई की मदद करेगा, अल्लाह पाक उसको जन्नत के बीच में महल अ़ता फ़रमाएगा।

मेरे दोस्तो! इसलिए हमें इक्रामे मुस्लिम की हक़ीक़त को हासिल करने के लिए भी तीन काम करने होंगे।

1. दावत 2. मश्क़ 3. दुआ

पहला काम : "दावत" इसके लिए दूसरों में दावत देकर इक्रामे मुस्लिम का शौक़ पैदा करना है, एक एक मुसलमान की क़ीमत समझानी है कि जब तक एक भी मुसलमान इस ज़मीन पर मौजूद है जब तक यह सूरज चांद और आसमान मौजूद रहेगा वरना यह सारी काइनात तोड़ फोड़ दी जायेगी। इसी के साथ हुज़ूर स० और सहाबा के अख़्लाक़, हमदर्दी और ईसार के वाक़िआत सुनाने हैं, यह दावत हमें इस लिए देनी है कि मेरे अख़्लाक़ ठीक हो जायें, मैं हुक़ूक़ का अदा करने वाला बन जाऊँ।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! आज उम्मत, उम्मत के हुक़ूक़ को मार रही है, बाप बेटे का हक़, बेटा बाप का हक़, माँ बेटे का हक़, बेटा माँ का हक़, उस्ताद शागिर्द का हक़, शागिर्द उस्ताद का हक़ यानी हर एक, एक दूसरे पर क़ाबिज़ है। हम इक्रामे मुस्लिम की दावत देंगे अपने अन्दर हुक़ूक़ुल इबाद की अदायगी के लिए।

दूसरा काम : "मश्क़" अल्लाह के रास्ते में निकल कर इक्रामे मुस्लिम की मश्क़ करना, ख़िदमत के ज़रीए से कि अपने साथियों की ख़ूब ख़िदमत करो। हर साथी की ख़िदमत करके अपने अन्दर तवाज़ो पैदा करो, अल्लाह की तरफ़ से जो तरबिय्यत होगी वह ख़िदमत करने से होगी।

मेरे दोस्तो! एक जमाअ़त निकली सहाबा किराम की उसमें

काम तक़्सीम हो गए कि यह बकरी ज़बह करेंगे यह गोश्त बनावेंगे पर हुज़ूर सल्ल० के ज़िम्मे ख़िदमत का कोई काम न मिला तो आपने सहाबा से पूछा मैं क्या करूँ? तो सहाबा कहने लगे कि आप रहने दीजिए, हम लोग सब कर लेंगे, तो आप स० ने फ़रमाया कि नहीं, मैं भी जंगल से लकड़ियां चुन कर लाऊँगा खाना पकाने के लिए, दोस्तो सारे नबियों के सरदार वह साथियों की ख़िदमत के लिए लकड़ियाँ चुन कर ला रहे हैं।

मेरे दोस्तो, हम जमाअ़त में जा तो रहे हैं पर हमारी कोई हैसियत नहीं जमाअ़त में निकल कर, जो अपने आपको मिटायेगा, अल्लाह उसे बनाएगा। ऐसा करने से इक्रामे मुस्लिम की मश्क़ होगी, कि ख़िदमत करने से तवाज़ो इख़्तियार करने से और छोटा बनने से हमारे लिए इक्रामे मुस्लिम की हक़ीक़त का हासिल करना अब दुआ़ के ज़रीए से पूरा हो जायेगा। इस लिए इन दोनों कामों को करने के बाद यानी इक्रामे मुस्लिम की दावत और उसकी मश्क़ इस तरह जिस तरह अ़र्ज़ की गई है, करने के बाद अब,

तीसरा काम : "दुआ़" कि अब रो-रो कर अल्लाह जल्ल शानुहू से हुज़ूर स० वाले अख़्लाक़ की हक़ीक़त को मांगना है।

अब पांचवां नम्बर इख़्लासे निय्यत

इख़्लासे नियत (5)

इख़्लास का मफ़हूम : अल्लाह तआ़ला के अवामिर (हुक्मों) को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए पूरा करना।

इख़्लास से क्या चाहा जा रहा है :

अल्लाह तआ़ला के अवामिर (हुक्मों) को हुज़ूर स० के तरीक़े पर इख़्तियार करने में अपनी नियत को सही रखना।

इख़्लास हम से क्या चाह रहा है:

इस नम्बर की हक़ीक़त हासिल करने के लिए भी तीन मेहनतें शर्त हैं।

1. इख़्लास की दावत 2. इख़्लास की मश्क़ 3. इख़्लास की दुआ़, मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! आ़लिम, सख़ी और शहीद जिनको सब से पहले जहन्नम में डाला जायेगा, ये बड़े बड़े आमाल वाले हैं, जिन्हें जहन्नम में सब से पहले डाला जायेगा। जहन्नम इन्हीं से दहकाई जायेगी, ये जहन्नम की चिपटियां हैं, ये जहन्नम के दहकाने का सामान हैं। ये बड़े-बड़े आमाल वाले सिर्फ़ इस वजह से कि इनकी नियत सही नहीं रह सकी।

अबू हुरैरह रज़ि० जो इस रिवायत के नक़ल करने वाले हैं, वह ख़ुद इस हदीस को बयान करते करते बेहोश हो जाया करते थे। सहाबा ईमान और आमाल में नमूना हैं, उस ईमान पर यह आमाल करके यह हाल कि बार बार की बेहोशी, इतना डर था इख़्लास का। इसी तरह एक बार यही हदीस एक ने हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि० को सुनाई तो यह हदीस सुनकर बेहोश हो गए, कितनी सख़्त हदीस है यह हम सब की इबरत के लिए।

इसलिए।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हर अ़मल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रज़ामन्दी का जज़्बा हो, किसी भी अ़मल से दुनिया के तलब या अपनी हैसियत बनाना मक़्सूद न हो, मेरे दोस्तो! अल्लाह पाक की रज़ामन्दी के लिए थोड़ा सा अ़मल भी बड़े-बड़े इनामात दिलवाएगा। मगर दावत की मेहनत यह पूरी करनी पड़ेगी। वरना इस के बग़ैर बड़े-बड़े अ़मल भी गिरफ़्त का अल्लाह की पकड़ का ज़रीया बनेंगे। इस लिए अपनी निय्यत को सही रखने के लिए इख़्लास की हक़ीक़त हासिल करनी पड़ेगी इस हक़ीक़त को हासिल करने के लिए भी तीन काम करने पड़ेंगे।

पहला काम : "दावत" कि दूसरों में दावत के ज़रीए से तस्ही-ए- निय्यत की फ़िक्र व शौक़ पैदा किया जाये, इसलिए कि हमारे अन्दर इख़्लास की हक़ीक़त नहीं है, इसकी हक़ीक़त हासिल करने के लिए मैं इसकी दावत दे रहा हूँ।

दूसरा काम : "मश्क़" कि अपने हर अ़मल से पहले और हर अ़मल के बीच में और हर अ़मल के ख़त्म पर, लेकिन नमाज़ में नमाज़ शुरू करने से पहले और नमाज़ के ख़तम पर सिर्फ़ दो बार और बाक़ी अ़मल में तीन बार निय्यत को सही रखने के लिए आसमान की तरफ़ मुंह करके या अपने दिल की तरफ़ देखकर अपनी ज़बान से यह कहें कि ऐ अल्लाह तेरी रज़ामन्दी के लिए मैं यह अ़मल करने जा रहा हूँ, या कर रहा हूँ या कर चुका हूँ तू इसे क़ुबूल कर ले, इस तरह इसकी मश्क़ करनी पड़ेगी।

क्योंकि, मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ से फ़ैस्ले

जो आते हैं वे निय्यत पर आते हैं, अ़मल पर नहीं अगर हम थोड़ा सा ग़ौर करें तो हमें इसका एहसास हो जायेगा कि हम बेनिय्यती से अ़मल कर रहे हैं बद निय्यती तो दूर की बात है। बद निय्यती से अ़मल तब करेंगे, जब बेनिय्यती दूर हो जाये, पर हम बेनिय्यती करने में मुब्तला हैं तभी तो अल्लाह की मदद हम से दूर है अल्लाह की मदद साथ करने के लिए निय्यत का सही करना ज़रूरी है, लेकिन दावत की मेहनत से छूट जाने की वजह से हमारे अन्दर के रिवाज में या रस्म में या आ़दत में आ गये पर सारे के सारे बेनिय्यती की वजह से या सही निय्यत के न होने की वजह से बर्बाद और ज़ाया हो रहे हैं। इस लिए इख़्लास की इन दोनों मेहनतों को करते हुए, अब

तीसरा काम : "दुआ़" कि हर अ़मल के पूरा होने पर अपनी निय्यत को नाक़िस क़रार देते हुए तौबा व इस्तिग़फ़ार करें और फिर रो-रो कर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से इख़्लास की हक़ीक़त को मांगें।

अब छटा नम्बर दावत व तब्लीग़

दावत व तब्लीग़ (6)

दावत व तब्लीग़ का मफ़हूम

अपने यक़ीन और अ़मल को दुरुस्त करने और सारे इन्सानों को सही यक़ीन पर लाने के लिए हुज़ूर स० के तरीक़-ए-मेहनत को सारे आ़लम में ज़िन्दा करने की कोशिश करना।

दावत व तब्लीग़ से क्या चाहा जा रहा है:

इस मेहनत को अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए, काम के आ़लमी तक़ाज़ों को अपनी जान और अपने माल के साथ पूरा करना।

दावत त तब्लीग़ हम से क्या चाह रही है :

इस नम्बर की हक़ीक़त हमें हासिल हो जाये इसके लिए भी तीन मेहनतें करनी हैं:-

1. दावत 2. मश्क़ 3. दुआ़

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! आज उम्मत में किसी हद तक इन्फ़िरादी आमाल का रिवाज है, यानी आमाल की शक्ल तो है पर हक़ीक़त निकली हुई है। इसलिए कि उम्मत को अपना सरमाया जो अल्लाह के फ़ज़्ल से मिला है, यह अपने ईमान, नमाज़, इल्म, ज़िक्र, इख़्लास और दावत की ज़िम्मेदारी जो इसे मिली थी यह उम्मत अपने इस सरमाए को लिए बैठी है, जिसकी वजह से उम्मत की अक्सरियत में कुफ़्र और शिर्क उम्मत की अक्सरियत में फ़िस्क़ व फ़ुजूर उम्मत की अक्सरियत में जहालत, ग़फ़लत, बद अख़्लाक़ी, दिखावा और चीज़ों और शक्लों पर मेहनत करने में ऐसा फंसी हुई है कि उम्मत अपनी ज़िम्मेदारी से हाथ धो बैठी जिस मेहनत के करने पर ख़ुद इसको

ईमान और आमाल की हक़ीक़त से नवाज़ा जाता और दूसरों की हिदायत मिलने का यह सबब बनती।

मेरे दोस्तो! हुज़ूर स० के ख़त्मे नुबुव्वत के सद्क़े और तुफ़ैल में इसे दावत वाली मेहनत मिली हुई है। जिस मेहनत के करने पर इन्सानियत अपने बनाने वाले और अपने पालने वाले को पहचान कर उस से अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ने के लिए बेक़रार और बेचैन रहती है सहाबा किराम की तरह।

इस लिए अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के तर्ज़ पर अपनी जान और माल को झोंक देना और जिन में मेहनत क़रना है, उनसे किसी चीज़ की तलब न करना। इस के लिए हिजरत भी करना और नुसरत भी करना।

जो ज़मीन वालों पर रहम करता है, आसमानों वाला उस पर रहम करता है जो दूसरों का तअ़ल्लुक़ अल्लाह से जोड़ने के लिए ईमान और नेक आमाल की मेहनत करेगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उसको, सब से पहले ईमान और नेक आमल की हक़ीक़तों से नवाज़ कर, अपना तअ़ल्लुक़ अ़ता फ़रमायेंगे।

इस रास्ते में एक सुब्ह या एक शाम का निकलना पूरी दुनिया और जो कुछ इस दुनिया में है, उन सब से बेहतर है।

इस रास्ते में हर माल के ख़र्च पर और अल्लाह के हर ज़िक्र और तस्बीह और हर नमाज़ का भाव सात लाख गुना हो जाता है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इस रास्ते में मेहनत करने वालों की दुआ़यें बनी इस्राईल के नबियों की दुआ़ओं की तरह क़ुबूल होती हैं यानी जिस तरह उनकी दुआ़ओं पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत को इस्तिमाल फ़रमा कर,

नबियों और उनकी क़ौमों को कामियाब करके दिखलाया है और बातिल ख़ाकों को तोड़ फोड़ कर तहस नहस करके दिखलाया है, इसी तरह इस मेहनत के करने वालों की दुआओं पर अल्लाह पाक ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत के मुज़ाहरे करके दिखलायेंगे, जब आलमी बुनियाद पर मेहनत की जायेगी, तो तमाम आलम के इन्सानों के दिलों में इस मेहनत के असर से तब्दीलियां लायेंगे इस दावत व तब्लीग़ की हक़ीक़त को हासिल करने के लिए भी तीन मेहनतें करनी पड़ेंगी।

पहला काम : "दावत" के ज़रीए उम्मत के एक-एक फ़र्द को इस मेहनत के करने के लिए आमादा करना है। हर उम्मती को उसकी ज़िम्मेदारी समझानी है कि अल्लाह की क़ुदरत दावत के साथ किस तरह हो जाती है इसके लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम और सहाबा किराम के साथ जो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अल्लाह की क़ुदरत मुशाहदे में आई है उन वाक़िआत को सुनाना है।

दूसरा काम : "मश्क़" ख़ुद अपने आप को क़ुरबानी की शक्लों यानी हिजरत और नुसरत वाले आमाल दावत में लगाना हैं। सहाबा किराम हर हाल में निकले हैं, इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने। निकाह के वक़्त, रुख़्सती के वक़्त, विलादत के मौक़े पर वफ़ात के मौक़े पर सर्दी में, गर्मी में, भूक में, फ़ाक़े में, सेहत में, बीमारी में, क़ुव्वत में, कम्ज़ोरी में, जवानी में, बुढ़ापे में हर तक़ाज़े पर, उनके साथ हालात कैसे भी हों पर पूरी ज़िम्मेदारी के साथ इस मेहनत को करते थे। इस की हमें भी मश्क़ करनी है। सहाबा के तर्ज़ पर, इसके साथ तीसरा काम जो इस सारी मेहनत की जान है यानी "दुआ",

तीसरा काम : "दुआ" अल्लाह पाक से रो-रो कर इस आली मेहनत को आलम में करने के लिए अपने आपको क़ुबूल करवाना।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इन चीज़ों से मुनासबत पैदा करने के लिए हर शख़्स से ख़्वाह वह किसी भी शोबे से तअ़ल्लुक़ रखता हो। चार माह का मुतालबा किया जाये। अपने मशाग़िल, साज़ व सामान और घर बार से निकल कर इन चीज़ों की दावत देते हुए और ख़ुद अपने ऊपर मेहनत करते हुए मुल्क ब मुल्क, क़ौम ब क़ौम, क़रिया ब क़रिया फिरेंगे।

हुज़ूर स० ने हर उम्मती को मस्जिद वाला बनाया था। मस्जिद के कुछ मख़्सूस आमाल दिए थे। इन आमाल से मुसलमानों की ज़िन्दगी में इम्तियाज़ था। मस्जिद में अल्लाह की बड़ाई की, ईमान की, आख़िरत की बातें होती थीं। आमाल से ज़िन्दगी बनने की बातें होती थीं। आमाल के ठीक करने के लिए तालीमें होती थीं। ईमान और नेक आमल की दावत के लिए मुल्कों और इलाक़ों में जाने की तश्कीलें होती थीं। यहां तआ़वुन, ईसार और हमदर्दियों के आमाल होते थे। आज हम धोके में पड़ गये कि हमारे पैसे से मस्जिद चलती है। मस्जिद आमाल से ख़ाली हो गई और चीज़ों से भर गई। आप स० ने मस्जिद को बाज़ार वालों के ताबे नहीं किया। हुज़ूर स० की मस्जिद में न बिजली थी न पानी था न ग़ुस्ल ख़ाने थे, ख़र्च की कोई शक्ल न थी मस्जिद में आदमी आकर दाई बनता था। मुअ़ल्लिम बनता था। ज़ाकिर बनता था। नमाज़ी बनता था। मुतीअ़ बनता था। मुत्तक़ी बनता था। ज़ाहिद और ख़लीक़ बनता था। बाहर जाकर ठीक ज़िन्दगी गुज़ारता था। मस्जिद बाज़ार वालों को चलाती

थी। इन चार माह में हर जगह जाकर मस्जिदों में हर उम्मती को लाने की मेहनत करें। मस्जिद वाले आमाल को सीखते हुए दूसरों को यह मेहनत सीखने के लिए 3 चिल्लों के वास्ते आमादा करें। आप हज़रात 3 चिल्लों की दावत ख़ूब जम कर दें इसमें बिल्कुल न घबरायें इसके बग़ैर ज़िन्दगियों के रुख़ न बदलेंगे। जिन अहबाब ने ख़ुद अभी तीन चिल्ले न दिए हों वे भी इस निय्यत से ख़ूब जम कर दावत दें कि अल्लाह पाक इसके लिए हमें क़ुबूल फ़रमा लें।

जब मुहल्लों की मस्जिद में हफ़्तों के दो गश्तों के ज़रीए फ़ी घर एक आदमी 3 चिल्लों के लिए आवाज़ लग रही होगी, तालीमों और गश्त पर अहबाब जुड़ रहे होंगे। हर मस्जिद से 3 दिन की जमाअ़तें निकालने की कोशिश हो रही होगी तो शबे जुमा का इज्तिमा सही तरीक़े पर होगा और काम के बढ़ने की शक्लें बनेंगी। जुमेरात को अ़स्र के वक़्त से मुहल्ले की मस्जिद के अहबाब अपनी अपनी जमाअ़तों की शक्लों में बिस्तर और खाना साथ लेकर इज्तिमा की जगह पर पहुंचें। मश्वरे से ऐसे साथी से उ़मूमी बात कराई जाये जो मेहनत के मैदान में हो और जिन की तबीअ़त पर काम के तक़ाज़े ग़ालिब हों बहुत ही फ़िक्र व एहतिमाम से तशकीलें की जायें। अगर औक़ाते उसूल न हों तो रात को भी मेहनत की जाये रो-रो कर मांगा जाये, सुब्ह को फिर जमाअ़तों की तश्कील करें हिदायत दे कर जमाअ़तें रवाना की जायें, तीन दिन की मुहल्लों से तैयार होकर आई जमाअ़तों के निकलने का रुख़ पड़ना चाहिए। अगर शबे जुमा में ख़ुदा नख़्वास्ता सब तक़ाज़े पूरे न हो सकें तो सारे हफ़्ते अपने मुहल्लों में फिर इसके लिए कोशिश की जाये और आइन्दा शबे जुमा में

मुहल्लों से तक़ाज़ों के लिए लोगों को तैयार करके लाया जाये।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! आज मेहनत ईमान के बनाने से हटी हुई है। आज दुनिया मेहनत का मैदान बनी हुई है, कि चीज़ें बना लो तो कामियाब हो जाओगे और अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं कि कलिमा बना लो कामियाब हो जाओगे, "क़द अफ़्लह मुअ्मिनून" कि ईमान वाले सौ फ़ीसद कामियाब हो गए।

इस वक़्त दो मेहनतें दुनिया में हो रही हैं। 1.एक मेहनत नबियों वाली, और 2. एक मेहनत नबियों के ख़िलाफ़ "नबियों वाली मेहनत क्या है? यूँ कहें कि अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम वाली मेहनत यह है कि जितने हालात आवें उनको आमल से हल कराओ, आमाल से बदलो, और दुनिया की जो मेहनत है कि जितने हालात आवें उनको चीज़ों से बदलो, कि ख़ौफ़ आ रहा है तो हथियार बनाओ, बीमारी आ रही है तो दवायें बनाओ,

यह इन्सान इतना बे अक़्ल और इतना नादान है कि छोटी छोटी चीज़ें बना कर अल्लाह तआ़ला के बड़े-बड़े निज़ाम से टक्कर ले रहा है कि हमने हालात का इन्तिज़ाम कर लिया।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जो अल्लाह तआ़ला को नहीं पहचानते वह ये छोटे-छोटे नक़्शे बनाकर इन हालात से बेचारे बचना चाहते हैं कि हमने इन हालात को रोकने का इन्तिज़ाम कर लिया। क्योंकि यह अल्लाह तआ़ला के ग़ैबी निज़ाम से बेचारा ग़ाफ़िल है और फिर जब हालात बिगड़ते हैं, तो फिर यह इन हालात की निस्बत चीज़ों की तरफ़ करता है। यह चीज़ों की तरफ़ निस्बत करना बेईमानी की बुनियाद है कि ज़ल्ज़लें आवेंगे तो यूं कहेगा कि माहिरे आराज़ी को पकड़ो यानी ज़मीन के माहिरीन से पता करो कि ये ज़ल्ज़ले क्यों आये। और क़हत

साली (सूखा) आवेगी तो यूं कहेगा कि साइंस वालों से पूछो कि सूखा क्यों पड़ा और बीमारी आवेगी तो यूं कहेगा कि वज़ीरे सेहत से पूछो कि यह बीमारी कैसे आई और अगर ईमान होगा तो यूं कहेगा कि ज़ल्ज़ले जब आया करते हैं जब ज़िना हुआ करता है। और सूखा (क़हतसाली) जब आया करता है जब ताजिर नाप तौल में कमी करते हैं। अगर ईमान होता तो इन हालात को अपनी बद आमालियों से जोड़ता, लेकिन ईमान नहीं है इसलिए हालात को हालात से जोड़ रहा है और हालात को चीज़ों से जोड़ रहा है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हालात का चीज़ों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है कहीं से कहीं तक भी चीज़ों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। न ऐसा कभी हुआ है न कभी होगा, अल्लाह तआ़ला ने बड़े-बड़े नक़्शे वालों के नक़्शे तोड़े हैं। जो नक़्शे आज मौजूद हैं, वे क़ौमे सबा में बाग़ात के नक़्शे, वे क़ौम समूद में कारख़ानों के नक़्शे, क़ौमे नूह में अक्सरियत के नक़्शे अल्लाह तआ़ला ने वे सारे नक़्शे पहले तोड़े हैं, क़ुरआन उन सारे नक़्शों के टूटने और उनके ग़र्क़ होने और उनके ज़मीन में धंसने और उनकी बस्तियों को आसमान पर उठाकर ले जाकर पलटने इन सारे वाक़िआत से क़ुरआन भरा हुआ है।

अल्लाह तआ़ला ने कभी फ़ैसला नहीं किया चीज़ों पर और मुल्क व माल पर बल्कि अल्लाह ने जो ख़ैर का फ़ैसला किया है फ़लाह या कामियाबी का फ़ैसला किया है, वह फ़ैसला इन्सान के जिस्म से निकलने वाले ईमान वाले आमाल पर किया है कि अगर अल्लाह तआ़ला से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़ैसले नाज़िल कराना चाहते हो तो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के

मुताबिक़ अपने जिस्म से ईमान वाले आमाल ज़ाहिर करो। फिर उसके मुताबिक़ फ़ैसले होंगे, लेकिन यह इन्सान अपनी आँखों पर अस्बाब की पट्टी बाँध कर इस तरह चलता है कि जितने इसके हालात बिगड़ते हैं यह चीज़ों पर मेहनत को बढ़ा देता है कि तिजारत में हालात आए तो तिजारत की मेहनत को बढ़ायेगा और ज़मीनदारों पर हालात आए तो ज़मीनदारी की मेहनत को बढ़ाएगा और मुलाज़मत पर हालात आवेंगे, तो यूं कहेगा कि इस से अच्छी कोई नौकरी तलाश कर लूं। तो हाल को हाल से बदलना चाहेगा, और इसमें चलता रहेगा और आगे बढ़ता रहेगा, यहां तक कि आगे बढ़ते बढ़ते यह वहां पहुंच जायेगा जहां से वापसी का वक़्त नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने इसको क़ुरआन पाक में ख़ूब बयान किया है।

"وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً"

कि जो अपने आमालों को बरबाद कर लेते हैं, अल्लाह की ज़ाते आ़ली को न पहचानने की वजह से, इनकी मेहनत, इनकी मशक़्क़त वह सारी बेकार जाती है। (क़ुरआन)

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हर मेहनत करने वाला कामियाब नहीं है। मेहनत दुनिया में बहुत हो रही है। लेकिन हर मेहनत करने वाला कामियाब नहीं है, वह मेहनत करने वाला कामियाब है। जिसकी मेहनत अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की मेहनत से मेल खाती हो।

"هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ● وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ●"
(क़ुरआन)

अल्लाह तआ़ला पूछ रहे हैं, हुज़ूर स० से कि ऐ नबी जी,

आपको मालूम है कि एक आदमी बहुत मेहनत करने वाला और उसके चेहरे पर उसकी मेहनत के आसार, कि चेहरा उसका थका हुआ, लेकिन यह अपनी सारी मेहनत के बावुजूद, जहन्नम के अन्दर डाला जायेगा।

मेहनत हो सही हो इन्शाअल्लाह मक़बूल होगी, जिनकी मेहनत सही रास्ते से हटी हुई होगी, अल्लाह तआला के यहां सही इस्लाम जिसको इस्लाम कहा गया है कि मदीना वालों जैसा इस्लाम कि जो इसके अलावा लेकर आएगा, अल्लाह तआला के यहां क़ुबूल नहीं होगा। चाहे जितना अपने आप को थाकाया हो।

इसलिए मेहनत के शुरू करने से हपले मेहनत की सही तहक़ीक़ दुनिया से जाने से पहले हो जाये, वरना मेहनतें करने वाले, अपनी मेहनतों का नुक़्सान या दुनिया में देख लेंगे या आख़िरत में देखेंगे। जहां मेहनत के सही करने का वक़्त नहीं होगा। वहां उनकी मेहनतों को दिखलाया जायेगा कि यह तुम्हारी मेहनतें हैं। इस वक़्त उम्मत अपनी मुलाज़मत अपनी तिजारत अपनी काश्तकारी हर ऐतिबार से उम्मत ख़सारे में पड़ी हुई है।

यह बात नहीं कि आमाल से सिर्फ़ आख़िरत बनती हो, बल्कि अल्लाह तआला आमाल पर नक़द दुनिया बनाते हैं, और आख़िरत उधार।

"مَنْ عَمِلَ صَالِحاً مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً"

(क़ुरआन)

कि हम ईमान और नेक आमाल पर दुनिया बनाते हैं इनकी, कि ख़ुशगवार ज़िन्दगी गुज़ारो। आज तो सारा आलम इस ग़लत फ़हमी के अन्दर है कि जो हथियार बनाले वह कामियाब जो उस

से बड़ा बम बना ले वह उस से बड़ा कामियाब। कैसी अक़्ल मारी गई और कैसी उल्टी सोच है। अगर यूं कहता सारा आलम कि कोई ज़रूरत नहीं हथियार बनाने की, इन्सान अगर इन्सान बन कर जिए, तो हथियार किस के लिए बनावेगा।

आज ग़लत मेहनतों की वजहों से एक दूसरे को मारने के लिए, एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए। इस पर मेहनत हो रही है और जो इन मेहनतों में लगे हुए हैं वे अपनी कामियाबी का नारा लगा रहे हैं कि हम कामियाब हो गए। यूं कहें कि यह इन्सान अगर ख़ुद अपने आपको बना ले और फिर इसे हथियार की ज़रूरत पेश आ जाये।

तो अल्लाह दरख़्त की टहनी को तलवार बना दें जैसे "उहुद" में अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० की टहनी को तलवार बनाया है कि जब ज़रूरत पेश आएगी तब देखी जायेगी। तो अपने आपको बना ले। सारा निज़ामे अ़मल तेरे लिए पाबन्द कर देंगे और तेरे लिए मुसख़्ख़र कर देंगे।

इस लिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! मेहनत सही रुख़ की हो, मेहनतें बहुत हो रही हैं और हर एक को दावा है, कि हमारी मेहनत सही है। ग़लत मेहनत करने वालों को अपनी मेहनत पर दावा है, कि हम जो कर रहे हैं, सही कर रहे हैं। मेरे दोस्तो क़ुरआन बिल्कुल वाज़ेह है "ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ"

(क़ुरआन) इस किताब में कोई शक नहीं है। इस किताब में लिखा हुआ है

"كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ"

(क़ुरआन)

अल्लाह तआला साफ़-साफ़ बतला रहे हैं कि तुम सब से बेहतरीन उम्मत हो, किस लिए भेजे गए हो दुनिया में, अल्लाह ने तुम्हें क्यों बनाया है? अल्लाह ने दुनिया में तुम्हें क्यों भेजा है? तुम्हारे भेजे जाने का क्या मक़्सद है?

"تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ"

(क़ुरआन) कि तुम्हें लोगों की नफ़ा रसानी के लिए भेजा गया है। वह क्या फ़ायदा है, कि हम कपड़ा बना रहे हैं, हम हथियार बना रहे हैं, हम दवायें बना रहे हैं, हम भी तो लोगों को फ़ायदा पहुंचा रहे हैं। कि किसी से कहो कि आ जाओ गश्त कर लें, तो कहता है कि मियां क्या हम दुकान पर काम नहीं कर रहे हैं। मियां ज़रा 4 महीने लगा लो, तो कहते हैं कि क्या हम काम नहीं कर रहे हैं, क्या हम बेकार हैं। क्या इसी को काम कहते हैं, कि मेरी ज़ात से फ़ायदा इन्सान को पहुंच जाये।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इस में तो इन्सान होना भी शर्त नहीं है। इतना फ़ायदा तो जानवर से भी पहुंचता है और फिर यह इन्सान भी रीटायर्ड हो जाता है जैसे जानवर रिटायर्ड होता है कि दूध न देने वाले जानवर को क़साई के हवाले किया कि लो जी तुम इसको काटो।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जब इन्सान भी यह समझ लेता है कि मेरी ज़ात से जिसको जो फ़ायदा पहुंच रहा है, मैं इसी के लिए पैदा किया था। ख़ुदा की क़सम ऐसे इन्सान भी, जब इनकी ज़ात से दूसरों को फ़ायदा पहुंचना ख़तम हो जाता है। ये भी ग़ैरों के इसी तरह हवाले हो जाते हैं, फिर ये ज़ाए होते हैं।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हमें अपने सरमाये को जो अल्लाह की

तरफ़ से मिला हुआ है, उसको नबियों वाली मेहनत पर इस्तिमाल करना है। वह क्या मेहनत है, वह मेहनत है

“تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ”

(क़ुरआन) भलाई का हुक्म करना बुराई से रोकना और अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन रखना, (सिर्फ़ इल्म नहीं कि हाँ, अल्लाह की ज़ात के बारे में मालूम है) यह इस उम्मत का काम है, यह इस उम्मत का मक़्सदे हयात है इसी काम के लिए इस उम्मत को भेजा गया है। लेकिन, यह जो दावत व तब्लीग़ का काम हो रहा है, अभी हमारी इस काम के बारे में मुख़्तलिफ़ राय हैं। मुख़्तलिफ़ ख़्यालात हैं। कोई यूं कहता है कि भला काम है, अच्छे लोग हैं तो दोस्तो भलाई के काम तो बहुत से हैं, कि चाहे तब्लीग़ कर लो या किसी यतीम के सर पर हाथ फेद दो यह भी भलाई का काम है। किसी नंगे को कपड़ा पहना दो यह भी भलाई का काम है, किसी भूके को खाना खिला दो, यतीम ख़ाने बनवा दो, मस्जिद बना दो, यह भी भलाई के काम हैं। भलाई के काम तो बहुत से हैं करने के।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जिस तरह एक उम्मती बहैसियत कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह के इक़रार करने और अपने आपको अल्लाह का बन्दा कहने और अपने आपको हुज़ूर स० का उम्मती कहने के ऐतिबार से, जिस तरह यह है। यूं कहें कि इसके ज़िम्मे नुबुव्वत वाला काम है। सिर्फ़ इतना कह देना कि मियां यह चन्द लोगों के करने का काम है। या किसी जमाअ़त का काम है, जिसने कलिमा ला इलाह इल्लल्लाह कहा है उसके ज़िम्मे दावत इलल्लाह की मेहनत है। अल्लाह के बन्दों को

अल्लाह की ज़ात की तरफ़ बुलाना, अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ कराना। बहैसियत बन्दा होने और बहैसियत उम्मती होने के इसके ज़िम्मे दावत इलल्लाह की यह मेहनत है।

यह मौलाना इलयास रह० का काम नहीं है यह नुबुव्वत वाला काम है। जो क़यामत तक करने के लिए इस उम्मत को दिया गया है। यह "كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ"

नबी से नहीं कहा जा रहा है, बल्कि यह इस उम्मत से कहा जा रहा है उम्मते मौजूदा से कि यह तुम्हारा काम है तमाम अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की मेहनत का ख़ुलासा कि तमाम अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की ज़ात से जोड़ना।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जितना ख़ुदा का निज़ाम फैला हुआ है, ज़मीन और आसमान के दरमियान इस सब से फ़ायदा उठाने का रास्ता ही दावत वाली मेहनत है। अगर एक इन्सान अल्लाह के ग़ैबी ख़ज़ाने से बारिश का तालिब है तो बारिश, अगर सेहत का तालिब है तो सेहत, अगर अमन का तालिब है तो अमन, जो कुछ चाहेगा अल्लाह के ख़ज़ानों से वह दावत की मेहनत के बग़ैर ख़ुदा के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठा ही नहीं सकता।

इस लिए कि अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने अपने ख़ज़ाने दिखाए हैं, और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपने सारे ख़ज़ानों की सैर कराई है, और यह कह दिया, कि जो इन ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाना चाहे, तो ये रास्ते इख़्तियार करे।

1.एक रास्ता है अल्लाह तआ़ला के ख़ज़ानों से काइनात के ज़रीए फ़ायदा हासिल करने का और 2. एक रास्ता है अल्लाह के ख़ज़ानों से मुहम्मद स० के ज़रीए से फ़ायदा हासिल करने

का। मुहम्मद स० के ज़रीए से फ़ायदा हासिल करने का रास्ता "दावत" है और इस के अलावा जितने रास्ते हैं वे सारे के सारे आम हैं। उस में तो मुसलमान होना भी शर्त नहीं है। अल्लाह के ख़ज़ानों से उम्मत दावत की मेहनत को छोड़ कर फ़ायदा नहीं उठा सकती। क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने ख़ज़ाने नबियों पर खोले हुए हैं। और वे अल्लाह तआला की तरफ़ से अल्लाह के ख़ज़ानों के वादे लेकर आते हैं। अल्लाह ने जो कुछ बनाया है, यह सिर्फ़ इन्सान के लिए बनाया है। जो कुछ यहां बनाया है यहां, और जो कुछ आख़िरत में बनाया है वहां ये सब कुछ उन के लिए है जो चार काम करें।

क़ुरआन यूं कहता है कि जो चार काम करे वह ख़सारे से निकलेगा चार काम, देखो चार काम अर्ज़ करूंगा दो काम नहीं, बल्कि चार काम हैं। इनको अच्छी तरह गिनों उंगिलयों पर फिर आज से यह तय करो कि ये चारों काम करने हैं:-

"وَالْعَصْرِ ○ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝"

1. "ईमान" यह शर्त है कि बग़ैर ईमान के सारी मेहनतें बेकार हैं।

2. "नेक आमाल" कि बग़ैर नेक आमाल के कामियाबी का कोई रास्ता नहीं है। 3. "तवासौ बिलहक़" 4. तवासौ बिस्सब्र"

ये चार काम हैं। ईमान तो हम ने सुन लिया पर ईमान सुनने के लिए नहीं है सीखने के लिए है। क्योंकि सहाबा किराम फ़रमाते हैं "तअ़ल्लमनल ईमान" हमने ईमान को सीखा है। यह ईमान नहीं है कि आप यहां सुन रहे हैं और हम सुना रहे हैं। इसे

ईमान नहीं कहते।

एक ग़ैर ईमान वाला ईमान पर तक़रीर कर सकता है, यह कोई मुश्किल नहीं है। लिख कर दे दो तब भी और सिखला दो तब भी वह ईमान पर तक़रीर कर लेगा। इस को ईमान नहीं कहते, बल्कि ईमान तो एक मेहनत का नाम है।

ईमान और नेक आमाल दो चीज़ें ये और दो चीज़ें तवासौ बिल हक़ और तवासौ बिस्सब्र, उम्मत इसको भूले हुए है। यह उम्मत, उम्मत बन नहीं सकती और किसी लाइन में कामियाब हो नहीं सकती, न दुनिया के ऐतिबार से न आख़िरत के ऐतिबार से न दुनिया के ख़सारे से निकलेगी न आख़िरत के ख़सारे से निकलेगी, जब तक चार काम बराबर के न करे।

1.ईमान 2. नेक आमाल 3. तवासौ बिल हक़ 4. तवासौ बिस्सब्र।

यह तवासौ बिल हक़ और तवासौ बिस्सब्र क्या है इसको समझना है। जिस किसी ने एक मर्तबा भी "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा है और अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन रखता है, अल्लाह को अल्लाह समझता है। उसको पैदा करने वाला, उसको बनाने वाला, मारने वाला, जिलाने वाला, क़यामत में दोबारा उठाने वाला समझता है। उसके ज़िम्मे है कि एक एक उम्मती को ईमान की दावत दे, यह है "तवासौ बिल हक़" क़ुरआन साफ़-साफ़ कह रहा है, हमारी बात नहीं है यह, क़ुरआन की बात है जिस पर हम सब ईमान लाए हैं, क़ुरआन कहता है कि ख़सारे से तब निकलोगे जब ईमान और आमाल के साथ तवासौ बिल हक़ होगा, कि एक-एक उम्मती को ईमान पर लाओ। वह कैसे,

कि वह ताजिरों से जाकर यह कहेगा, कि तिजारत में नफ़ा नहीं, नफ़ा अल्लाह की ज़ात में है। नफ़ा अल्लाह ने अपनी क़ुदरत में रखा है। काश्त कार से कहेगा कि ज़मीन से फ़स्ल नहीं होती, फ़स्ल अल्लाह के उगाने से उगती है। हाकिम से यह कहेगा कि तेरी हुकूमत से कुछ नहीं होता, अमन का तअ़ल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से है, हिफ़ाज़त का तअ़ल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से है। ज़िन्दगी और मौत, तो मौत तुम जहां भी होगे वहां पर तुम्हें रोक लेगी, तुम अपनी हिफ़ाज़त के नक़्शों में हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। तुम अपनी मालदारी के नक़्शे में पल नहीं सकते तुम अपनी सेहत के नक़्शों में बीमारी से नजात नहीं पा सकते कि एक-एक उम्मती के पास जाकर अल्लाह की ज़ाते आ़ली का तआ़रुफ़ कराना कि अल्लाह के ध्यान के साथ चलना और अल्लाह की ज़ात से होने के यक़ीन पर लाना।

अभी तो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जितना अल्लाह की किब्रियाई को बोला जा रहा है, वह तो अ़मलों में बोला जा रहा है।

1.कि नमाज़ पढ़ी "अल्लाहु अक्बर" कह दिया।

2.और सूरत फ़ातिहा पढ़ी तो "अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन" कह दिया, और इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम कह दिया। यह नमाज़ में बोला जाना मेहनत नहीं है। मेहनत अलग चीज़ है, अ़मल अलग चीज़ है मेहनत से अ़मल ज़िन्दा होंगे।

1. एक इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम" का अ़मल है जो नमाज़ में है, और एक इसकी मेहनत है जो नमाज़ से बाहर है।

2. एक इय्या-क नअ़बुदु का अ़मल है एक इय्या-क नअ़बुदु की मेहनत है।

3. एक इय्या-क नस्तईन" का अ़मल है

एक इय्या-क नस्तईन की मेहनत है।

मैं अ़र्ज़ कर रहा हूं मेहनत को। ईमान, नेक आमाल, तवासौ बिल हक़ और तवासौ बिस्सब्र यह मेहनत है। कि एक एक उम्मती को अल्लाह से होने के यक़ीन पर लाना। ईमान को लिखकर भेज देना मेहनत नहीं है, तक़रीर कर देना कोई मेहनत नहीं है। कि मैं उम्मत की हिदायत की रोज़ दुआ़ तो करता ही हूं। यह कोई मेहनत नहीं है।

फिर मेहनत क्या है? मेहनत इसे कहते हैं कि यह नबियों की तरह एक-एक के पास जावे और उन से अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ करवाए जिस तरह जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक-एक के पास जाते थे कि मेरा साथ कौन देगा? मुझे कौन ठिकाना देगा? मेरी कौन रहबरी करेगा? एक-एक क़बीले पर एक-एक दुकान पर और मक्के में जो नुमाइश लगती थी हज के मौक़े पर एक-एक के पास जाते और अल्लाह की ज़ाते आ़ली का तआ़रुफ़ कराते। यह काम है हमारा। उम्मत अल्लाह को भूली हुई है, इनमें से एक-एक के पास जाकर अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ कराना यह मेहनत है, ऐसा करने को मेहनत कहते हैं। इस तआ़रुफ़ पर जो अल्लाह की ज़ाते आ़ली को पहचानेगा और समझेगा और अल्लाह की ज़ात पर ईमान लावेगा और अल्लाह के ग़ैर से न होने का यक़ीन जो इसके दिल में उतरेगा तब इसके आमाल बनेंगे।

सबसे पहली ज़िम्मेदारी उम्मत पर तवासौ बिल हक़ की है कि एक-एक उम्मती को ईमान पर लाओ और एक-एक उम्मती को तवासौ बिस्सब्र पर लाओ यानी अह्‌कामात पर लाओ। यानी ईमान की दावत और आमाल की दावत, यह दो काम करने होंगे

हर उम्मती को। दो काम दूसरों के लिए तवासौ बिल हक़ और तवासौ बिस्सब्र, और दो काम अपने लिए ईमान और नेक आमाल। दो काम इसके ज़ाती कि हर एक का ईमान बन रहा हो और हर एक के आमाल बन रहे हों। और दो कामों की इस पर पूरी उम्मत की ज़िम्मेदारी। उम्मत इस ज़िम्मेदारी से हाथ धो बैठी है मेरी नमाज़, मेरा रोज़ा, मेरी ज़कात, मेरा हज, मेरे मुआमलात, मेरा अख़्लाक़, मेरा मुआशरा, मेरी क़ौम, मेरा क़बीला, मेरे दोस्तो! ख़ुदा की क़सम उम्मत का इस बुनियाद पर सोचना भी जुर्म है। इसको तो इसकी इजाज़त ही नहीं है, कि यह मुल्क की, या क़बीले की, या सिर्फ़ अपनी बस्ती और शहर की बुनियाद पर या सूबे की बुनियाद पर यह सोचे, उसको तो इसकी इजाज़त ही नहीं है। बल्कि जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहां तो सुहैल रूमी, बिलाल हब्शी, यानी कोई काला कोई गोरा कोई सुर्ख़ कोई मटियाला कोई किसी ज़बान का कोई किसी क़बीले का आप स० से तो दावत देने का अल्लाह तआला ने ऐसा नज़्म बनवाया कि

"उतर कर "हिरा" से सूए क़ौम आया
और एक नुस्ख़ा-ए-कीमिया साथ लाया"

वह नुस्ख़ा-ए-कीमिया क्या था? यूं कहें कि वह नुस्ख़ा-ए-कीमिया यह था, कि उम्मत को ऐसा काम दिया है कि उम्मत हमेशा इस कीमियाई नुस्ख़े से फ़ायदा उठाती रहे। और वह क्या सूरत बनी, कि जिस वक़्त आप ग़ारे हिरा से तशरीफ़ लाए यानी जिस वक़्त अल्लाह की तरफ़ से नुबुव्वत की ज़िम्मेदारी आप पर डाली गई। आप पर पहले ही दिन उम्मत की तीनों क़िस्मों को आपके सामने पेश कर दिया गया दावत देने के लिए। पूरी

उम्मत, इन्सानियत इन्हीं तीन क़िस्मों पर मुश्तमिल है।

1. मर्द 2. औरत 3. बच्चा

सारी दुनिया में इन्सानियत की यही तीन क़िस्में हैं सिर्फ़। जिस वक़्त जनाब रसूलुल्लाह स० "हिरा" से तशरीफ़ लाए उम्मत की तरफ़, आपने एक वक़्त में तीनों को दावत दी है। औरत, मर्द और बच्चा, तीनों एक साथ जमा हो गए।

1.मर्दों में अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० 2.औरतों में हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि० और 3.बच्चों में अ़ली इबने अबू तालिब रज़ि० इन तीनों को आपने एक वक़्त में दावत दी, यह नहीं कि बच्चों को बाद में और बड़ों को पहले। या मर्दों को पहले दी हो और औ़रतों को बाद में, तीनों को एक वक़्त में दावत दी है। उम्मत को तक़सीम नहीं किया है। यह आपका पहला दिन है और आख़िरी दिन जब आप दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे थे, हज़रत उसामा रज़ि० के लशकर की रवानगी यह बतला रही है कि काम उम्मत के हवाले करके जा रहे हैं। जिस वक़्त आप दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे थे, आप ने उम्मत को तीन चीज़ें दी हैं और तीनों चीज़ों में आपने उम्मत को सब कुछ दे दिया हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूक़ुल इबाद और दावत की अज़ीम ज़िम्मेदारी। जो नबियों से नबियों में हर ज़माने में मुन्तक़िल हो रही थी।

यह नूरे नुबुव्वत और यह नूरे हिदायत और यह दावत की ज़िम्मेदारी और यह दीन की अमानत जो नबियों से नबियों में मुन्तक़िल हो रही थी, एक नबी जाते दूसरे नबी काम करने के लिए आ जाते, फिर वह जाते उनके बाद तीसरे नबी आ जाते कि नबियों से नबियों में मुन्तक़िल हो रही थी दावत। यहां तक कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ ले आए। फिर आप से दावत

की मेहनत सौ फ़ीसद उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल हुई। कि जो काम नुबुव्वत का वही काम उम्मत का। तो जब आप दुनिया से तशरीफ़ ले जा रहे थे, उस वक़्त आप उम्मत को तीन हुक्म देकर दुनिया से तशरीफ़ ले गए हैं। और इन तीनों चीज़ों के अन्दर जनाब रसूलुल्लाह स० ने हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूक़ुल इबाद और दावत की मेहनत। ये तीनों चीज़ें आपने उम्मत को सौंपी हैं।

1. "अस्सलात---अस्सलात" 2. "वमा म-ल कत ऐमानुकुम"

3. इन्फ़िरू जैश उसामा" ये तीन बातें आपसे साबित हैं, कि आप वफ़ात के वक़्त ये तीन बातें फ़रमा गये।

1. "अस्सलात-अस्सलात" नमाज़ को लाज़िम क़रार दे लो जिसमें नमाज़ नहीं उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं। इसमें अल्लाह के सारे हुक़ूक़ आ गए, कि यह हुक़ूक़ुल्लाह जड़ हैं बुनियाद हैं। और, 2. वमा म-ल कत ऐमानुकुम" तुम्हारे हाथ तले जो भी है, कि तुम हाकिम हो तो महकूम की ज़िम्मेदारी तुम पर, तुम बाप हो तो बच्चों की ज़िम्मेदारी तुम पर, तुम शौहर हो तो बीवी की ज़िम्मेदारी तुम पर, तुम अमीर हो तो जमाअ़त की ज़िम्मेदारी तुम पर, तुम उस्ताद हो तो शागिर्द की ज़िम्मेदारी तुम पर, तुम पीर हो तो मुरीदों की ज़िम्मेदारी तुम पर, जो भी तुम्हारे हाथ तले है, उसका हक़ और उसका सब से पहला हक़ क्या है? कि उस को अल्लाह की ज़ात से जोड़ना। जो अल्लाह को नहीं पहचानेगा वह किसी चीज़ को भी नहीं पहचान सकेगा।

इन दो लफ़्ज़ों में यानी अस्सलात-अस्सलात और वमा म-ल कत ऐमानुकुम में आपने तमाम हुक़ूक़ुल्लाह और तमाम हुक़ूक़ुल इबाद उम्मत को बतला दिए। और तीसरा 3. "इन्फ़िरू जैश

उसामा'' हज़रत उसामा के लशकर की रवानगी, जिस का झंडा आप ने अपने कपकपाते हाथों से बाँधा था। कि मेरी वफ़ात से मुतास्सिर होकर कहीं काम से बैठ न जाना इसलिए उसामा के लश्कर को रवाना कर दो। आप सकरात में और आपको उसामा रज़ि० के लश्कर का तक़ाज़ा। मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! मैं यह अ़र्ज़ करना चाह रहा हूं कि उम्मत को आप स० ज़िम्मेदारी दे कर दुनिया से तशरीफ़ ले गए हैं। यह काम किसी एक जमाअ़त का नहीं "كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ" तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है और हर एक से उसके मातहत के बारे में पूछा जावेगा। कि मेरी नमाज़, मेरा रोज़ा मेरे नेक आमाल, मैं तो अपनी ज़ात से कर ही रहा हूँ यह आ़म बात फैली हुई उम्मत में, कि मियां हम तो नमाज़ पढ़ते ही हैं।

उम्मत यूं समझ रही है कि यह तब्लीग़ का काम इसलिए है कि जो नमाज़ी नहीं है वह नमाज़ पढ़ने लगे। अरे यह बात नहीं है। बल्कि बात यह है कि अगर तू अपनी नमाज़ पढ़ता है तो तुझे भी नमाज़ की हक़ीक़त तब ही मिलेगी जब तू दूसरों को अंबिया और सहाबा वाली नमाज़ की दावत देगा।

नमाज़ की हक़ीक़त तक नमाज़ की दावत से पहुंचेगा।

कलिमे की हक़ीक़त तक कलिमे की दावत से पहुंचेगा।

इल्म व ज़िक्र की हक़ीक़त तक इस की दावत से पहुंचेगा

इकराम, इख़्लास और दावत की हक़ीक़त तक इनकी दावत से पहुंचेगा। इन्फ़िरादी मस्अला नहीं, मस्अला इज्तिमाई है। एक उम्मत बनाकर गये हैं, हुज़ूर स० कोई फ़िर्क़ा नहीं बनाया, कोई जमाअ़त नहीं बनाई। अब उम्मत का एक-एक फ़र्द चाहे यह

मस्जिद में हो, चाहे घर में हो या कारख़ाने में हो, नौकरी करता हो या हुकूमत में हो, कहीं भी यह हो। बहैसियत उम्मती होने के उसके ज़िम्मे नुबुव्वत वाला काम है।

अभी क़ुरआन को दावत के ऐतिबार से पढ़ा ही नहीं है। अल्लाह तआला बार बार फ़रमाते हैं! कि क़ुरआन को देखो, क़ुरआन को सोचो, इसमें ग़ौर करो, इसकी आयत में तदब्बुर करो। अब तो हमने तर्जुमा कर लिया और इसी को हमने काफ़ी समझ लिया। या एक आयत पढ़ ली।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ

हम तो इतना क़ुरआन समझ लेंगे बस। अपने अपने मतलब का। मेरे दोस्तो, ज़रा एक बात तो बताओ इतने पर अ़मल करना काफ़ी होगा। कि भाई मैंने "ला तक़रबुस्सलात पढ़ लिया यानी "नमाज़ के क़रीब मत जाओ" कि क़ुरआन में आया है कि नमाज़ के क़रीब मत जाओ और इस से आगे यह लिखा हुआ है कि "नशे की हालत में" तो बताओ आधी बात पर अ़मल करोगे, क्यों भाई, कि हमने तो क़ुरआन में यूं पढ़ा है "ला तक़रबुस्सलात" कि नमाज़ के क़रीब मत जाओ"। बस इतनी ही बात पर अ़मल करेंगे।

अब पूरी आयत पढ़ लो।"

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى

"لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ" पढ़ कर, इस पर अ़मल करना "हराम" है कोई गुंजाइश नहीं है इसकी कि इस आधी आयत का तर्जुमा कर दिया जाये या अ़मल कर लिया जाये। इसी तरह "वल अ़स्र" है।

कि क़ुरआन क्या कह रहा है? इस पर ग़ौर करो, आधी आयत पढ़ लेने से अमल नहीं बनता यह देखो कि क़ुरआन क्या कह रहा है। क़ुरआन कह रहा है कि

"وَالْعَصْرِ ○ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ"

क़सम है ज़माने की, हर ज़माने का, हर लाइन का, हर इन्सान ख़सारे में है। सिवाए उन लोगों के जो चार काम करें। ईमान, नेक काम, तवासौ बिल हक़ तवासौ बिस्सब्र''

मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० मुफ़्तीए आज़म, इनकी बहुत मशहूर तफ़सीर है, मआरिफ़ुल क़ुरआन'' उसमें सारी उम्मत को ''वल अस्र'' में ज़िम्मेदारी जो बतला रहे हैं, कि ख़सारे (नुक़्सान) से बचने का और ख़सारे से निकलने का, क़ुरआन का नुस्ख़ा, चार चीज़ों से मुरक्कब है, ख़सारे से निकलने का यह नुस्ख़ा क़ुरआन का नुस्ख़ा है, किसी हकीम का नुस्ख़ा नहीं है। असल अल अ़लीमुल हकीम यानी अल्लाह तआ़ला ख़ुद यह नुस्ख़ा बतला रहे हैं।

1.ईमान 2. नेक आमाल 3. तवासौ बिल हक़ 4.तवासौ बिस्सब्र

यूं फ़रमाते हैं जो इन चारों में से, तीन पर अ़मल करे या दो पर अ़मल करे, या किसी एक पर अ़मल करे। तो वह ख़सारे से न निकलेगा, बल्कि चारों काम करने वाला ख़सारे से निकलेगा, और आगे यूं फ़रमाया कि इस उम्मत के लिए सिर्फ़ अपनी ज़ात के बारे में सोचना, ख़सारे से निकलने के लिए काफ़ी नहीं है। यही नहीं इस से आगे की बात लिखी है, मुफ़्ती साहब ने, ध्यान

से सुनों इसे कि जब अल्लाह तआला ने नजात हासिल करने के लिए और ख़सारे से निकलने के लिए चार चीज़ें बतलाई हैं तो जो आदमी सिर्फ़ अपने ईमान और आमाले सालिहा की फ़िक्र करे और दूसरों को ईमान पर लाने और आमाल पर लाने की मेहनत करे तो साफ़-साफ़ लिखा है कि उस आदमी ने अपनी नजात का दरवाज़ा बन्द कर लिया। जो सिर्फ़ अपनी ज़ात की फ़िक्र कर रहा है सारी उम्मत की फ़िक्र नहीं कर रहा, तो उसने अपनी नजात का दरवाज़ा बन्द कर लिया।

क्योंकि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमा रहे हैं, कि चार काम करने वाले ही ख़सारे से निकलेंगे।

इस लिए मेरे दोस्तो, यह एक मेहनत है, एक मक़्सद है और इस सबके लिए हमारा सबका यह जुड़ना है। तो जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह मेहनत सहाबा किराम से करवाई, उस मेहनत पर वह मदीने का अमन, वह मदीने का सुकून, वह मदीने वालों का मुआशरा और अख़्लाक़, वह मदीने वालों का ईमान, ये जो बने हैं सहाबा किराम ऐसे, तो वे इस मेहनत से बने हैं। इस लिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, यह एक मक़्सद है, यह एक काम है और एक मेहनत है। जब हम अपने आपको इस मेहनत पर लायेंगे, तब सारा निज़ामे आ़लम दुरुस्त होगा।

मैं अ़र्ज़ कर रहा था कि अल्लाह तआला के ख़ज़ानों से उम्मत दावत की मेहनत से हटकर फ़ायदा नहीं उठा सकती। तो अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठाने के लिए यह रास्ता है। नबियों वाला रास्ता, कि अंबिया वाले काम को हम अपना काम बना कर चलें और इस काम की ज़िम्मेदारी अब अपने ऊपर लें।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० यूं फ़रमाते थे कि अगर उम्मत दावत की मेहनत पर आ जावे, और उम्मत इस काम को अपना काम बना ले तो अल्लाह तआ़ला की जो नुसरतें सहाबा के साथ हुई हैं वही नुसरत इस वक़्त इस उम्मत की होगी बल्कि उस से 50 गुना ज़्यादा अज्र मिलेगा और 50 गुना ज़्यादा नुसरत होगी आज। लेकिन मेहनत के रुख़ को सही करें, हमने जिस लाइन से मेहनत का मैदान क़ायम किया हुआ है। ज़रा बैठ कर सोचें कि क्या यही अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की मेहनत का मैदान था जो हम कर रहे हैं या उनकी मेहनत का मैदान कोई और था। इसे सोचें और सोच कर अपनी मेहनत के रुख़ को बदलें। मेहनत के रुख़ को बदलने के लिए हमें सब से पहले अपनी ज़िम्मेदारी का अपने अन्दर एहसास पैदा करना है, कि

मैं दुनिया में क्यों भेजा गया था और मेरे दुनिया में आने का क्या मक़्सद था? और मुझे ख़िलाफ़त का ताज क्यों पहनाया गया था? अल्लाह ने मेरे अन्दर क्या रखा है? यह सब सोच कर फिर अपनी मेहनत के रुख़ को बदलना, और अपनी मेहनत के मैदान को बदलना।

अल्लाह तआ़ला सब से पहले जो इस मेहनत पर हमें करके दिखलायेंगे वह दुनिया का चैन और सुकून देकर दिखायेंगे कि आज उम्मत "हयाते तय्यिबा" से महरूम है, कि हर एक चाहता है कि ख़ुशगवार ज़िन्दगी गुज़ारूं लेकिन जिसके कन्धे पर हाथ रखोगे वह ही परेशान मिलेगा, हर एक अपने मसाइल में उलझा हुआ है।

कोई क़रज़दार, कोई बीमार, किसी पर मुक़द्दमा, किसी की ज़मीन, किसी का मकान, किसी की दुकान, हर एक किसी न

किसी मस्अले में उलझा हुआ है। लेकिन मेहनत वही ग़लत रास्ते की हो रही है। हालात को हालात से बदलने के चक्कर में, और हालात को हालात से बनाने के चक्कर में यह बेचारा अपनी मेहनत को बढ़ाये चला जा रहा है। इतना क़ाबिले रहम है और इतना क़ाबिले तरस है यह इन्सान कि एक-एक को पकड़ कर जनाब रसूलुल्लाह स० ने उसको मसाइल के हल के लिए मस्जिद वाला बनाया था कि तेरे मसाइल का हल आमाल हैं। लेकिन यह मस्जिद की मेहनत से तो ऐसा भागा कि गोया इस मेहनत से उसके मस्अले का कोई तअ़ल्लुक़ ही नहीं है कि चलो दुकानों पर और चलो कारख़ानों में और चलो खेतों पर वहां मसाइल हल होंगे।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! उम्मत की जहां मेहनत लग रही है, वह मसाइल के पैदा होने का रास्ता है और जहां उम्मत की मेहनत नहीं लग रही है, वह मसाइल के हल का रास्ता है। अंबिया का रास्ता मसाइल के हल का रास्ता है, और अंबिया के ख़िलाफ़ जो मेहनत का रास्ता है, वह रास्ता मसाइल के पैदा होने का है। इसलिए आज मसाइल हल नहीं हो रहे हैं, बल्कि मसाइल और खड़े हो रहे हैं मसाइल और बढ़ रहे हैं। आप हाकिमों से पूछें, और ताजिरों से पूछें जो मसाइल कल थे क्या वे आज के दिन हल हो गए या जितने मसाइल कल थे उनमें इज़ाफ़ा हुआ है। जितनी चाहे दवायें बनाओ, जितने चाहे हथियार बनाओ,

जो चाहे करो, चीज़ों पर न कभी अल्लाह ने फ़ैसला किया है न कभी करेंगे। इसलिए मेरे अज़ीज़ो, दोस्तो, और बुज़ुर्गो! एक क़ुरबानी की वह सतह है जिस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने त्बदीली के वादे फ़रमाए और सहाबा किराम के ज़माने में उन

क़ुरबानियों पर तब्दीलियां मुशाहदे में आईं। एक क़ुर्बानी की वह सतह है जिसे हम अपने लिए तय कर लें। हुज़ूर स० व सहाबा किराम जिस तरह नमूना-ए-आमाल हैं। इसी तरह वे नमूना हैं हक़ीक़त को पाने की मेहनत में भी और वह क़ुर्बानी की सतह मुतैयन है, जो क़ुरबानी की सतह दाई की होनी चाहिए। उस क़ुर्बानी की सतह तक पहुंचाने के लिए यह दावत की मेहनत हो रही है कि मेहनत करके एक मज्मूआ उस क़ुर्बानी की सतह का आ जाये, जिस पर रख कर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आ़लम की हिदायत का फ़ैसला फ़रमा दें।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! एक तो इस काम को अ़मल समझना। दूसरी तरफ़ इस काम में बसीरत का तक़ाज़ा किया है? इस काम पर बसीरत का तक़ाज़ा यह है, कि इस काम को सिवाये नुबुव्वत वाले काम के अ़लावा किसी और वजह से न किया जाये,

"اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِیْ" (सूरत यूसुफ़ आयत, 108)

का यह तक़ाज़ा है, कि जिस बसीरत पर मैं हूं, उसी बसीरत पर मेरी इत्तिबा करने वाला हो।

(सूरत बक़रा, आयत, 285)

"اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ" जिस तरह ईमान वालों को नबी को नबी यक़ीन करना ज़रूरी है, उसी तरह नबी को भी इसका हुक्म है कि वह अपने नबी होने का यक़ीन रखे कि मैं अल्लाह की तरफ़ से भेजा हुआ हूँ। इस बसीरत के बग़ैर इस्तिक़ामत नहीं होती, वरना अ़मल क्या है, क्यों कर रहे हो? सब कर रहे हैं, इस लिए कर रहा हूँ। या यह कि मैं ने ज़ाती

तौर पर इस काम में कुछ नफ़ा महसूस किया।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! मैं यह अ़र्ज़ करना चाहता हूँ कि इस काम को चाहे कोई न करे बल्कि चाहे हर एक इस काम की मुख़ालफ़त करे, तब भी हमें इस काम पर पूरी इस्तिक़ामत होनी चाहिए। यह बसीरत का तक़ाज़ा है, कि किसी के इस काम को न करने से मेरे अपने अन्दर काम को लेकर कोई शक न हो। यह काम शक पर नहीं चल सकता, क्योंकि शक पर इस्तिक़ामत नहीं होती। इसी लिए क़ुरबानी की आला सतह तक वे पहुंचेंगे, जो इस काम पर बसीरत से चलेंगे। कि काम पर जो वादे हैं अल्लाह की तरफ़ से उन वादों के पूरा होने का यक़ीन उसे बसीरत कहते हैं।

मेरे दोस्तो! अगर यह यक़ीन नहीं होगा, तो न मालूम कारोबारी आदमी को कितने तक़ाज़े, ऐसे पेश आते हैं, जो उन्हें लाकर ऐसे हालात में खड़ा करते हैं कि फिर यह कह देता है कि इन हालात में काम नहीं हो सकता।

मेरे दोस्तो! एक है इस काम को अ़मल समझना, देखो इस काम पर अल्लाह की तरफ़ से जो कुछ मिलने वाला है, दोस्तो! वह मक़्सूद नहीं है। वह सब तमाम का तमाम अल्लाह की तरफ़ से मौऊ़द है, अल्लाह की तरफ़ से उसके मिलने का वादा है। जो मौऊ़द के लिए करता है, उसकी निगाह मौऊ़द पर होने की वजह से मक़सूद से हट जाती है और फिर वह अपने अ़मल को वादों के बक़द्र जितने की उसके अन्दर चाहत होगी, उतना अ़मल कर लेगा लेकिन मक़्सद को पूरा करने पर वादे पूरे होते हैं, इस से उसकी निय्यत हट जायेगी।

मैं इसकी मिसाल भी अ़र्ज़ कर दूं, कि अगर दावत के काम

को इसने अ़मल समझा है तो जैसे दो रक्अ़त नमाज़ जिस में एक रक्अ़त में लिईलाफ़ि क़ुरैश और दूसरी रक्अ़त में क़ुल हुवल्लाहु अहद् ये दो रक्अ़त इसने पढ़ी बहुत मुख़्तसर क़िरअ़त की लेकिन यह अ़मल नमाज़ का मुकम्मल हो गया। इसकी नमाज़ पूरी और ठीक ठीक हो गई। लेकिन काम को यानी इस मेहनत को उस ने मुख़्तसर कर दिया अ़मल समझ कर, तो इसी तरह मुख़्तसर गश्त होंगे, मुख़्तसर तालीम होगी मुख़्तसर मुलाक़ातें होंगी, मुख़्तसर निकलना होगा यहां तक कि पूरी मेहनत अ़मल बन कर रुख़्सत पर आजयेगी और अ़ज़ीमत जो दावत के साथ है, वह ख़त्म हो जायेगी और आमाले दावत जो मेहनत का नाम हैं यानी दावत के तक़ाज़े, वे मेहनत से अ़मल की तरफ़ आकर फिर उसमें रुख़सत तलाश की जाने लगेगी,

इसलिए कि रुख़सत आमाल के साथ है। रोज़ेदार को सफ़र में रोज़े की रुख़सत है और इसी तरह आमालों के साथ फ़तवे के ऐतिबार से रुख़सत ही रुख़सत है। अगर यह मेहनत अ़मल समझ कर हो रही है, तो इसमें रुख़सतें हम तलाश करेंगे, सह रोज़े में, तालीम में गश्त में ढाई घंटे में, सालाना निकलने में हम रुख़सतें तलाश कर लेंगे। अगर मेरे दोस्तो, दावत आवे अ़ज़ीमत पर तो आमाल में सहूलतें मिलेंगी। कि दावत के तक़ाज़े पर निकले और अ़मल का वक़्त आ गया कि फिर अ़मल को आसान कर दिया गया कि जमाअ़त की नमाज़ 2 जमाअ़तों में तक़्सीम कर दी गई, हाँ दावत के तक़ाज़े पर सलातुल ख़ौफ़ मिली है कि एक जमाअ़त दुशमन के मुक़ाबले पर रहे और एक जमाअ़त नमाज़ अदा करे, फिर यह जमाअ़त दुशमन के मुक़ाबले पर जाये और वह मुक़ाबले से हट कर नमाज़ अदा करे। नमाज़

एक ही है, नमाज़ को नहीं तक़्सीम किया है लेकिन नमाज़ियों को तक़्सीम कर दिया। यह भी नहीं कि जंग का वक़्त आ गया है तो नमाज़ छोड़ दो या नमाज़ का वक़्त आ गया है तो दावत का तक़ाज़ा छोड़ दो, ऐसा नहीं बल्कि दावत के तक़ाज़े की वजह से अगर अ़मल का वक़्त आ गया तो उस अ़मल में तब्दीली की और उस अ़मल को आसान कर दिया कि सलातुल ख़ौफ़ दावत के तक़ाज़े पर आई है। जो आमाल को ज़िन्दा करने वाली मेहनत करेंगे हम आमाल उनके लिए आसान करेंगे।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! असल में एक सतह है दाई की और एक सतह है मदऊ की। हर साल 4 माह लगाने वाले इसके साथ अपनी मस्जिद में वक़्त भी देते हैं, यह वह सतह है जो उम्मत को इस काम पर लाने की मेहनत कर रही है। लेकिन एक सतह मदऊ़ की होती है कि वह अपनी इस्तेदाद के बक़द्र कुछ वक़्त दे देवेगा। ख़ुद काम करने वाले कुछ वक़्त दे दें, यह दाई की सतह नहीं है, यह तो मदऊ़ की सतह है। हुज़ूर स० अपनी वाली सतह के दाई हैं। जैसे ताजिर अपनी सतह का दाई होता है कि ताजिर की अपनी सतह है और गाहक की अपनी सतह है। तो ताजिर अपनी सतह पर जमा रहता है कि यह चीज़ इतने रुपये की है, और गाहक का तक़ाज़ा यह है कि ताजिर कुछ कम करे यह ख़ुलासा है तिजारत का। अगर दाई मदऊ़ की सतह पर उतर आवे तो यह ऐसा है कि ताजिर गाहक की सतह पर उतर आया अब ताजिर का नुक़्सान हो जायेगा।

मेरे दोस्तो, अल्लाह के यहां जो ईमान मतलूब है, अल्लाह वह ईमान लाने का हुक्म क़ुरआन में दे रहें।

"اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ"

और जो नमाज़ की हक़ीक़त हुज़ूर स० मेराज में अ़र्श से लेकर आए हैं आप स० उस नमाज़ के दाई हैं, तो यह दाई की सतह है।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! क़ुरबानियों की उस आला सतह पर आने के लिए दावत दी जा रही है और उस पर उम्मत को लाने के लिए यह दावत दी जा रही है। कि क़ुरबानियों की उन आला सतह पर आया जावे जिस सतह पर आकर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त एक मज्मूए पर रख के आ़लम का फ़ैसला फ़रमा दें। लेकिन ख़्वाहिशात के रास्ते से न कभी दावत का असर मद्ऊ़ पर हुआ है न कभी दावत असर करेगी और मुल्क व माल के रास्ते से न कभी ऐसा हुआ है न कभी होगा। अगर ज़रा सा ग़ौर किया जावे तो मालूम हो जायेगा कि तमाम नबी अस्बाब से ख़ाली करके भेजे गए, जिन नबियों के पास अस्बाब थे, लेकिन जब उन्हें काम सुपुर्द किया गया तो अस्बाब सारे उन से ले लिए गए।

अब मुल्कों के तक़ाज़े उन पर डाले जाते हैं, जिनके पास अस्बाब होते हों। और जिन के पास बाहर जाने के अस्बाब नहीं हैं, ऐसे लोगों के सामने तक़ाज़े बिल्कुल न डालते वे बेचारे तक़ाज़े पूरे न कर सकेंगे।

यह सोच है हम काम करने वालों की। यह बात वहां मदीना मुनव्वरह में नहीं थी, सहाबा में यह बात नहीं थी। इसलिए कि हर नबी अस्बाब से ख़ाली करके भेजे जाते और इब्तिदा से नबियों की मेहनत बग़ैर अस्बाब के और इब्तिदा से जो लोग नबियों के साथ लगाये गये उनकी भी अक्सरियत अस्बाब से ख़ाली थी।

फ़ुक़रा, मसाकीन और अजनबी, यह बात नहीं है कि अस्बाब नहीं हैं कि अस्बाब होंगे तो काम होगा। बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दावत के अस्बाब दावत की क़ुरबानियों से पैदा फ़रमाते हैं। दावत की क़ुरबानियों पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ग़ैबी अस्बाब सामने लाते हैं और जब दावत के लिए माद्दी अस्बाब मुतैयन कर लिए जाते हैं, तो फिर ग़ैबी अस्बाब का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। इसलिए कि जब आदमी यूं कहता है कि इस सबब से मैं यह कर लूंगा तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस काम को उस आदमी के सुपुर्द कर देते हैं, कि तू सबब से करके दिखला।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! एक बात तो यह कि काम करने वालों में इस काम पर जो कुछ सहाब-ए-किराम के साथ हुआ है उस सबके इस काम के साथ क़यामत तक होने का यक़ीन हो, इसलिए कि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० यह फ़रमाते थे कि इस उम्मत की सहाबा किराम के मुक़ाबले में 50 गुना ज़्यादा मदद और नुसरत होगी, बशर्तेकि कम से कम उस सतह पर आने के अज़ाइम और इरादे तो हों।

एक बात यह आ गई कि जब तक़ाज़ा अपने इरादे से ज़्यादा का आया तो फ़ौरन यह ख़्याल आता है, कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरआन में फ़रमाया है,

"لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا" "ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अ़हा" तो अपने आप को इस आयत का ग़ैर मुकल्लफ़ समझ लिया कि इस से ज़्यादा की मेरे अन्दर इस्तेदाद नहीं है हालांकि इस आयत का मतलब हरगिज़ यह नहीं है। बल्कि इस आयत का मतलब यह है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तेरे अन्दर जो इस्तेदाद रखी है और सलाहियत रखी है, तो मैंने

उस से ज़्यादा का तुझे मुकल्लफ़ नहीं किया, यह नहीं कि जिस चीज़ को तेरा दिल न चाहे तो तू कहे कि अल्लाह ने मुझे इसका मुकल्लफ़ नहीं किया, बल्कि आगे इस पर अल्लाह से माफ़ी मांग रहा हो।

"रब्बना ला तुआ ख़िज़्ना इन् नसीना अव् अख़्तअ्ना"
(सूरह बक़रह, आयत 286)

कि ऐ अल्लाह तूने जो मुझे सलाहियतें और इस्तेदाद दी थी मैं उनको तेरे हुक्मों के मुताबिक़ इस्तिमाल न कर सका, उस पर तू मेरी पकड़ न फ़रमा।

इसलिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सलाहियतों से ज़्यादा उन लोगों पर बोझ न डाला, जिन को जितना करने के लिए कहा गया था उन्होंने उतना नहीं किया। तो उन क़ौमों को अल्लाह ने आज़माइशों में डाला, तो जिस को जितना करने के लिए दिया गया है अगर वह उतना न करे तो उसको उसके काम में अल्लाह आज़माइशों में डाल देते हैं कि बनी इस्राईल से कहा था कि तुम एक गाय ज़बह कर दो, जब वह उसके सवालात में पड़े यानी जो आदमी सख़्ती करेगा उसके लिए मुआमला सख़्त कर दिया जायेगा, यह अब इसकी आज़माइश है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! ये सलाहियतें कहां लग रही हैं?------और ग़ौर किया जावे तो अस्बाब के यक़ीन की वजह से उम्मत की सलाहियतें और काम करने वालों की भी अक्सरियत और सारे के सारे मुसलमानों की सलाहियतें, वे उस रास्ते पर लग रही हैं, जिसका इन्सान ज़िम्मेदार नहीं है। वहां उम्मत की सलाहियतें लग रही हैं।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि लोग सोने चांदी की कानों की

तरह हैं, इनकी सलाहियतों को ठिकाने लगाना यह नुबुव्वत का काम है। आप स० ने हर उम्मती की सलाहियत को ठिकाने लगाया है, वह कैसे, कि इनको काम दिया। अबू हुरैरह रज़ि० यह सबसे बड़े भूके थे, सबसे ज़्यादा भूके रहने वाले लेकिन सब से बड़े मुहद्दिस यही हैं। फिर एक-एक फ़र्द से मज्मूए को उठवाया, एक-एक फ़र्द से क़बीले को उठवाया।

मेरे दोस्तो, आदम साज़ी दीन का सब से बड़ा शोबा है, काम करने वाले आदमी बनाना यह सबसे बड़ा शोबा है इस्लाम में।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि पानी पिलाना बेशक नेकी है, कि एक शख़्स पानी पिला रहा है यह नेकी का काम कर रहा है और क़ुर्बानी भी दे रहा है कि अपने पास से बर्फ़ के लिए पैसे भी लगायेगा, पानी भी लेकर बैठेगा, प्याऊ भी लगायेगा लेकिन यूं फ़रमाते थे कि जो लोगों को पानी पिलाने पर आमादा कर रहा है वह नेकियों में पानी पिलाने वाले से बढ़ा हुआ है। ख़ुद पानी तो नहीं पिला रहा है लेकिन लोगों को पानी पिलाने की तर्ग़ीब दे रहा है। हुज़ूर स० ने एक-एक से पूरे क़बीले को उठवाया है। मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हमारी ज़िम्मेदारी जिस तरह इन्फ़िरादी आमाल से पूरी नहीं होती, इसी तरह दावत के आमाल इन्फ़िरादी कर लेने से भी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं होती। जिस तरह हर अमल पर हर उम्मती को लाना इसकी ज़िम्मेदारी है, इसी तरह आमाले दावत पर भी हर उम्मती को लाना यह उम्मत के हर फ़र्द की ज़िम्मेदारी है। इसमें कोई शक नहीं है कि काम करने वालों ही के काम करने से काम ज़िन्दा होगा, बग़ैर तक्लीफ़ यानी ख़ुद तक्लीफ़ उठाए बग़ैर तरग़ीब मुअस्सिर नहीं होती, हुज़ूर स० को एक ऐसा उसूल अल्लाह ने

बताया हुआ है कि नबी जी आप अपने आपको तक्लीफ़ में डालिए और इनको तर्ग़ीब दीजिए

"ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व हर्रिज़िल मुअ्मिनीन ०"

मेरे दोस्तो, एक बहुत बड़ा मज्मा वह है अवाम का जो इस काम को हक़ जानता है इसको हक़ समझता है, लेकिन जब काम के तक़ाज़ों का वक़्त आता है तो उसमें वह काम करने वालों की सतह को देखता है कि काम करने वाले किस सतह पर हैं। उस सतह को देखकर वह अपने बारे में फ़ैसला करता है।

देखो, बात और क़ौल के ऐतिबार से जितनी चाहे आप लोग तर्ग़ीब दे दो, लेकिन जब ख़ुद काम करने का वक़्त आएगा तो जो दूसरों को काम की तर्ग़ीब दे रहा था वह अस्बाब के यक़ीन की वजह से ख़ुद काम के तक़ाज़ों से अपने हाथ खींच लेगा।

मेरे दोस्तो, एक बहुत बड़ा तब्क़ा है जो क़ुरबानियों के साथ काम को लेकर चल सकता है पर उसमें हम तक़ाज़े पूरे ने करने की वजह से रोड़ा बने हुए हैं, हम एक तबक़े में क़ुरबानियाँ न बढ़ाने की वजह से उनका रोड़ा बने हुए हैं। अगर ग़ौर किया जायेगा तो न जाने कितने ऐसे मिलेंगे जो काम पर नहीं जमे हैं, नये लोगों के लिए यही चीज़ रुकावट बनी हुई है, क्योंकि इस में कोई शक नहीं कि आदमी इस काम में जब लगता है इब्तिदा में शुरू में तो सिर्फ़ काम ही सामने होता है।

मुझ से एक साहब कहने लगे कि जब मैं इस काम में लगा मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ज़माने में 4 माह पैदल लगाए उस वक़्त अजीब कैफ़ियत थी तालीम की और गश्त की क्या बात है कि इब्तिदा में अजीब कैफ़ियत के साथ आदमी काम में चलता है और फिर हर आमाले दावत का हल्का पन

आने लगता है।

मेरे दोस्तो, एक होती है इबादत, और एक होती है आदत। आदत, इबादत तक पहुंचने का सबब है अगर यह आदत पर रहा तो यह इबादत तक नहीं पहुंच सकेगा। इस काम में इब्तिदा में सब कुछ होता है फिर जितना आगे बढ़ते गये और अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाये कि जितनी जितनी ज़िम्मेदारियां बढ़ती गयीं, उस आमाले दावत का इस्तिख़्फ़ाफ़ और हल्का पन आता गया जो इब्तिदा में किया करते थे।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो बुज़ुर्गो! एक है इस काम में इन्तिज़ामी लाइन और इन्तिज़ामी लाइन की चीज़ें, यह इन्तिज़ाम और इसका मशवरा जब है, जब काम है अगर काम नहीं है तो मशवरे में काम के क्या उमूर रखेंगे सिवाए इन्तिज़ाम के, अगर काम नहीं है तो कुछ नहीं है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह मुक़ामी काम देखो एक होता है इस काम से निस्बत, निस्बत उसे भी हासिल है जो कभी कभी तीन दिन लगा देता है और उसको भी निस्बत हासिल है जिसका कभी कोई वक़्त नहीं लगा, काम को बस भला काम समझता है, एक वह जो चार माह लगाए हुए है, एक बहुत बड़ा तब्क़ा जो वक़्त लगाकर बैठा हुआ है।

मुझसे एक साहब कहने लगे कि अल्लाह के फ़ज़्ल से काम तो हो रहा है, लेकिन जो तब्क़ा काम करके बैठ रहा है, उसका क्या करें। किसी ने कहा मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० से कि हज़रत इस पर तअ़ज्जुब होता है कि एक आदमी 20 साल 30 साल इस काम में चलने के बाद बैठ जाता है तो हज़रत ने फ़रमाया कि मुझे इस पर तो कोई इतना तअ़ज्जुब नहीं है, इस

से ज़्यादा तअ़ज्जुब इस पर है कि लोग अग़राज़ के साथ भी इस काम पर चल रहे हैं। तो वह आदमी मुझ से पूछ रहा था कि एक आदमी इस काम में लगने के बाद क्यों बैठ जाता है और इस काम में लगने के बाद दूसरे काम में क्यों चला जाता है।

तो मैंने उस से अ़र्ज़ किया कि भाई देखो उन्हें इस काम से निस्बत हुई थी मुनासबत नहीं हुई थी कि लोग यूं कहें कि यह आदमी वक़्त लगाए हुए है लेकिन उसने तो ज़ाती तौर पर काम को न ओढ़ा बस निस्बत है। देखो, सिर्फ़ निस्बत से काम नहीं चलता मुनासबत से काम चलता है। इसलिए बसीरत के बक़द्र इस काम पर इस्तिमाल होगा, वरना आमाले दावत का हल्का पन आएगा तबीअ़तों में। मेरे दोस्तो, यह तो इब्तिदाई काम है, किसी मस्जिद से किसी साथी का अगले तक़ाज़े पर जाना भी, हम लोग यूं सोचते हैं कि यह आदमी जब अगले तक़ाज़े पर जायेगा तो इस मस्जिद का क्या होगा। मेरे दोस्तो! असल में क़ुरबानियों की जिस सतह पर हमें पहुंचना है, हम उस सतह की दावत देने से घबराते हैं। क्यों? इस लिए कि हम दावत दे रहे हैं, उम्मत की सतह को देखकर। मेरे दोस्तो, उम्मत की सतह को देखकर दावत नहीं है बल्कि दावत की सतह तो हुज़ूर स० और सहाबा से मुतअ़य्यन हो गयी है, क़ुरबानी की सतह मुतअ़य्यन है। उस तक पहुंचने का तरीक़ा यह नहीं है कि जैसा माहौल हो वैसे दोवत दीजिए, बल्कि उस तक पहुंचने का तरीक़ा यह है कि उस सतह की दावत दो जिस मन्ज़िल पर पहुंचना है। दाई अगर अपनी दावत में अपनी सतह से नीचे उतर जावे, यह तो मेरे दोस्तो, इन्तिहाई नुक़्सान और इन्तिहाई इन्हितात का रास्ता है। कि वह नीचे उतर रहा है।

दावत पूरी दी जावे पूरी दावत देंगे इब्तिदा में एक तिहाई अ़मल होगा फिर पूरी दावत देंगे तो काम और आगे बढ़ेगा। लेकिन अगर इस की अ़मल की सतह पर दावत आ गई तो फिर यह भी हो जायेगा कि काम करने वालों में दो तब्क़े हो जायेंगे,

एक तब्क़ा तो इतनी दावत का आ़दी हो जायेगा जितनी की उम्मत में इस्तिदाद है और दूसरा तब्क़ा यह कहेगा कि नहीं यूं करो। यहां से मेहनत के दो रुख़ बनेंगे।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इस लिए अ़र्ज़ यह है कि हम पूरी आला सतह की दावत दें,

दावत देने में ज़र्रा बराबर अस्बाब का या जिस को दावत दे रहे हैं उसका या अल्लाह के किसी ग़ैर का तास्सुर अपने अन्दर लेकर दावत न दें।

अपने अन्दर अगर अल्लाह के ग़ैर के तास्सुर से दावत दे रहा है तो उसकी दावत की सतह वहीं गिर गई और अल्लाह की ग़ैबी मददें वहीं उठ गयीं, इसलिए कि अल्लाह के ग़ैर के तास्सुर से अल्लाह की ग़ैबी नुसरतों का दरवाज़ा वहीं बन्द हो जाता है।

हम यह सोचते हैं कि अभी तो इसको दावत इतने की दे दो, जब यह साथ जुड़ जायेगा तो फिर आगे की दावत को देंगे, यह तो पहली दावत पर क़ुरबानियों का भाव तय कर लेगा, क़ुरबानी की सतह तय कर लेगा। मैं यह इस लिए अ़र्ज़ कर रहा हूँ कि हर एक अपनी तिजारत अपने घर मुलाज़मत अपनी सारी दुनियावी मश्ग़ूलयतें जो उसकी हैं, उसके ऐतिबार से हर एक ने काम को अपने दुनियावी कामों के साथ सेट कर रखा है।

मेरे दोस्तो जब दुनियावी तक़ाज़ों की वजह से दावत के तक़ाज़े आगे पीछे किये जाने लगें तो मौलाना मुहम्मद यूसुफ़

साहब रह० फ़रमाते थे कि मुजाहदा नाक़िस और इस नाक़िस मुजाहदे के असरात भी नाक़िस ही मुरत्तब होंगे। यह वक़्त की पाबन्दी अपनी तबीअतों को बदलने के लिए है। फिर एक तब्क़ा इस इब्तिदाई मेहनत से वह वुजूद में आवेगा कि उस तब्क़े पर जब जिस वक़्त दिन में या रात में तक़ाज़ा डाल दो वह तक़ाज़े पूरे करेगा। लेकिन जो तब्क़ा अपने काम के साथ दावत को मिलाकर जैसे तैसे तर्तीब दे दे तो यह भी वह तब्क़ा होगा जो अभी दावत पर नहीं आया, फिर जिन के दावत के तक़ाज़े उनके दुनियावी तक़ाज़ों से मग़लूब हैं, यह भी अवामुन्नास हैं और यह भी मद्‌क़ की सतह है।

क्योंकि हर मस्जिद का एक मज्मा होता है और हर मस्जिद का एक अ़मला होता है। अभी तो मस्जिद के अ़मले के तीन दिन, मस्जिद के अ़मले की तालीम, मस्जिद के अ़मले के 4 महीने, मस्दिज के अ़मले के गश्त। जो चन्द साथी ज़िम्मेदार हैं और पूरी उम्मत को इस मेहनत पर लाने की निय्यत किए हुए हैं, अभी तो उन पर मेहनत हो रही है कि तुम तो तीन दिन लगाओ, तुम तो 2 गश्त की पाबन्दी करो, तुम तो ढाई घन्टे लगाओ। दूसरी तरफ़ मस्जिद का मज्मा है जिसे इन आमाल पर लाना है ताकि वह नुबुव्वत वाली मेहनत पर आ जाये।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! जिस तरह नमाज़ की सफ़ें होती हैं, इसी तरह काम करने वालों की भी सफ़ें होती हैं। एक पिछली सफ़ में आदमी आता है, आख़िरी रकअ़त में आकर शामिल होता है अपनी 3 रकअ़त पूरी करके वापस चला जाता है, एक इमाम की सतह है, एक इमाम के पीछे वाली सफ़ की सतह है।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि, तुम में जो अ़क़लमन्द और

समझदार है वह मेरे पीछे खड़ा हो। क्या बात है? बात यह है कि अगर किसी मौक़े पर कोई तक़ाज़ा तुम से मुतअ़ल्लिक़ आ गया तो इमाम बोलेगा नहीं सिर्फ़ इशारा करेगा उंगली से और अपनी जगह से हट कर एक आदमी को पीछे से अपनी जगह बुलाकर खड़ा कर देगा।

मेरे दोस्तो, वह तब्क़ा कहां है? हुज़ूर स० ने ऐसे काम करने वाले आदमी बनाए कि आपके दुनिया से तशरीफ़ ले जाने पर, देखो आप का वक़्त तमाम नबियों के मुक़ाबले में सब से कम, कहां 950 साल नूह अ़लैहिस्सलाम के कहां 23 साल हुज़ूर स० के लेकिन इन 23 साल में आपने वह अ़मला तैयार किया कि आप के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने पर काम का राई के दाने के बराबर भी नुक़्सान न हुआ इतना भी नुक़्सान न हुआ कि ज़कात न देना तो दूर की बात है, ज़कात में दी जाने वाली रस्सी अगर उसको भी कोई देने से इन्कार करेगा, इसके लिए तरग़ीब देने वाले नहीं हैं, फ़तवा देने वाले नहीं, इसके लिए क़िताल करने वाले मौजूद हैं, यह कब होता है?

यह जब होता है जब हर काम करने वाला, हर साथी को उसकी सतह पर लाने की मेहनत करता है जो सतह अल्लाह के यहां मतलूब है। तब वह अ़मला वुजूद में आता है जो नुबुव्वत के बाद नबी के काम को संभाल लेता है।

आप स० ने हर इस्तिदाद का आदमी तैयार किया, यहां तक कि ऐसा भी आदमी तैयार किया कि अगर नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द न होता तो हज़रत उमर रज़ि० के अन्दर नबी वाली इस्तिदाद पैदा फ़रमाई, जिन की ज़बान पर फ़रिश्ते बोलते हैं। और जो उमर चाहते हैं अल्लाह की तरफ़ से उसका हुक्म आ

जाता है। यह इस पर हुआ है मेरे दोस्तो, कि यह अगली सफ़ वाले जब बनते हैं, जब इनकी क़ुरबानियाँ इतनी हो जावें कि यह इमाम होने की सतह पर आ जावे, कि इमाम को जब कोई ज़रूरत पेश आ जावे या उसका वुज़ू जाता रहे या कोई उज़्र पेश आ जावे तो वह ज़बान से बोले बग़ैर इशारे से इतनी जल्दी पीछे वाले आदमी को आगे करता है और जहां से इमाम ने अ़मल को छोड़ा है वह वहीं से शुरू कर देता है, यानी इतना भी फ़ासला नहीं होता कि इमाम का कोई अ़मल छूट जाये।

हुज़ूर स० का हज़रत उसामा रज़ि० के लश्कर को भी रवाना करने का यही मतलब था कि हम जा रहे हैं लेकिन उसामा के लश्कर को इतनी भी देर न हो कि जिस से नुबुव्वत के उम्मत की तरफ़ काम के आने में कोई फ़ासला हो जाये। मेरे दोस्तो, इस तक़ाज़े के आदमी बनाना और आदमी बना करते हैं क़ुरबानियों से। इस काम में हर एक अपनी अपनी क़ुरबानी के बक़द्र आगे बढ़ता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से हर आदमी का इन्तिख़ाब उसकी निय्यत और तलब पर होता है।

मेरे दोस्तो, कोई किसी को इस काम को करता हुआ देखकर ख़ुद काम करने लगे तो उस आदमी को अभी समझ लेना चाहिए कि इस आदमी के बाद मैं काम में नहीं रह पाऊँगा इसलिए कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० का पहला ख़ुतबा यही था, कि जो लगे हुए थे मुहम्मद स० की वजह से अपना माबूद उनको बनाकर, वह तो यह सोच लें कि भाई उनका तो माबूद ख़तम हो गया और जो अल्लाह के लिए लगा होगा उसे इस्तिक़ामत हासिल होगी लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से इन्तिख़ाब होता है। हम समझते हैं कि मशवरे वाले जिस को

आगे बढ़ा दें जिस को चाहे पीछे कर दें, क्या मशवरे वाले कर सकते हैं ऐसा? इसी लिए शिकायतें भी होती हैं कि फ़लां को फ़लां आगे बढ़ा रहा, नहीं दोस्तो जो भी तक़ाज़े आते हैं चाहे मस्जिद की जमाअ़त पर चाहे मशवरे की जमाअ़त पर, वे अल्लाह की तरफ़ से आते हैं, मशवरे वाले तो उन तक़ाज़ों को तक़ाज़े वालों तक पहुंचाने का सिर्फ़ सबब हैं। जैसे बरतन में दूध लाना यह तो दूध के लाने का सबब है यह बरतन वरना दूध तो थनों में अल्लाह के ख़ज़ाने से आया। दावत के तक़ाज़े अल्लाह की तरफ़ से आते हैं और अल्लाह की तरफ़ से उन तक़ाज़ों के पूरा करने वाले मुन्तख़ब किए जाते हैं। अल्लाह ही जानते हैं कि काम किस से लेना है बस हम अपने को क़ुरबानियों के लिए तैयार रखें इख़्लास के साथ, "न तो हम यह देखते हैं कि तुम कौन हो और हम किसी के थकने को भी नहीं देखते" कि यह आदमी अपने आप को काम में कितना थका रहा है। एक आदमी ने दावत की ख़ूब मेहनत की और सहाबा किराम उसकी मेहनत से मुतास्सिर होकर कहने लगे कि या रसूलल्लाह! फ़लां ने तो काम पर अपनी जान लगा दी, आपने फ़रमाया! तुम लोग तो कह रहे हो कि फ़लां आदमी ने अपनी जान लगा दी और मैंने उसको जहन्नम में देखा है कि उसने एक कुर्ता चुराया माले ग़नीमत में से इस वजह से उसको जहन्नम में देखा है।

मेरे दोस्तो, सिर्फ़ भागा दौड़ी नहीं है, बल्कि अपने अन्दर के इख़्लास से अपने को अल्लाह के यहां क़ुबूल करवाना है। अभी तो हम क़ुबूल करवाने की मेहनत में चल रहे हैं यह नहीं है कि, जो मशवरे में बैठने लगे वह क़ुबूल हो गया जो ढाई घन्टे और

तीन दिन लगाने लगा वह क़ुबूल हो गया, या तालीम और गश्त में शिरकत करने लगा तो क़ुबूल हो गया।

मेरे दोस्तो एक सहाबी हुज़ूर स० की वही को लिखते थे हुज़ूर स० ने उस काम पर लगाया था उन्हें, उनसे ज़्यादा क़रीब या उनसे ज़्यादा ग़ैबी निज़ाम देखने और समझने वाला भला और कौन होगा। पर यह वही लिखने वाले भी मुर्तद हो गए।

यह मैं इस लिए अर्ज़ कर रहा हूं कि काम करते करते आदमी किसी ऐसे मुक़ाम पर पहुंचता है कि वहां कोई ऐसी बात पेश आवेगी जिस से 30 साल 40 साल काम करने के बाद भी काम से पीछे हट जावेगा। क्यों? इसलिए कि बराहे रास्त काम को नहीं समझा जिस पर इस्तिक़ामत हो जाती, तो अर्ज़ यह है कि हर काम करने वाले को काम पर बसीरत हो, कि मैं ज़ाती तौर पर इस काम को नुबुव्वत वाला काम हक़ समझता हूं। यह चीज़ काम करने वाले को आगे बढ़ायेगी, वरना कोई चीज़ पेश आवेगी तो यह काम को छोड़ देगा, तीन दिन छोड़ देगा। क्योंकि इसका मतलब यह है कि सारे काम, काम करने वाले की वजह से हो रहे थे। एक आदमी से इख़्तिलाफ़ हुआ तो काम ही छोड़ दिया, इख़्तिलाफ़ होगा इन्तिज़ामी लाइन में, हम छोड़ बैठेंगे काम। इस लिए ये आमाले दावत यानी अपनी मस्जिद का गश्त, अपनी मस्जिद के ढाई घन्टे, तालीम मशवरा और तीन दिन, अपनी ज़ात से चिल्ले, 4 महीने इसको हर साथी अपनी ज़ाती ज़रूरत समझ कर करे और हर उम्मती को उस पर लाये, मैं तो पूछता हूं कि भाई यह काम तुम क्यों कर रहे हो इस काम के करने की वजह क्या है। देखो जी, अगर सिर्फ़ इतनी बात है कि मुझे जन्नत मिल जावे, अब मान लो जन्नत मिल भी गई और

जन्नत में दाख़िल भी हो गया लेकिन सवाल तो इस बात का है कि इन्सानियत जो जहन्नम की तरफ़ जा रही है, उसका क्या होगा।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इसमें कोई शक नहीं कि इन्फ़िरादी आमाल तो हर एक को करने हैं। क्योंकि यह हमारी ज़रूरत है लेकिन इन्फ़िरादी आमाल में क़ुव्वत, तासीर, मक़बूलियत और हक़ीक़त, ये दावत की ज़िम्मेदारी पूरा करे बग़ैर नहीं आया करती। दावत पर उम्मत को लाना और हर उम्मती के अन्दर उसकी ज़िम्मेदारी का शुऊर पैदा करना। तो अब जो क़ुरबानियों पर चलेगा, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से उसका इन्तिख़ाब होगा यह काम अल्लाह का है, कोई किसी को न आगे बढ़ा सकता है न पीछे हटा सकता है। हां, उसके ज़ाहरी अस्बाब आते हैं तो हम जो कुछ हमारे साथ हुआ होता है उन्हें हम उन अस्बाब से जोड़ देते हैं, कि यों न हुआ होता तो यूं हो जाता, कि क्या बात है, कि यह अपने आपको मख़्लूक़ के ज़रीए क़ुबूल करवाना चाहता है। हालांकि अल्लाह की तरफ़ से क़ुबूलियत का एलान होता है, फिर वह क़ुबूलियत सातवें आसमान से छटे आसमान पर छटे से पांचवें पर, पांचवें से चौथे, चौथे से तीसरे, तीसरे से दूसरे, दूसरे से पहले, और फिर पहले आसमान से वह क़ुबूलियत इस ज़मीन पर उतारी जाती है। मेरे दोस्तो, काम अल्लाह उस से लेते हैं जो तक़ाज़ों पर ख़ुद खड़ा होता है।

यह नहीं कि किसी के इसरार करने पर यह तैयार हो। मैं तो बार-बार यह बात अर्ज़ करता हूं कि भाई मज्मे को काम समझाओ ताकि जो काम कर रहा है उसे कुछ तो ख़बर हो कि मैं यह काम क्यों कर रहा हूँ। किसी ने अपने हालात सुनाए तो

किसी तब्लीग़ी आदमी ने उस से कहा कि तुम 4 महीने लगा लो तुम्हारे सारे हालात दूर हो जायेंगे। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने फ़रमाया कि काम में लगने वालों की तीन क़िस्में हैं। एक क़िस्म तो वह है जो फ़ुर्सत की वजह से काम करते हैं। एक क़िस्म वह है जो अपने हालात और परेशानी की वजह से काम कर रहे हैं और एक क़िस्म वह है जो अपने आप को बदलने के लिए काम कर रहे हैं इनमें से ऊपर वाली जो दो क़िस्में हैं, इन दोनों क़िस्मों के लोग कभी भी कलिमे की हक़ीक़त को पा ही नहीं सकते, तो एक साहब ने हज़रत से पूछा कि यह हालात वाले और फ़ुर्सत वाले कौन हैं। तो हज़रत ने फ़रमाया कि एक तब्क़ा तब्लीग़ में वह चल रहा है, बहुत बड़ा तब्क़ा, जिसको तशकील करने वालों ने तर्ग़ीब देने वालों ने यूं कहा है कि अगर तू जमाअ़त में चला जा तो तेरी बीमारियां तेरी परेशानियां, तेरे क़र्ज़े, तेरे मुक़द्दमें सब हल हो जायेंगे, सब ख़त्म हो जाएंगे बस तू 4 महीने लगाले और एक तब्क़ा वह है जो फ़ुर्सत लेकर आता है कि 10 दिन 5 दिन 40 दिन 4 महीने अपने कारोबार के सीज़न के ऐतिबार से कि चलो बारिश में काम कोई है नहीं 40 दिन लगालें, या फ़सल बो ही दी काटने तक वक़्त ख़ाली है या इस मौसम में हमारा धंदा ढीला पड़ जाता है तो सोचा 4 महीने क्या करेंगे तो चलो जमाअ़त में चले जायें। हज़रत ने फ़रमाया कि एक हैं क़ुरबानी पर जुड़ने वाले और एक तब्क़ा वह है जिसने इस काम को अपने मामूल में दाख़िल किया हुआ है।

फ़रमाते थे ये फ़ुर्सत वाले और हालात वाले ये दोनों तब्क़े काम में चलते रहेंगे, जब तक इस काम से इनके दुनिया के तक़ाज़े पूरे होते रहे अगर इन लोगों के ज़ाती तक़ाज़े इस काम

से पूरे होते रहे तब भी ये काम से गये और अगर इनके तक़ाज़े इस काम से पूरे न हुए तब भी ये काम से गए। इस लिए कि यह वह तब्क़ा है जिसको मक़्सूद पर नहीं उठाया गया मौक़ूद पर उठाया गया है। कि जो जमाअ़त में जायेगा उसकी खेतियों में बरकत हो जायेगी।

नहीं, मेरे दोस्तो हम अपने मज्मे को हरगिज़ दुनियावी वादों और दुनिया के मसाइल के हल होने की बुनियाद पर न उठावें। वरना एक तब्क़ा इस वक़्त वह है जो इस पर चल रहा है, उनको अ़क़ीदत है इस काम से।

देखो मेरे दोस्तो अक़ीदत और होती है और बसीरत और होती है। अक़ीदत के मामले में मैं एक बात अ़र्ज़ करूं जो उम्मत के अन्दर एक बात आ़म है। वह यह कि किसी को किसी बुज़ुर्ग से अ़क़ीदत है उनके पास आते जाते रहे उनके पास जाकर अपने मसाइल रखते रहे जब देखा कि इन से तो कोई मस्अला हल होता ही नहीं, तो उनको छोड़ कर फिर किसी दूसरे बुज़ुर्ग के पास चले गए।

मेरे पास एक साहब ने ख़त लिखा कि जब मैं बहुत परेशान था तो मैंने अपने हालात एक बुज़ुर्ग को सुनाए, उन्होंने कहा कि तुम तहज्जुद में उठकर दुआ मांगो, तो मैंने तहज्जुद में उठने की कोशिश की लेकिन मैं तहज्जुद में उठ न सका। फिर मैंने एक साहब से कहा कि मैं तहज्जुद में उठ नहीं सकता तो उन्होंने कहा कि तुम जमाअ़त में चले जाओ वहां तुम्हें तहज्जुद में कोई ज़रूर उठावेगा। तो मैं जमाअ़त में गया तीन दिन की, तो वहां अमीर साहब ने उठाया, तहज्जुद में उठकर अपने मसाइल को अल्लाह से रो-रो कर मांगा तो अब तक मेरा वह काम हुआ ही

नहीं तो इसकी क्या वजह है। मैंने उसको यह जवाब लिखा कि भाई इसकी वजह यह है कि तू अपने दुनियावी तक़ाज़े पूरा करने के लिए जमाअ़त में गया था।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! बात तो ज़रा सख़्त है लेकिन हक़ीक़त यह है कि, एक तो अल्लाह के यहां ज़र्रा बराबर भी शिर्क नहीं चलता सारा अ़मल अल्लाह के लिए होकर अगर एक लम्हा भी अ़मल का कोई हिस्सा अल्लाह के ग़ैर के लिए है तो अल्लाह के यहां सारे का सारा इख़्लास से क्या हुआ यह अ़मल ज़रा सा भी अल्लाह के ग़ैर के लिए है तो यह क़ुबूल नहीं होता, बल्कि यह अ़मल मरदूद क़रार दे दिया जाता है।

यह बात नहीं है कि अल्लाह के यहां इतना अ़मल क़ुबूल हो जावे जितना अ़मल इख़्लास वाला था और जितने में इख़्लास नहीं है वह क़ुबूल न हो, यह बात नहीं है बल्कि अ़मल के टुकड़े नहीं होते कि इख़्लास वाला अलग और अग़राज़ वाला अलग-अलग कर दिया जाये। अगर अ़मल के ज़र्रे में भी शिर्क यानी अग़राज़ होगा तो वह अल्लाह की तरफ़ से पूरा पूरा मरदूद हो जायेगा। इख़्लास की अदना सतह यह है कि अ़मल सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो और उस से आगे की सतह यह है कि अ़मल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए हो और अ़मल के वादे का पूरा-पूरा यक़ीन हो कि अल्लाह इस पर यह देंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो आज तो निय्यत कर लो, कि हमें अपनी मेहनत के मैदान को बदलना है। और अपनी मेहनत के रुख़ को बदल कर अंबिया वाले काम को अपना काम बनाना है। और अल्लाह तआ़ला के ख़ज़ानों से एक एक उम्मती को जोड़ना है, और ख़ुद अल्लाह के ख़ज़ानों से जुड़ना है।

इसलिए अब निय्यत करो, चार-चार महीने की। इस काम को सीखने के लिए और ज़िन्दगी भर इस काम को करने के लिए।

"गश्त"

गश्त का अ़मल इस काम में रीढ़ की हड्डी की तरह अहमियत रखता है। अगर यह अ़मल सही होगा, तब तो यह क़ुबूल होगा यानी दावत क़ुबूल होगी, दावत क़ुबूल होगी तो दुआ़ क़ुबूल होगी, दुआ़ क़ुबूल होगी तब हिदायत उतरेगी। और अगर गश्त क़ुबूल नहीं हुआ तो दावत क़ुबूल नहीं होगी, अगर दावत क़ुबूल नहीं होगी तो दुआ़ क़ुबूल नहीं होगी, जब दुआ़ क़ुबूल नहीं होगी तो हिदायत आसमानों से नहीं उतरेगी।

इसलिए मक़्सद को सामने रखकर इसे करना है।

"गश्त का मक़्सद"

इसका मक़्सद यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने हमारे और सारे इन्सानों के दुनिया और आख़िरत के सारे हालात के मसाइल का हल "अपने अवामिर (हुक्मों) को हज़रत मुहम्मद स० के तरीक़े पर पूरा करने में रखा है" ये दोनों चीज़ें हमारी ज़िन्दगी में आ जायें, इसके लिए यह मेहनत शर्त है। इसी आ़ली मेहनत को बस्ती के मुसलमान करने वाले बन जायें, इस पर आमादा करने के लिए, गश्त कर के मस्जिद में जमा करना है। यह है गश्त का मक़्सद। इस मक़्सद के लिए गश्त को किया जाये।

नमाज़ के बाद लोगों को ऐलान करके रोका जाये।

ऐलान कोई बस्ती का बा असर आदमी या इमाम साहब करें तो ज़्यादा मुनासिब है। वे हम को कहें तो हमारा साथी कर दे।

गश्त का मक़्सद, ज़रूरत, उसूल, आदाब और क़ीमत बताई जाये।

जो लोग गश्त करने के लिए तैयार हों तो उन्हें अच्छी तरह उसूल और गश्त करने का तरीक़ा समझाया जाये।

''गश्त के उसूल''

1. गश्त के दौरान अपने दिल में ख़ूब इस बात का यक़ीन जमाने की कोशिश करें कि हमारे तमाम मसाइल का तअ़ल्लुक़ बराहे रास्त अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ाते आ़ली से है, इन बाज़ार में फैली हुई चीज़ों से हमारा कोई मस्अला हल होने वाला नहीं।
2. चीज़ों की तरफ़ अगर हमारा दिल फिर गया तो फिर हम जिनके पास जा रहे हैं उनका दिल इन चीज़ों से अल्लाह की तरफ़ कैसे फिरेगा।
3. चीज़ों पर निगाह न पड़े, ध्यान न जाये।
4. चीज़ों पर अगर निगाह पड़ जाये, तो हम इन्हें मिट्टी ही समझें क्योंकि ये मिट्टी से बनी हैं और फिर मिट्टी हो जायेंगी।
5. निगाहों की हिफ़ाज़त करनी है।
6. अल्लाह का ज़िक्र करते हुए चलना है।
7. बरज़ख़ यानी क़ब्र का दाख़िला हमारे सामने हो।
8. अमीर की इताअ़त करें।
9. वापसी में इस्तिग़फ़ार करते हुए आना है।

10. इस तरह इन उसूलों के मुज़ाकरे के बाद गश्त करने के आदाब समझायें।

"गश्त के आदाब"

1. मिल जुल कर चलना है।
2. एक ही आदमी बात करे।
3. गश्त करने आठ दस आदमी जायें।
4. मस्जिद के क़रीब के मकानों पर गश्त करें, मकान न हों तो बाज़ार में कर लें।
5. जमाअ़त में ज़्यादा आदमी ऐसे जायें, जो गश्त में उसूलों की पाबन्दी कर लें।
6. नये आदमी ज़्यादा तैयार हो जायें तो उनको समझा बुझा कर मस्जिद में रोक दें तीन चार आदमी चाहें तो साथ ले लें।
7. जिस से मुलाक़ात करें उस से यह कहें कि भाई, हम मुसलमान हैं हमने कलिमा ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का इक़रार किया है। हमारा यक़ीन है कि अल्लाह पालने वाले हैं। नफ़ा व नुक़्सान, इज़्ज़त व ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है। अगर हम अल्लाह के हुक्म पर और हुज़ूर स० के तरीक़े पर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह राज़ी होकर हमारी ज़िन्दगी बना देंगे सब की ज़िन्दगी अल्लाह पाक के हुक्म के मुताबिक़ हुज़ूर के तरीक़े पर आ जाये, इस के लिए भाई मस्जिद में कुछ फ़िक्र की बात हो रही है।
8. कामियाब है वह बात करने वाला जो मुख़्तसर बात

करके आदमी को नक़द मस्जिद में भेज दे।

9. जो लोग नमाज़ अदा कर चुके हों तो उन्हें भी मस्जिद में भेज दें।

10. ज़रूरत हो तो अगली नमाज़ को मस्जिद में जाने का उनवान बना लें।

"अब चार जमाअ़ते बनाई जायें"

1. इस तरह काम समझाने के बाद एक जमाअ़त दुआ़ मांग कर गश्त के लिए बस्ती में चली जाये।

2. मस्जिद में एक या दो साथी अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह होकर दुआ़ व ज़िक्र में मशग़ूल रहें।

3. एक या दो साथी मस्जिद में आने वालों का इस्तिक़्बाल करें, ज़रूरत हो तो वुज़ू कराकर नमाज़ अदा करा दें।

4. एक साथी ज़िन्दगी का मक़्सद समझाने में सब को नमाज़ तक मशग़ूल रखे।

"इस काम में अगर अपने आपको उसूल सीखने का मोहताज न समझा गया और अगर उसूलों के मुताबिक़ काम न हुआ तो "सख़्त फ़ितनों का ख़तरा है"।

कम से कम पौन घन्टे गश्त हो। नमाज़ से सात आठ मिनट पहले गश्त करके मस्जिद में आ जायें। तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ में शरीक हों। जिस साथी के बारे में मशवरा हो जाये वह मज्मे को समझाए कि अल्लाह पाक की ज़ाते आ़ली से तअ़ल्लुक़ क़ायम हुआ तो दुनिया और आख़िरत में क्या नफ़ा होगा और

अगर अल्लाह पाक की ज़ाते आली से तअल्लुक़ क़ायम न हुआ तो दुनिया और आख़िरत में क्या नुक़्सान होगा जैस इसमें 6 नम्बर का मुज़ाकरा किया है। इस तर्ज़ पर नम्बर का मक़्सद इसका नफ़ा इसकी क़ीमत और इसके हासिल करने का तरीक़ा बताया जाये। सादा अन्दाज़ में बात हो। इस से इन्शाअल्लाह मज्मे की समझ में काम आएगा और इसकी ज़रूरत भी महसूस करेगा। और समझेगा कि हम भी सीख सकते हैं। हमारे साथी भी मुज़ाकरे में एहतिमाम से जम कर बैठें। मुतवज्जह होकर मोहताज बन कर सुनें। जो बात कही जा रही है, हम अपने दिल से कहें कि यही हक़ है ऐसा कहने से दिल में ईमान की लहरें उठेंगी और अ़मल का जज़्बा बनेगा। 3 चिल्लों की बात जम कर रखी जाये। नक़द नाम लिखे जायें उसके बाद चिल्लों के लिए वक़्त लिखा जाये और फिर जिस वक़्त के लिए तैयार हो क़ुबूल कर लिया जाये। मुतालबा और तश्कील की मेहनत से सारी दावत का मग़्ज़ बनता है।

अगर मुतालबों और तशकीलों पर जम कर मेहनत न हुई तो फिर काम की बात रह जायेगी और क़ुरबानी वुजूद में न आयेगी तो काम की जान निकल जायेगी। दावत देने वाला तश्कील करे एक आदमी खड़े होकर नाम लिखे। नाम लिखने वाला मुस्तक़िल तक़रीर शुरू न कर दे। एक दो जुमले तर्ग़ीब के कह सकता है। फिर आपस में एक दूसरे को आमादा करने को कहा जाए, फ़िक्र के साथ अपने क़रीब बैठने वालों को तैयार किया जाये। उज़्र का दिल जोई और तर्ग़ीब के साथ हल बताया जाये। अंबिया और सहाबा के क़िस्सों की तरफ़ इशारा करें। और फिर आमादा करें आख़िर में मुक़ामी (5) काम करने के लिए मस्जिद वार जमाअ़त बनाई जाये और उनसे मुक़ामी काम शुरू कराया जाये। मुज़ाकरे

में अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम और सहाबा रज़ि० के साथ अल्लाह पाक ने जो मदद फ़रमाई है उसे बयान किया जाये। बयान में हालात-ए-हाज़िरा की बातें न की जायें। उम्मत में जो ईमानी, आमाली, अख़्लाक़ी कम्ज़ोरियाँ आ चुकी हैं उनके तज़किरे करने से बेहतर है कि असल ख़ूबियों की तरफ़ यानी जो बात पैदा होनी चाहिए उसकी तरफ़ मुतवज्जह किया जाये।

असल काम की शक्लें, दावत, गश्त, तालीम, तश्कील वग़ैरा है। मशवरा की ज़रूरत हो मुनासिब साथियों को अलग करके मश्वरा कर लिया जाये ऐसा न हो मशवरा करने वालों का किसी मौक़ा पर उ़मूमी आमाल से जोड़ न रहे।

यह काम बहुत नाज़ुक है हुज़ूर स० ने एक मेहनत फ़रमाई इस मेहनत से सारे इन्सानों की सारी ज़िन्दगी के खाने कमाने, बियाह शादी, मेल मुलाक़ात, इबादत, मुआ़मलात वग़ैरा के तरीक़े में मुकम्मल तब्दीलियां आयीं, तो आप स० ने ख़ुद इस मेहनत के तरीक़े बतलाए होंगे, हमें अभी यह काम करना नहीं आता और अभी हक़ीक़ी काम शुरू भी नहीं हुआ है। काम उस दिन शुरू होगा जब ईमान व यक़ीन, अल्लाह की मुहब्बत, अल्लाह के ध्यान, आख़िरत की फ़िक्र, अल्लाह के ख़ौफ़ व तक़्वे से भरे हुए लोग हुज़ूर स० के आ़ली अख़्लाक़ से मुज़ैयन होकर अल्लाह की रज़ा के जज़्बे से मख़्मूर होकर अल्लाह की राह में जान देने के शौक़ से फिरेंगे।

अभी जो हम को काम की बरकतें नज़र आ रही हैं। वे काम शुरू होने से पहले की बरकतें हैं। जैसे हुज़ूर स० की विलादत के वक़्त से ही बरकतों का ज़ुहूर शुरू हुआ था, लेकिन असल काम और असल बरकतें चालीस साल बाद शुरू हुई थीं। अभी तो इसके लिए मेहनत हो रही है कि काम करने वाले तैयार हो जायें। अल्लाह पाक काम उन से लेगा और हिदायत फैलाने का

ज़रीया उनको बनाएगा, जिनकी अपनी ज़िन्दगी दावत के मुताबिक़ बदलेगी, जिनकी ज़िन्दगी में तब्दीली न आएगी अल्लाह पाक उनसे इस दावत का काम न लेंगे, यह नबियों वाला काम है। इस काम में अगर अपने आपको उसूल सीखने का मोहताज न समझा गया और उसूलों के मुताबिक़ काम न हुआ तो सख़्त फ़ितनों का ख़तरा है।

हुज़ूर स० ने जब बाहर मुल्क में काम शुरू करने का इरादा बनाया तो पहले तमाम सहाबा को तीन-तीन दिन तक तर्ग़ीब दी और फिर फ़रमाया कि जिस तर्ज़ पर यहां काम हुआ है बिल्कुल इसी तर्ज़ पर बाहर जाकर भी करना है।

इस काम की नौइयत यही है, मुक़ाम, ज़बान, मुआ़शरत, मौसम, वग़ैरा के ऐतिबार से इस काम के उसूल नहीं बदलते। इस काम का तरीक़ा और उसूलों को सीखने और उन पर क़ायम रहने के लिए इस फ़िज़ा में आना और बार-बार (बंगले वाली मस्जिद, दिल्ली) आते रहना इन्तिहाई ज़रूरी है।

‘‘तालीम’’

यह फ़ज़ाइल की तालीम एक ख़ास तरह की तालीम है इस तालीम से ऐहतिसाब को बढ़ाना है, इस तालीम का मक़्सद तालीम की मश्क़ से उम्मत का यक़ीन अस्बाब से निकल कर, अल्लाह के अवामिर (हुक्मों) की तरफ़ फिर जाये।

तालीम के उसूल :

1.तालीम में ध्यान, अ़ज़्मत, मुहब्बत, अदब और तवज्जोह के साथ बैठने की मेहनत की जाये। 2. सहारा न लगाया जाये। 3. बावुज़ू बैठने की कोशिश की जाये। 4. तबीअ़त के बहानों की वजह से तालीम के दौरान न उठा जाये, 5. बात न की जाये।

अगर इस तरह बैठेंगे तो फ़रिश्ते इस मज्लिस को अपने परों से ढाक लेंगे। अहले मज्लिस में ताअ़त का माद्दा पैदा होगा। अज़्मत की मश्क़ से हदीस पाक का वह नूर दिल में आयेगा जिससे यक़ीन वाले अ़मल की हिदायत मिलती है।

बैठते ही उसूल व आदाब और मक़्सद की तरफ़ मुतवज्जह किया जाये।

तालीम के आदाब

इस तालीम के तीन अज्ज़ा हैं, 1. क़ुरआन के हल्क़े, 2. फ़ज़ाइल की तालीम 3. फ़ज़ाइल के मुज़ाकरे, क़ुरआन के हल्क़े:

1. फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद पढ़ कर थोड़ी देर कलाम पाक की उन सूरतों की तज्वीद की मश्क़ की जाये जो उमूमन नमाज़ में पढ़ी जाती हैं।
2. अत्तहिय्यात, दुआए क़ुनूत, दरूद शरीफ़, दुआए मासूरा वग़ैरा का मुज़ाकरा व तस्हीह इज्तिमाई तालीम में न हो। इन्फ़िरादी सीखने– सिखाने में इन को सही कराया जाये।
3. अल्लाह पाक तौफ़ीक़ दे तो हर किताब में से 3–4 सफ़्हे पढ़े जायें।
4. हर हदीस को तीन-तीन बार ठहर-ठहर कर पढ़ा जाये।
5. तालीम में अपनी तरफ़ से तक़रीर न हो। हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० की फ़ज़ाइले आमाल हिस्सा अव्वल और दोम यानी फ़ज़ाइले सदक़ात ये किताब हैं जिनको इज्तिमाई तालीम में पढ़ना और सुनाना है और तन्हाइयों में बैठ कर भी इनको पढ़ना है।

किताब के बाद 6 नम्बर का मुज़ाकरा हो। साथियों से 6 नम्बर की मेहनत बतलाकर उन्हें भी इनकी हक़ीक़त हासिल हो इसके लिए इन नम्बरों की मेहनत करने पर लगाया जाये। जब तालीम शुरू की जाये तो अपने में से दो साथियों को तालीमी गश्त के लिये भेज दिया जाये, 15—20 मिनट बाद वे आ जायें तो दूसरे साथी चले जायें। इस तरह बस्ती वालों को तालीम में शरीक करने की कोशिश की जाये। बाहर निकलने के ज़माने में रोज़ाना सुबह और बाद ज़ुहर दोनों वक़्त तालीम 2—3 घन्टे की जाये और अपने मुक़ाम पर रोज़ाना इसी तर्तीब से एक घन्टा तालीम हो।

अब इस तालीम को बार-बार सुनने और बार-बार सुनाने फिर तालीम के अ़लावा के वक़्त में इन फ़ज़ाइल पर ग़ौर करने, और जो तालीम में सुना है, उसे बाज़ार, घर, और बाहर के हर शोबे के माहौल में, इस तालीम को ले जाना और इसके यक़ीन की तरफ़ बुलाना, और जिस वक़्त जिस अ़मल के करने का वक़्त आये, उस अ़मल से पहले फ़ज़ाइल की मश्क़ करना।

अब तालीम कराने वाले की अपने अन्दर की फ़िक्र और कोशिश ये हो कि सबसे पहले ख़ुद अपनी ज़ात का और सारे सुनने वालों का यक़ीन दुनिया के सारे अस्बाबों से आमाल की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाये।

तालीम की मेहनत :

हर अ़मल से हपले आमाल पर जो अल्लाह के वादे हैं उन वादों का अ़मल करने से पहले मुज़ाकरा करना, यह असल में तालीम की मेहनत है, इस मेहनत के करने से तालीम का मक़्सद

पूरा होगा।

अल्लाह के रास्ते में जाने वालों को हिदायात

आफ़ताब नूरानी है, इसके अन्दर नूर है, वे अपने इस नूर के साथ चक्कर लगाता है तो दुनिया में नूर फैलता है। अगर बजाए नूरानी होने के वह ज़ुल्माती (काला) होता और उसमें नूर के बजाए अंधेरा होता तो वह दुनिया में अंधेरा फैलान का ज़रीया बनता। आप लोग अपने घर छोड़ कर निकल रहे हैं, और दूर-क़रीब की दुनिया में फिरेंगे। अगर आप में नूर होगा तो आपके ज़रीये नूर फैलेगा और अगर आप के अन्दर ज़ुल्मत होगी तो वही ज़ुल्मत फैलेगी। इस लिये आप लोगों को कोशिश करनी है कि आप के अन्दर नूर हो और आप ख़ुद नूरानी बनें। किसी इन्सान की ज़ात में नूर नहीं है। नूर वाली चीज़ों से नूर इन्सान के अन्दर आता है। इस लिये आप लोगों को नूर वाले आमाल इख़्तियार करने हैं ताकि आप लोगों के अन्दर नूर आ जाये और आप लोगों के ज़रीये नूर फैले। और ज़ुल्मत वाले आमाल से अपने आपको बचाना है ताकि ज़ुल्मत न फैले और हम ज़ुल्मत फैलने का ज़रीया न बनें। नूर वाले आमाल वे मुहम्मदी आमाल हैं जो अल्लाह की रज़ा के लिये किये जायें, इन आमाल को इतनी कसरत से और लगातार और यकसूई के साथ करने की ज़रूरत है कि आप इनके नूरानी रंग में रंग जायें।

वे नूरानी आमाल ये हैं

1. इख़्लास के साथ ईमान व यक़ीन हासिल करने की दावत जो अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की ख़ास मीरास और अल्लाह की

मख़लूक़ के साथ सबसे बड़ी ख़ैर-ख़्वाही है।

2. नमाज़ और जुम्ला इबादात जिसमें ज़िक्र, दुआ व इस्तिग़फ़ार सब शामिल हैं।

3. इल्म में मशग़ूलियत ख़ास कर वह इल्म जिसमें इन्सानों के आमाल व अफ़आल के दुनिया और आख़िरत में ज़ाहिर होने वाले नतीजों का बयान हो।

4.अच्छे अख़्लाक़ जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अख़्लाक़ थे और जिनकी आपने तालीम दी थी जिसका ख़ुलासा और हासिल यह है कि अल्लाह की रज़ा के लिए उसकी मख़्लूक़ की ख़िदमत और उसके साथ अच्छा बर्ताव।

ये हैं वे नूरानी आमाल जिनको लगातार और कसरत से करने से नूर पैदा होता है, और ज़िन्दगी बनती है। आप लोगों को इन्हीं आमाल में मशग़ूल रहते हुए फिरना है। याद रखें आप सिर्फ़ अपने घर वालों और अपने ख़ास माहौल को छोड़ कर जा रहे हैं। नफ़्स और शैतान और बुरी आदतों को छोड़ कर नहीं जा रहे हैं, ये तीनों दुश्मन हर क़दम पर और दिन-रात आपके साथ रहेंगे। ये तीनों चीज़ें आपको उन आमाल की तरफ़ खीचेंगी जिनसे आप में ज़ुल्मत आये और आप ख़ुदा से दूर और उसकी रज़ा से महरूम हों। आप इन दुश्मनों के शर से सिर्फ़ इस तरह बच सकते हैं कि इस बात का पूरा एहतिमाम करें कि सोने के 6 घन्टों के अलावा दिन और रात के तमाम औक़ात में अपने आपको इन नूरानी आमाल में मशग़ूल रखें।

1. या आप ईमान की और ईमान वाले आमाल की दावत दे रहे हों।

2. या नमाज़ और ज़िक्र व तिलावत वग़ैरा किसी इबादत में मशग़ूल हों।

3. या सीखने-सिखलाने में लगे हों।

4. या कोई ख़िदमत वाला काम अन्जाम दे रहे हों।

नफ़्स और शैतान के शर से बचने की सिर्फ़ यही एक सूरत है कि आपका वक़्त इन कामों से फ़ारिग़ और ख़ाली न हो।

फिर ये आमाल भी नूर हासिल करने का ज़रीया इसी सूरत में बनेंगे जब कि सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिये और आख़िरत के सवाब पर निगाह रखते हुए किये जायें, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता निय्यत ख़ालिस न रही तो यही आमाल जहन्नम में खींच ले जायेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० की मशहूर हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि क़यामत में सब से पहले तीन आदमियों के बारे में जहन्नम का फ़ैसला होगा और जहन्नम में सबसे पहले इन्हीं को फूंका जायेगा इन में एक वह आलिम-ए-दीन और आ़लिम-ए-क़ुरआन होगा जो उम्र भर क़ुरआन सीखने—सिखाने में मशग़ूल रहा। दूसरा एक दौलत मन्द सख़ी होगा जिसको अल्लाह ने दुनिया में ख़ूब दौलत से नवाज़ा था और वह अल्लाह की दी हुई दौलत, नेकी के कामों में ख़ूब दिल खोल कर ख़र्च करता था। और तीसरा शख़्स एक शहीद होगा। जो जिहाद के मैदान में दुश्मनों की तलवार से शहीद हुआ होगा। लेकिन इन तीनों आदमियों ने ये आमाल दुनिया में नामवरी, शोहरत, और इज़्ज़त हासिल करने के लिये किये थे।

सोचो तो किस क़दर लरज़ा देने वाली है यह हदीस। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० इस हदीस को रिवायत फ़रमाते तो कभी—कभी मारे ख़ौफ़ के इनकी चींख़ निकल जाती और उन

पर बेहोशी का दौरा पड़ जाता था। और एक दफ़ा जब ताबई ने यही हदीस हज़रत अबू हुरैरा से सुनकर हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० के सामने नक़ल की तो हज़रत अमीर मुआविया इतना रोए कि लोगों को उनकी जान का ख़तरा हो गया, बहुत देर के बाद उन की हालत ठीक हुई।

बहरहाल नूरानी आमाल नूर पैदा करने का ज़रीया उसी सूरत में हो सकते हैं जब कि वे ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिये और आख़िरत के लिये किये जायें इसलिये आपको एक तरफ़ तो अपना तमाम वक़्त इन्हीं आमाल में मशग़ूल रखने में और दूसरी तरफ़ इसका भी एहतिमाम करना है कि निय्यत सही रहे। जब किसी बन्दे को अच्छे आमाल से शैतान हटा नहीं सकता तो उसकी निय्यत में फ़साद डालने की कोशिश करता है। इससे अपने आपको बचाना है।

मैं बता चुका हूं कि इस निकलने के ज़माने में बस चारों कामों में अपने आपको मशग़ूल रखना है। सबसे पहली चीज़ है ईमान व यक़ीन की और ईमान वाले आमाल की दावत। इस दावत के लिये उ़मूमी गश्त होंगे, ख़ुसूसी गश्त होंगे। जिनके उसूल व आदाब-गश्त के लिये निकलते वक़्त बतलायें जायेंगे। इन को ध्यान से सुना जाये। फिर जब आप दावत के लिये गलियों और बाज़ारों में निकलेंगे तो शैतान आपको वहां के नक़्शों की तरफ़ मुतवज्जह करेगा। इसलिये सबसे पहले दुआ़ करनी चाहिए कि ऐ अल्लाह शैतान व नफ़्स के शर से बचाले और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करने की तौफ़ीक़ दे। पूरे गश्त में इसका एहतिमाम रहे कि बस अल्लाह के जमाल और जलाल पर और उसकी सिफ़ाते आ़लिया पर नज़र रहे। निगाहें

नीची रहें और अपना मक़्सद निगाह के सामने रहे जिस तरह जब किसी मरीज़ को अस्पताल लेकर जाते हैं, तो ख़ुद मरीज़ और उसके साथी अस्पताल की आ़लीशान इमारतों को और वहां के नक़्शों को दिलचस्पी से नहीं देखते बल्कि उनके सामने बस मरीज़ का इलाज होता है।

ख़ुसूसी गश्त में अगर देखा जाये कि वह साहब जिन से आप मिलने गये हैं उस वक़्त तवज्जोह से बात सुनने के लिये तैयार नहीं हैं तो मुनासिब तरीक़े से जल्दी बात ख़त्म करके उनके पास से उठ जाना चाहिए और उनके लिये दुआ़ करनी चाहिए और अगर देखा जाये कि वह साहब मुतवज्जह हैं तो फिर पूरी बात इनके सामने रखी जाये और वक़्त फ़ारिग़ करने के लिये भी कहा जाये। ख़ुसूसी गश्त में जब दीनी अकाबिर की ख़िदमत में हाज़िरी हो तो उन से सिर्फ़ दुआ़ की दरख़्वास्त की जाये और उनकी तवज्जोह देखी जाये तो काम का कुछ ज़िक्र कर दिया जाये।

उ़मूमी गश्त कर के लोगों को मस्जिद में जमा किया जाये और उनके सामने ईमान व यक़ीन, नमाज़, इल्म—ज़िक्र, अख़्लाक़, इख़्लास और दावत की बात रखी जाये और तश्कील की कोशिश की जाये फिर तश्कील करके मुतमइन न हो जायें बल्कि जिन लोगों ने इरादे किये हैं और नाम लिखाये हैं उनको अल्लाह के रास्ते में निकाल देने की और इरादों को अ़मल में लाने की कोशिश करें और अपने इम्कान भर इसका इन्तिज़ाम करें कि इनका वक़्त अच्छी तरह गुज़रे—जो लोग इस वक़्त निकलने का फ़ैसला न कर सके हों, उनको मुक़ामी गश्त, मुक़ामी इज्तिमा, मस्जिद की और घर की तालीम वग़ैरा की

पाबन्दी पर आमादा किया जाये और इन कामों का वहां पर नज़्म बना दिया जाये। जब दावत के सिलसिले की ये सारी मेहनत कर चुकें तो उस किसान की तरह जो ज़मीन में बीज बिखेर देता है और फिर अल्लाह से लौ लगाता है। उसी तरह मेहनत के बाद अब अल्लाह से दुआ़ करे। वही दिलों को फेरने वाला है।

दावत के बाद दूसरा काम तालीम का है, जब तालीम के लिये बैठें तो अदब से बैठें, बावुज़ू बैठने की कोशिश करें, आपस में बातें न करें, तालीम के दौरान तबीअ़त के बहानों की वजह से न उठें जमकर बैठें। जो वक़्त दावत और तालीम से ख़ाली हो और कोई दूसरा ज़रूरी काम भी उस वक़्त न हो उसमें नवाफ़िल पढ़ें क़ुरआन की तिलावत करें, तस्बीह पढ़ें, या अल्लाह के किसी बन्दे की ख़िदमत करें। जिस तरह नमाज़ में आदमी या क़याम में होता है या रुकू में होता है या सज्दे में या क़अ़्दे में, इसी तरह अल्लाह के रास्ते में निकलने के बाद आदमी या दावत में लगा हो, या तालीम में लगा हो, या ज़िक्र व इबादत में या अल्लाह की किसी मख़्लूक़ की ख़िदमत में ये चार काम इतने किये जाएं कि यही आ़दत और मिजाज़ बन जाये। ये चारों काम इज्तिमाई भी किये जायेंगे और इन्फ़िरादी भी किये जायेंगे। इज्तिमाई से मुराद वह है जो जमात के मश्वरे से तय हो जैसेः- ख़ुसूसी गश्त और उ़मूमी गश्त में दावत और जमाअ़त की तालीम के वक़्त में तालीम और जमाअ़त के साथ फ़र्ज़ नमाज़ और जमाअ़ती तक़्सीम कार के मुताबिक़ खाने वग़ैरा के इन्तिज़ाम के तहत दौड़-धूप। ये सब आमाल इज्तिमाई हैं। इन्फ़िरादी दावत इन्फ़िरादी तालीम इन्फ़िरादी इबादत इन्फ़िरादी

ख़िदमत वह होगी जो जमाअत के मश्वरे के अलावा कोई शख़्स अपने उस ख़ाली वक़्त में करे जिसमें कोई इज्तिमाई काम न हो। मसलन दोपहर के खाने के बाद ज़ोहर तक कोई इज्तिमाई अमल नहीं हो तो हर शख़्स को इख़्तियार है कि इसमें आराम करे। अब अगर कोई अल्लाह का बन्दा अपने इस वक़्त में आराम करने के बजाय किसी शख़्स के पास जाकर दावत व ईमान की बातें करे या किसी अल्लाह के बन्दे को दुआ याद कराये या इसकी नमाज़ सही करे या मस्जिद के किसी कोने में खड़ा होकर नवाफ़िल पढ़े या किसी साथी की कोई ख़िदमत करने लगे तो ये सब सूरते इन्फ़िरादी आमाल की होंगी।

बहरहाल अल्लाह के रास्ते में निकलने के ज़माने में ये चार काम असल मक़सद के तौर पर किये जायें और हाजते बशरी के अलावा अपने सारे वक़्त को इन्हीं कामों में मशग़ूल रखा जाये तब उनके ज़रीये ज़िन्दगी में नूर आयेगा और फिर इन्शा अल्लाह वह नूर फ़ायदेमन्द होगा और फैलेगा। इन चार कामों के अलावा चार ही काम ज़रूरत के तौर पर किये जायेंगे और सिर्फ़ बक़द्रे ज़रूरत ही किये जायेंगे वे चार काम ये हैं–

1. खाना-पीना 2. पेशाब-पाख़ाना 3. सोना 4.ज़रूरत की बातचीत करना, ये वक़्ती ज़रूरतें हैं इनको बस इतना ही वक़्त दिया जाये जितनी ज़रूरत हो, सोने के लिये दिन-रात में बस 6 घन्टे काफ़ी हैं।

चार बातें वे हैं जिनसे पूरे एहतिमाम से बचना है।

1. किसी से सवाल न करना बल्कि किसी के सामने अपनी कोई ज़रूरत ज़ाहिर भी न करना, यह भी एक तरह का सवाल है।

2. इशराफ़ से भी बचा जाये, इशराफ़ ये है कि ज़बान से तो सवाल न करें लेकिन दिल में किसी बन्दें से कुछ हासिल होने की उम्मीद हो, गोया बजाय ज़बान के दिल में सवाल हुआ।

3. इसराफ़ से भी बचा जाये, इसराफ़ फ़ुज़ूल ख़र्च हर हाल में नुक़्सान दे है। लेकिन अल्लाह के रास्ते में निकलने के ज़माने में इसके नतीजे अपने हक़ में भी बहुत बुरे होते हैं। और दूसरे साथियों के हक़ में भी।

4. बग़ैर इजाज़त किसी साथी की भी कोई चीज़ इस्तिमाल न करे। कभी कभी दूसरे आदमी को इससे बड़ी तक्लीफ़ पहुंचती है और शरीअ़त में यह बिल्कुल हराम है। हां इजाज़त लेकर इस्तिमाल करने में कोई हरज नहीं है।

बस ये ज़रूरी-ज़रूरी बातें जिनकी पाबन्दी इस रास्ते में निकलने वाले के लिये ज़रूरी है। आप लोगों के 24 घण्टें इन पाबन्दियों के साथ गुज़रने चाहिए। इन आमाल की पूरी पाबन्दी करते हुए आप अल्लाह की ज़मीन में और अल्लाह की मख़्लूक़ में फिरें और अपने लिये और पूरी उम्त के लिये और आम इन्सानों के लिये अल्लाह से हिदायत मांगें बस यही आपका अ़मल और आपका वज़ीफ़ा होगा अगर आपने ऐसा किया तो अल्लाह पाक हरगिज़ आपको महरूम नहीं रखेगा।

तक़्वा किसे कहते हैं?

आजकल इस दुनिया में चीज़ों को हासिल करने के लिये बराहे रास्त चीज़ों पर मेहनत करने का रिवाज है। खेत वाले खेत से ग़ल्ला हासिल करने के लिये खेती पर ही मेहनत करते हैं तिजारत और सौदागरी वाले और कारख़ानों वाले बस दुकानों और कारख़ानों पर मेहनत करते हैं। यही मेहनत आज कल आ़म है।

दूसरा रास्ता यह है कि मेहनत व मुजाहदा करके अपने अन्दर तक़्वा पैदा किया जाये और फिर अल्लाह पाक इन्आ़म के तौर पर अपने ख़ज़ान-ए-ग़ैब से चीज़ें नसीब फ़रमाये और बरकत फ़रमाये। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया है कि, और

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

مَخْرَجاً وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

"जो अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करे तो अल्लाह पाक इसके वास्ते रास्ते पैदा करेंगे, इसको वहां से रिज़्क़ अ़ता फ़रमायेंगे जहाँ से इसे वह्म व गुमान भी न होगा"

और फ़रमाया गया है कि

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

مِنْ اَمْرِهٖ يُسْراً"

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا

عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

"और जो तक़्वा इख़्तियार करेगा अल्लाह उसके कामों को आसान करेंगे"

और एक दूसरे मौक़े पर फ़रमाया गया है "और अगर उन लोगों में ईमान और तक़्वे की सिफ़ात हों, तो हम उन पर ज़मीन, आसमान से बरकतों के दरवाज़े खोल देते"

इन तीनों आयतों में तक़्वे पर जो कुछ वायदा फ़रमाया गया है, उसका तअ़ल्लुक़ इसी दुनिया से है और यह बात कि तक़्वा क्या है। इसकी तफ़सील इस आयत से मालूम होगी इस आयत में तक़्वे की सारी शर्तें बयान कर दी गयी हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ

قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَ

الْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى

الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ

السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ وَ فِى

الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ

بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا وَ

الصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ

وَحِيْنَ الْبَاْسِ ط اُولٰٓئِكَ

الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ط وَاُولٰٓئِكَ

هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ه

तर्जुमा–

"नेकी का मेयार यह नहीं है कि तुम पूरब की तरफ़ रुख़ करो या पश्चिम की तरफ़ करो, बल्कि असल नेकी उनकी है (और अल्लाह की निगाह में नेक वे हैं) जो ईमान रखते हों अल्लाह पर और आख़िरत पर और फ़रिश्तों पर और अल्लाह की किताब पर और उसके नबियों पर और देवें अपना माल उसकी चाहत के बावुजूद अहले-क़राबत को और यतीमों, मिस्कीनों को और (ज़रूरतमन्दों) मुसाफ़िरों को और साइलों और ग़ुलामों को आज़ादी दिलाने के लिये और क़ायम करें नमाज़ और अदा करें ज़कात और वफ़ा करने वाले अपने अहद को जब अहद करें और सब्र और बर्दाशत से काम लेने वाले तंगी और तक्लीफ़ में और साबित क़दम रहने वाले जंग के वक़्त यही बन्दे हैं सच्चे और तक़्वे वाले"

इस आयत से मालूम हुआ कि किसी के मुत्तक़ी होने के लिए ये चन्द बातें ज़रूरी हैं:-

1. **एक ईमान "बिल्लाह"– यानी इस हक़ीक़त का पूरा यक़ीन कि सब कुछ अल्लाह की ज़ात से बनता और होता है अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं बनता और होता, इसलिये बस उसी को राज़ी करने की फ़िक्र करनी चाहिए और उसी के लिये मरना मिटना चाहिए**
2. **दूसरे ईमान बिल यौमिल आख़िरि यानी– इस हक़ीक़त का यक़ीन कि यह ज़िन्दगी असल ज़िन्दगी नहीं है। बल्कि इस ज़िन्दगी को पूरा होने के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी और दूसरा आलम है और असल ज़िन्दगी यही है, ये चन्द रोज़ह ज़िन्दगी बस उसकी तैयारी के लिए है**

और इन्सानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार उसी हमेशा वाली ज़िन्दगी की कामयाबी और नाकामी पर है।

3. **तीसरा ईमान बिल मलाइका यानी** — इस बात का यक़ीन कि ये आ़लम जिन ज़ाहिरी अस्बाब से चलता हुआ नज़र आ रहा है दरअसल इन अस्बाब से नहीं चल रहा है, बल्कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के बातिनी निज़ाम के ज़रीये से सारे ज़ाहिरी निज़ाम को चला रहे हैं। मसलन हमें नज़र आता है कि बारिश बादलों से और हवाओं से होती है और ज़मीन की चीज़ें बारिश के पानी से उगती हैं। फ़रिश्तों पर ईमान का मतलब यह है कि हम इस बात का यक़ीन करें कि अल्लाह पाक ये सारे काम दरअसल फ़रिश्तों से करा रहे हैं। गोया इन ज़ाहिरी अस्बाब के पीछे फ़रिश्तों का नज़र न आने वाला निज़ाम है और उसके पीछे अल्लाह की ज़ात और उसका हुक्म और उसकी मशिय्यत है।

4. **चौथे ईमान बिल किताब व नबिय्यीन यानीः**— अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों और उसके भेजे हुए नबिय्यों के बारे में यक़ीन कि हक़ीक़ी इ़ल्म वही है जो अल्लाह की किताबों में है और जो नबिय्यों के ज़रीए इन्सानों को मिला है। इसके सिवा जो कुछ है वह ग़ैर हक़ीक़ी है और नाक़िस है। मसलन इन्सानों की फ़लाह और कामयाबी का रास्ता वही है जो अल्लाह के नबिय्यों से और अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों ने बताया है। अगर दुनिया भर के फ़लासफ़र, दानिशमन्द,

अक़लमन्द लोग और लीडर इसके ख़िलाफ़ कहते हैं और सोचते हैं तो ग़लत है और उनका जहल है।

ये चार बातें ईमान व यक़ीन की लाईन की थीं। यानी मुत्तक़ी होने की पहली शर्त ये बतलायी गयी है कि इन चार बातों के बारे में यक़ीन सही हो।

وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ"

दूसरी शर्त यानी ईमान व यक़ीन की दुरुस्ती के साथ मालियात को भी इस यक़ीन के मुताबिक़ बनायें। माल की तबई चाहत और उससे दिलचस्पी और मुहब्बत के बावुजूद अपना कमाया हुआ माल अल्लाह की रज़ा के लिये अल्लाह के नबिय्यों और किताबों की तालीम के मुताबिक़ अपने माहौल के ज़रूरत मन्दों पर ख़र्च करें। क़राबत दारों पर ख़र्च करें, यतीमों-मिस्कीनों पर ख़र्च करें, बेचारे परदेसियों का बन्दोबस्त करें, ज़रूरतमन्दों और साइल को दें। ग़ुलामों को आज़ाद कराने पर ख़र्च करें, ग़रज़ अपनी कमाइयां दूसरों पर लगाएं और इससे दूसरों को आराम और नफ़ा पहुंचाएं।

इसके बाद तीसरी शर्त तक़्वा की यह बताई गयी है नमाज़ क़ायम करें, जिसका मतलब यह है कि पूरे एहतिमाम से अच्छी से अच्छी नमाज़ अदा करने की कोशिश करें। चौथी शर्त ये बतायी गयी है कि ज़कात भी एहतिमाम से अदा करें।

وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا""

""وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ"

आख़िर में अख़्लाक़ियात की दुरुस्ती की शर्त बतायी गयी है यानी-इनमें वफ़ा-ए-अहद हो, वे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह अदा करें और तंगियों और तक्लीफ़ों में और जंग और क़ुरबानियों के मैदानों में सब्र और बर्दाश्त से काम लेने वाले हों, हालात कैसे ही मुख़ालिफ़ हों मगर उनके पांव में लग्ज़िश न आये।

इस सब के बाद फ़रमाया गया है कि यही अल्लाह के सच्चे बन्दे हैं।

"أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ"○

इससे पता यह चला, अपने अन्दर तक़्वा पैदा करने के लिये इन सब रूख़ों पर मेहनत करनी होगी। ईमान व यक़ीन के लिये मेहनत, मालियात के दुरुस्त करने पर मेहनत, नमाज़ पर मेहनत, ज़कात पर मेहनत, अख़्लाक़ की दुरुस्ती पर मेहनत। जब ये सब चीज़ें सही हो जायेंगी उस वक़्त आदमी मुत्तक़ी होगा और फिर उस पर अल्लाह तआ़ला के ख़ास इनामात होंगे। अल्लाह पाक ग़ैब से उसके मस्अले हल करेंगे। इसके लिये बरकतों के दरवाज़े खोलेंगे।

अल्लाह पाक की तरफ़ से तक़्वे पर जो इनामात इस दुनिया में होते हैं और मुत्तक़ी बन्दों के मस्अले जो हल किये जाते हैं। उनकी शक्लें मुख़तलिफ़ होती हैं। अक्सर तो ऐसा होता है कि किसी मुत्तक़ी बन्दे को किसी चीज़ की ज़रूरत पेश आयी अल्लाह पाक ने अपने किसी बन्दे के दिल में डाला और उसने वही चीज़ हदिये के तौर पर पेश कर दी, ये बहुत आम और मुतआ़रफ़ तरीक़ा है।

कभी ऐसा होता है कि ज़रूरत पेश आयी और अल्लाह पाक ने बग़ैर किसी वास्ते से अपने फ़ज़्ल से इसको हल फ़रमा दिया मसलन एक बन्दा बीमार हुआ इसे बीमारी की तक्लीफ़ शुरू हुई इसने अल्लाह से शिफ़ा की दुआ की अल्लाह पाक ने बग़ैर हकीम, डॉक्टर और दवा के शिफ़ा अता फ़रमा दी। कभी किसी बन्दे की ज़रूरत के बारे में अल्लाह पाक अपने किसी दूसरे बन्दे को ख़्वाब में भी इत्तला फ़रमाते हैं।

ادرک الحسن بن سفیان

واصحابهٗ قبل ان یموتوا

हसन बिन सुफ़ियान एक बुज़ुर्ग हैं उनका क़िस्सा किताबों में लिखा है कि वह और उनके दो साथी इल्मे हदीस और दीन की तलब में निकले एक शहर में क़याम किया जो थोड़ा बहुत खाने का सामान अपने पास था सब ख़त्म हो गया इसके बाद जब फ़ाक़ों पर फ़ाक़े आने लगे तो उन्होंने तय किया हम ऐसी हालत में हैं कि हमारे लिये सवाल जायज़ है मश्वरे से तय हुआ कि हसन बिन सुफ़ियान रह० जायें और किसी से कुछ मांग कर लायें। यह बेचारे निकले लेकिन उन्हें शर्म आयी कि किसी मख़्लूक़ से सवाल करें, तन्हाई का गोशा तलाश किया और सलातुल हाजत पढ़कर अल्लाह से दुआ की और वापस आ गये और साथियों से कहा कि मैं तो किसी से सवाल नहीं कर सका मैंने भी दुआ की है और तुम लोग भी बस अल्लाह से दुआ करो। उसी शहर के गवर्नर ने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स उसको आसमान की तरफ़ बड़े ग़ुस्से के अन्दाज़ में पुकार रहा है। निगाह उठा कर देखा तो नज़र आया कि एक शख़्स ग़ुस्से में भरा

हुआ है और नेज़ा उसके हाथ में है, और वह नेज़े का रुख़ गवर्नर की तरफ़ करके डाँट कर कह रहा है, हसन बिन सुफ़ियान और उनके साथियों की ख़बर ले क़ब्ल इसके उन बेचारों का ख़ात्मा हो जाये। ख़्वाब ही में यह भी इशारा मिला कि वे शहर ही की किसी मस्जिद में हैं गवर्नर ने उठते ही शहर में उनकी तलाश शुरू करायी, और जब हुकूमत के कुछ कारकुनों ने उन लोगों को तलाश कर लिया और पा लिया और गवर्नर की तरफ़ से कुछ दीनार उनको पुहंचाये और उनसे कहा कि गवर्नर साहब आपसे मिलना चाहते हैं, तो यह अल्लाह के बन्दे ख़ामोशी के साथ ग़ायब हो गये ताकि लोगों पर उनका राज़ न खुले तो अल्लाह पाक अपने मुत्तक़ी बन्दों के मस्अले कभी इस तरह भी हल करता है और सबसे ज़्यादा मशहूर वाक़िआ तो मशहूर सहाबी हज़रत मिक्दाद रज़ि० का है। जो हदीस की किताबों में दर्ज है। जिनकी ज़रूरत पड़ने पर एक चूहे ने 17 दिनार बिल से एक-एक करके निकाल कर दिये। तो कभी ऐसे ग़ैर मामूली और हैरत अंगेज़ तरीक़े से भी मुत्तक़ी बन्दों की मदद की जाती है। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के फ़ज़्ल के तरीक़े बेशुमार हैं। अल्लाह के सिवा इनको कोई नहीं जानता।

अब दुनिया में सिर्फ़ माल और चीज़ों पर मेहनत का रिवाज है। तक़्वा पैदा करके और अल्लाह पाक से सही तअ़ल्लुक़ क़ायम करके अल्लाह पाक के फ़ज़्ल व करम से लेने का रास्ता लोग बिल्कुल भूल गये हैं। हालांकि यही रास्ता जिसकी दुआ़ हर नमाज़ की हर रकअ़त में की जाती है।

हर रकअ़त में "सूरः फ़ातिहा" पढ़ी जाती है। उसमें सबसे पहले इस यक़ीन को ताज़ा किया जाता है कि अल्लाह पाक

"रब्बुल आलमीन" है। वही सब का परवरदिगार है। वह रहमान और रहीम है। दुनिया के अलावा आलमे-आख़िरत का मालिक भी वही है और उसकी ज़ात व सिफ़ात से और उसकी रबूबियत और रहमत से फ़ायदा उठाने का तरीक़ा यह है कि बस उसकी इबादत हो और उसी से दुआ हो। यही सिराते मुस्तक़ीम है। जो अम्बिया, शोहदा, सालिहीन और सिद्दीक़ीन का रास्ता है।

1. हज़रत नूह अ़लै० ने अपने दुश्मनों की बेपनाह अक्सरियत के मुक़ाबले में जो कामियाबी हासिल की इसी रास्ते से हासिल की।
2. हज़रत इब्राहीम अ़लै० को जो कामयाबी नमरूद की हुकूमत के मुक़ाबले में हासिल हुई। इसी रास्ते से हासिल हुई।
3. हज़रत मूसा अ़लै० और उनकी क़ौम को फ़िरऔ़न और उसकी फ़ौज के मुक़ाबले में जो कामयाबी हासिल हुई वह इसी "इय्या-क नअ़बुदु वा इयया-क नस्तईन" के रास्ते से हासिल हई।

हज़रत महुम्मद सल्ल० और आपके सहाबा का रास्ता भी यही था। इसी रास्ते की हिदायत की दुआ हर नमाज़ की हर रकअ़त में इसी तरह की जाती है। "इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम ....ज़ाललीन" तक बहरहाल अल्लाह पाक के सारे नबिय्यों, रसूलों और उनकी राह पर चलने वाले सब मक़्बूल बन्दों का रास्ता यही है और इसके बरअ़क्स जो लोग अल्लाह की हिदायत से महरूम हैं और जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है उनका रास्ता ये है कि वे लोग अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात के यक़ीन और इस्तिआ़नत से बिल्कुल बेपरवाह और बेफ़िक्र हो कर सिर्फ़

माल और काइनाती अस्बाब पर मेहनत करते हैं।

"अल्लाह की मदद्"

आज भी जो कोई अल्लाह की वह मदद चाहे जैसे हुज़ूर सल्ल० की और सहाबा की की गई है, तो वे उनके वाले आमाल और उनकी वाली क़ुर्बानी और मेहनतों के रास्ते पर पड़ जाये, वह अल्लाह की मदद को आता हुआ ख़ुद अपनी आँख से देखेगा।

"दावत का मक़सद"

मुसलमानों में हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल की रस्म और शक्ल मौजूद है। इन तब्लीग़ी जद्दोजहद का मक़्सद यह है कि इन में आमाल की रूह और हक़ीक़त आ जाये। इनमें आमाल के मुन्तशिर अज्ज़ा मौजूद हैं। तब्लीग़ का मक़्सद यह है कि इनमें 24 घन्टे के सारे आमाल अपनी सही तर्तीब के साथ आ जायें। ये 6 न० जिन पर तब्लीग़ में ज़ोर दिया जाता है और जिन पर मेहनत करायी जाती है। इनका मक़्सद यह है कि मुसलमान सही तर्तीब के साथ हुज़ूर (सल्ल०) वाले आमाल पर पड़ जायें।

"मेहनत के दो मैदान हैं"

1. ज़मीन और ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ें पर मेहनत।

2. ईमान और ईमान वाले आमाल पर मेहनत।

पहली मेहनत का बदला दुनिया में मिलता है। लेकिन ऐसा नहीं मिलता कि मेहनत करने वाले उस पर ख़ुश और मुतमइन

हों।

दूसरी मेहनत का बदला दुनिया और आख़िरत में अल्लाह भरपूर देंगे।

यहां जो कुछ नज़र आता है वह बहुत नाक़िस है। बेचारी आंखों का हाल यह है कि वे हर चीज़ की सिर्फ़ शक्ल तो देख सकती हैं, मगर हक़ीक़त को नहीं देख पातीं किसी जिस्मानी चीज़ की सिर्फ़ ऊपर से नज़र आने वाली सतह और शक्ल को देख सकती हैं, उसकी रूह को नहीं देख सकतीं, हद यह है कि ख़ुद अपने को नहीं देख सकतीं अल्लाह का ग़ैबी-निज़ाम जो नज़र नहीं आता वह लाखों, करोड़ों गुना ज़्यादा फैला हुआ है। फिर आंख न किसी चीज़ का अव्वल देख पाती है और न आख़िर का हाल देख सकती है। आज दुनिया में जो कुछ हो रहा है और जो तरक़्क़ियां नज़र आ रही हैं। वह चीज़ों पर मेहनत का नतीजा है। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का रास्ता "रूह" पर मेहनत और रूहानी तरक़्क़ी का रास्ता था। वह अल्लाह की रज़ा वाले आमाल पर मेहनत करके और क़ुरबानियां देकर अल्लाह की ताक़त से अपने मस्अले हल कराते थे। फ़िरऔ़न के पास फ़ौज थी, लश्कर था और हर क़िस्म की माद्दी ताक़त थी। मूसा अ़लैहि० ने बनी इस्राईल को बस रूह की तरक़्क़ी वाले और अल्लाह की रज़ा वाले आमाल के लिए तैयार किया।

उनसे फ़रमाया! कि ऐ मेरी क़ौम तुमने ईमान वाला रास्ता इख़्तियार किया तो फिर अलाह तआ़ला पर ऐतिमाद और भरोसा करो और पूरे ईमान व यक़ीन और एतिमाद के साथ उससे मदद मांगो। जिस पर अल्लाह पाक ने फ़िरऔ़न को हलाक कर के दिखलाया।

''कायनाती नक़्शे''

तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम अपने-अपने ज़माने में किसी ने किसी नक़्शे के मुक़ाबले पर आये, और बताया कि कामयाबी का इस नक़्शे से बिलकुल ताल्लुक़ नहीं, कामयाबी का ताल्लुक़ बराहे-रास्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ाते-आली से है। अगर अमल ठीक होंगे तो अल्लाह पाक छोटे नक़्शे में भी कामयाब कर देंगे और अगर अमल ख़राब होंगे तो अल्लाह पाक बड़े से बड़े नक़्शे को तोड़ कर नाकाम कर देंगे। कामयाब होने के लिये इस नक़्शे में अमल ठीक करो। हर नबी ने अपने राएजुल-वक़्त नक़्शे के मुक़ाबले पर मेहनत की और हुज़ूर सल्ल० तमाम अक्सरियत, हुकूमत, माल, ज़िराअत के नक़्शे के मुक़ाबले पर तशरीफ़ लाये। आपकी मेहनत इन नक़्शों से नहीं चली, आपकी मेहनत मुजाहदों और क़ुरबानियों से चली है। बातिल ऐश के नक़्शों से फैलता है, तो हक़ तक्लीफ़ें उठाने से फैलता है। बातिल मुल्क व माल से चमकता है तो हक़ फ़क्र व ग़ुरबत की मशक़्क़तों से चमकता है। जितने फ़ित्ने मुल्क व माल और ऐश की बुनियाद पर लाये जा रहे हैं। इनका तोड़ हक़ के लिए फ़क्र व ग़ुरबत और तक्लीफ़ बर्दाश्त करने में है। अब इस काम के ज़रीए उम्मत में मुजाहदे और क़ुर्बानी की इस्तिदाद पैदा करनी है। इस काम के लिए बड़ा ख़तरा यह है कि इसको नक़्शों पर मुन्हसिर कर दिया जाये, इससे काम की जान निकल जायेगी। इस काम की हिफ़ाज़त इसी में हैं कि, काम करने वाले

इस काम के लिए तमाम मयस्सर नक़्शों को भी क़ुरबान करते हुए मुजाहदों वाली शक्लों को क़ायम रखें और किसी सूरत में भी मुजाहदे वाली शक्लों को ख़त्म न होने दें। ग़रीबों में अपनी मेहनत को बढ़ाया जाये। जमाअ़तें पैदल जायें। लोग आयेंगे कि यह हमारा पैसा दीन के काम में ख़र्च कर लीजिये, फिर नक़्शे की क़ुर्बानी देनी होगी। कह दीजिएगा कि जनाब यहां काम में ख़र्च करने का सही और पाक तरीक़ा व जज़्बा सिखलाया जाता है आप ख़ुद मौक़ा तलाश करके ख़र्च कर दीजियेगा। यहां तो तरीक़ा सीख लीजिए। इस काम को बढ़ाने के लिए रिवाजी तरीक़े "अख़बार, इश्तिहार, प्रेस वग़ैरा और रिवाजी अल्फ़ाज़ से भी पूरे तौर पर परहेज़ की ज़रूरत है। यह काम सारा ग़ैर रिवाजी है। रिवाजी तरीक़े से रिवाज को तक़्वियत पहुंचेगी, इस काम को नहीं। असल काम की शक्लें दावत, ग़श्त, तालीम, तश्कील वग़ैरह हैं। मश्वरा की ज़रूरत हो तो मुनासिब दोस्तों को अलग करके म श्वरा कर लिया जाये। ऐसा न हो कि मश्वरा करने वालों का किसी मौक़े पर उमूमी अ़मल से जोड़ न रहे। हुज़ूर सल्ल० वाले आमाल के बग़ैर कभी भी दुनिया व आख़िरत में कामरानी नसीब नहीं हो सकती चाहे काइनाती अस्बाब कितने ही हाथ लग जायें। बल्कि काइनाती अस्बाब हुकूमत, तिजारत, ज़िराअ़त वग़ैरा में जब तक हुज़ूर वाले आमाल की रूह न आ जाये। ये अस्बाब मरदूद हैं। जो इन्सान ख़ालिक़े काइनात और रसूले काइनात हुज़ूर सल्ल० को जाने और माने बग़ैर जो काइनात की चीज़ों में घुसता है। उसकी हैसियत चोर और डाकू की है। उन्हें माल व दौलत तो मिल सकती है मगर सुकून व महबूबियत हरगिज़-हरगिज़ नहीं मिल सकती। ख़ुद काइनात की

बक़ा सिर्फ़ उसी वक़्त तक है जब तक इस काइनात में हुज़ूर के आमाल मौजूद हैं। जब उनके आमाल में से कोई भी अ़मल न रहेगा उस वक़्त इस काइनात मर्दूद को दफ़न कर दिया जायेगा और इसी की नमाज़ सिर्फ़ आमाले नुबुव्वत का मज्मूआ़ है इसे तमाम काइनाती आमाल को छोड़ कर बल्कि उन से दूर होकर मस्जिद में अदा करने का हुक्म है और नमाज़ में काइनाती आमाल तिजारत वग़ैरा को सिर्फ़ छोड़ने का ही हुक्म नहीं बल्कि नमाज़ में उनका ख़्याल करना भी ममनूअ़ क़रार दिया गया है और पूरी काइनात से यकसूई वाले आमाल की तरफ़ **"हय्य अ़लल् फ़लाह"** से पुकारा गया। यह अ़मल गोया इस यक़ीन की मुसल्सल मश्क़ कराता है कि कामयाबी का दारोमदार सिर्फ़ आमाले नुबुव्वत पर है और आमाले नबवी के साथ इस दर्जा यक़ीन रखने वाले को जो शग़फ़ और एहतिमाम उ़लूमे नबवी के साथ हो सकता है वह मख़्फ़ी नहीं।